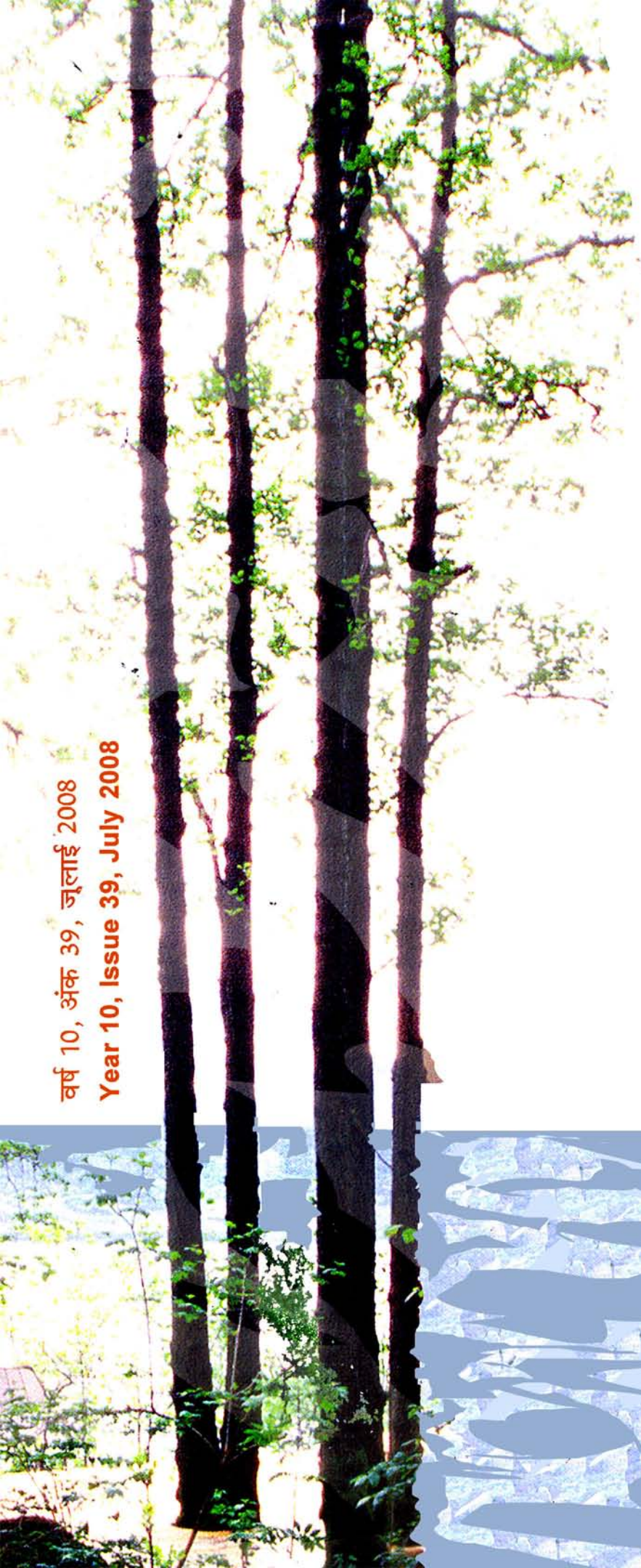

हिंदी चेतना
हिन्दी प्रचारिणी सभा, कैनेडा की त्रैमासिक पत्रिका
Hindi Chetna quarterly magazine of Hindi Pracharini Sabha, Canada
वर्ष 10, अंक 39, जुलाई 2008
Year 10, Issue 39, July 2008

Transfer money to any bank in India.*

Sending money home to your loved ones just got more convenient. You can now send money to any bank in India. ICICI Bank has tied up with all major banking networks in India to present this unique money transfer solution. Enjoy attractive exchange rates, low costs and the convenience of ICICI Bank's branches all over Canada.

*Over 100 banks in India.

OUR BRANCHES

Brampton	: 1 Bartley Bull Parkway
Mississauga	: 3024 Hurontario Street
Scarborough	: 5631 Steeles Avenue East
Toronto (Don Valley Pkwy)	: 150 Ferrand Drive, Suite 700
Toronto (Downtown)	: 130 King Street West, Suite 2125
Toronto (Gerrard Street)	: 1404 Gerrard Street East

To learn more, contact us at:

- **icicibank.ca**
- **1-888-ICICI-CA (1-888-424-2422)**
- Visit an **ICICI Bank branch** near you

Money Transfers

ICICI Bank

Terms and conditons apply.
ICICI Bank Canada is not responsible for any charges that may be charged by other institutions facilitating the remittances. Money transfers may be subject to the rules and regulations of the country where the transfer is effected. For more information, visit our website at icicibank.ca or walk into any of our branches. ICICI Bank name and i-man logo contained herein are the property of ICICI Bank Limited.

■ इस अंक में...

हिन्दी चेतना

जुलाई २००८

स्थायी स्तम्भ

2 आमंत्रण, मुखपृष्ठ
3 संपादकीय
4 पाती
10 सभ्यता संस्कृति
36 चित्र काव्य-कार्यशाला
साहित्यिक समाचार

सभ्यता संस्कृति

11 देवेन्द्र सिंह
29 डा. सुरेशचन्द्र शुक्ल

कहानियाँ

19 बीता समय लौट कर नहीं आता
आशा भाटिया
20 शहर बंद - निशा भोंसले
20 दरअसल- देवांशु पाल
23 जन्म दिवस - उषा देव
28 नादानी- नीरज नैथानी
31 बदलाव - डा. नीलाक्षी फुकन
32 लोक लाज- डा. सुरेशचन्द्र शुक्ल

आलेख

24 **स्वर्ग यहीं है**
डा. ओ. पी. द्विवेदी

व्यंग्य

32 **हास्य-व्यंग्य**
देवेन्द्र कुमार मिश्र
33 **आधुनिक युग का पंचतंत्र**
प्रो.ओम कुमार, आर्य

पत्रः-

डा. कमल किशोर गोयनका
डा. जनक खन्ना
इन्दिरा वर्मा
भगवत शरन श्रीवास्तव
गजेश धारीवाल
डा. मधुप पांडे

कविताएँ

12 **शहीद**
मां की फरियाद
डा. सुधा ओम ढींगरा
12 **खुदा के आंसू**
महेश चन्द्र गुप्त

14 **मोर क्यों नाचता है**
ग़ज़ल संशोधन (पत्ते)
डा. गौतम सचदेव
15 **3 छोटी कविताएं**
इलाप्रसाद
15 **बुढ़ा रही स्मृतियां**
रमेश शौनक
16 **मां बोली**
प्राण शर्मा
16 **मधुर मधुर स्वर**
भगवत शरन श्रीवस्तव
17 **ग़ज़ल**
देवमणि
17 **ग़ज़ल**
चाँद शुक्ला
18 **क्यों छोड़ा देश**
राज महेश्वरी
18 **ग़ज़ल**
द्विजेन्द्र द्विज
21 **नारी समानता**
अमित कुमार सिंह
21 **चेहरे पर चेहरा**
21 किरन सिंह
22 **संदेश**
भगवानदास लाहौटी
22 **साध**
कनिका सक्सेना
23 **ग़ज़ल**
कवि कुलवंत सिंह

25 **सच**
अनुराधा चंदर
26 **ग़ज़ल**
महेश नन्दा
27 **मेरे नाना**
राहुल उपाध्याय
27 **अंत जिज्ञासा का**
डा. मधुप पाण्डे

कविताएँ

28 **खामोशी की आवाज़**
सुखवर्ष कंवर 'तनहा'
31 **स्नेहिल किरण**
शशि पाधा
42 **अभिमन्यु विजयी होगा**
अभिनव शुक्ला

साहित्यिक समाचार

46 कौन कुटिल खलकामी का लोकार्पण
42 उत्तरी अमेरिका काव्य संग्रह का लोकार्पण
40 एकल विद्यालय समारोह, मस्कत
41 हास्य कवि सम्मेलन
44 येल विश्वविद्यालय में
49 यूट्टा आस्टिन का भाषण
50 उषा राजे की कहानियों की पुस्तक का लोकार्पण
52 भारतीय कौसिलावास में कवि सम्मेलन

साहित्यिक चर्चा

35 ***रुबाईआत की समीक्षा***
संतोष कुमार खरे
38 ***पुस्तक समीक्षा मुट्ठी भर धूप***
श्री नाथ द्विवेदी
34 ***पाठक प्रतिक्रिया***

उभरते लेखक...

17 **क्या खोया क्या पाया**
माधुरी माथुर

शोक समाचार

कीर्ति चौधरी का निधन
गोबिंद बेदी का निधन

(पुस्तकों व चित्रों का संकलन)

चेतना सहायक मंडल

डैनी काबल - कैनेडा
डा. फुकन अमेरिका
रमेश शौनक - अमेरिक
अंकुर टक्सासी - कैनेडा

हिन्दी चेतना वर्ष 2008

संरक्षक एवं प्रमुख संपादक
श्री श्याम त्रिपाठी

सह संपादक
डा॰निर्मला आदेश (कैनेडा)
डा॰ सुधा ओम ढींगरा (अमेरिका)

संपादकीय मंडल
अभिनव शुक्ल (अमेरिका)
गजेन्द्र सोलंकी (भारत)

प्रबंध संपादक
डा. हरीशचन्द्र शर्मा (कैनेडा)
डा. ओम ढींगरा (अमेरिका)

मार्ग दर्शक मंडल
डा. प्रभाकर श्रोत्रिय (भारत)
सरोज सोनी (कैनेडा)
स्नेह सिंहवी (कैनेडा)
राज महेश्वरी (कैनेडा)
उदित तिवारी (भारत)
डा. कमल किशोर गोयंका (भारत)
अनुपमा सिंह (कैनेडा)
विनोद चन्द्र पाण्डेय (भारत)
देवेन्द्र सिंह (अमेरिका)
अनुराधा चंदर (अमेरिका)
डा. कृष्ण कुमार (यू.के.)

प्रमुख: विदेश
अनिल शर्मा (थाइलैंड)
ऊषा राजे सक्सेना(यू. के.)
सुरेशचन्द्र शुक्ला (नार्वे)
यासमीन त्रिपाठी (फ्राँस)
राजेश डागा (ओमान)

हिन्दी प्रचारिणी सभा
महाकवि प्रो॰ आदेश(संरक्षक)
श्याम त्रिपाठी (अध्यक्ष)
भगवत शरण श्रीवास्तव(उपाध्यक्ष)
सुरेन्द्र पाठक (मंत्री)
डॉ॰ चन्द्रशेखर त्रिपाठी (उपमंत्री)
श्रीमती सुरेखा त्रिपाठी (कोषाध्यक्ष)
शालीन चन्द्र त्रिपाठी (सदस्य)
सुरभि गोवर्धन (सदस्य)

अकेला हूं जाना है बहुत दूर
देखता हूं पलटकर ,
शायद साथ कोई मेरा दे
न मिले कोई तो न सही
हिम्मत मैं न हारूंगा
देखना एक दिन ,
मंजिल मैं अपनी पा लूँगा।
डा. सुधा ओम ढींगरा

आमंत्रण:

अरविंद नराले

"हिन्दी चेतना" सभी लेखकों का स्वागत करती है कि आप अपनी रचनायें प्रकाशन हेतु हमें भेजें। सम्पादकीय मण्डल की इच्छा है कि "चेतना" साहित्य की एक पूर्ण रूप से संतुलित पत्रिका हो, अर्थात् साहित्य के सभी पक्षों का संतुलन। एक साहित्यक पत्रिका में आलेख, कविता और कहानियों का उचित संतुलन होना आवश्यक है, ताकि हर वर्ग के पाठक पढ़ने का आनन्द प्राप्त कर सकें। इसीलिए हम सभी लेखकों को आमन्त्रित करते हैं ***कि हमें अपनी मौलिक रचनाएँ ही भेजें।*** *अगले अँक के लिए अपनी रचनाएँ शीघ्रातिशीघ्र भेज दें। अगर संभव हो तो अपना चित्र भी साथ अवश्य भेजें। रचनाएँ भेजते हुये निम्नलिखित नियमों का ध्यान अवश्य रखें।*

विशेष नियम:

1. *हिन्दी चेतना, अप्रैल, जुलाई, अक्टूबर, तथा जनवरी में प्रकाशित होगी।*
2. *प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचारों का पूर्ण उत्तरदायित्व लेखक पर होगा।*
3. *पत्रिका में राजनैतिक तथा विवादास्पद विषयों पर लिखित रचनाएँ प्रकाशित नहीं की जायेंगी।*
4. *रचना के स्वीकार व अस्वीकार करने का पूर्ण अधिकार संपादक मंडल का होगा।*
5. *प्रकाशित रचनाओं पर कोई पारिश्रमिक नहीं दिया जायेगा।*
6. *पत्रिका में प्रकाशित सामग्री लेखकों के निजी विचार हैं। संपादक तथा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।*

संपर्क:

Hindi Chetna
6 Larksmere Court, Markham, Ontario, L3R 3R1
Phone (905) 475 - 7165 Fax: (905) 475 - 8667
e-mail: hindichetna@yahoo.ca

संपादकीय

श्याम त्रिपाठी

सन2008 हिन्दी चेतना का वर्ष है। चेतना के हर अंक में नया निखार, नया उत्साह और एक नई दिशा देखने में आयी। नये - नये स्तम्भों से पाठकों के समीप पहुंचने का अवसर मिला। डा. सुधा ढींगरा द्वारा प्रेम जनमेजय का साक्षात्कार तथा डा. राम चौधरी की भूमिका से अनेकों लेखकों और पाठकों को एक नयी अनुभूति मिली। सबसे महत्वपूर्ण बात जो हिन्दी चेतना के लिए गौरवमय रही वह था , ' हास्य कवि सम्मेलन ' जिसने कनाडा के हिन्दी जगत में एक नया इतिहास बना दिया। 25 अप्रैल , 2008 हिन्दी चेतना के मंच पर चेतना के दस वर्ष की जयन्ती के सुअवसर पर जो हास्य कवि सम्मेलन हुआ वह चिर स्मरणीय रहेगा। इस कार्यक्रम में भारत से आये तीन प्रमुख कवि गजेन्द्र सोलंकी, डा. सुनील जोगी तथा डा. सुरेश अवस्थी जो कि (अतर्राष्ट्रीय हिंदी समिति की ओर से कैनेडा की घरती पर पहली बार आये।) इसके लिये हम अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी समिति के बहुत आभारी हैं जिन्होंने हिन्दी चेतना के मंच पर ऐसा उच्चस्तरीय कवि सम्मेलन का कार्यक्रम संभव कर दिखाया। लगभग 500 लोगों ने इस कवि सम्मेलन का पूरा - पूरा आनन्द लिया। सबका यही आग्रह था कि अगले वर्ष के लिए अभी से हमारा नाम लिख लो। इन तीनों कवियों ने मंच पर जो कौतूहल, और हास्यप्रद कविताओं व चुटकलों को प्रस्तुत किया कि सारा हाल मन्त्र मुग्ध हो गया और लोग समाप्ति होने तक अपनी सीट से नहीं हिले। हिन्दी के प्रति जो श्रद्धा और सम्मान की भावना देखी गई वह बहुत ही गर्व की बात है।
इससे एक बात तो सिद्ध हो गई कि हिन्दी का भविष्य कनाडा में उज्ज्वल है। लोगों को अच्छी कविता सुनने की प्रबल इच्छा है। अर्थात मँझे हुये, अच्छे हसाने वाले कवि चाहिये।

हिन्दी चेतना के प्रयास से पहली बार कनाडा की सभी हिन्दी संस्थाओं ने एक मंच पर एकत्र होकर इस कार्यक्रम में भाग लिया। इस कार्यक्रम से एक बात तो अवश्य सिद्ध हुई कि यदि हम सभी हिन्दी प्रेमी एकत्रित होकर हिन्दी के प्रसार व प्रचार में लग जायें तो हिन्दी की बहुत प्रगति हो सकती है। विभिन्न खेमों में बंटे रहने से हम कभी भी आगे नहीं बढ़ सकते । मैं हिन्दी चेतना के प्रति लिखे गये पत्रों के लिये विशेष रूप से आभारी हूं जो हमें नैतिक प्रोत्साहन देकर पत्रिका की प्रगति के लिए अपनी सदभावनाएँ देकर हमारी पीठ थप थपाने में कोई कमी नहीं रखते। उनके शब्द हमारे लिये अमूल्य हैं।

आप सभी लेखकों को पुनः स्मरण कराना चाहूंगा कि चेतना का अगला अंक सुप्रसिद्ध आधुनिक लेखक, साहित्यकार, उपन्यासकार, निबंधकार, कहानीकार डा.नरेन्द्र कोहली जी को समर्पित है। जो भी लोग इसमें अपनी रचनायें या उनकी विशेष बात प्रस्तुत करना चाहें शीघ्रता पूर्वक अपनी रचनाएँ भेजें।

पाती

अनुभूति अभिव्यक्ति

हिन्दी चेतना से मेरा प्रथम परिचय अप्रैल अकं द्वारा हो रहा है। जैसे ही मुझे यह पत्रिका मिली , उत्सुकतापूर्वक विहंगम दृष्टि से इसकी विषय - सामग्री का अवलोकन किया । इसकी विषय - विविधता को देखकर मन अत्याधिक प्रसन्न हुआ कि अपनी जन्म भूमि से दूर हिन्दी भाषा एवं इसके साहित्य को जीवित ही नहीं अपितु नई चेतना प्रदान करने का स्तुत्य प्रयास किया जा रहा है। चार - पाँच बैठकों में उत्सुकतापूर्वक लगभग सारी पत्रिका पढ़ गई। सभी कविताएँ , संस्मरण, साक्षात्कार , बाल साहित्य , हास्य व्यंग्य हृदयग्राही व प्रभावोत्पादक हैं। हलीम आइना की ' महाग्रंथ ' व ' विश्व ग्रह' शीर्षक छोटी कविताएँ नावक के तीर की भाँति देखने में छोटी परन्तु गंभीर घाव करने वाली हैं।

समसामयिक विषय पर लिखित गजेन्द्र सोलंकी जी की कविता ' रामसेतु' रामसेतु के महत्व को दर्शाते हुये भारत सरकार को सावधान करने वाली भावोत्तेजक कविता है। "रामसेतु भक्ति भावनाओं वाली प्यास है ,कल्पना नहीं इतिहास है, इसे तोड़ना संस्कृति पर प्रहार है। अत: इस वैश्विक धरोहर का मान होना चाहिये, रामसेतु रक्षा का विधान होना चाहिये।" भगवत शरन श्रीवास्तव जी का ' नवयुग' गीत ' सचमुच समय की माँग है, पुरातन - नवीन को एक में घड़ देने की प्रेरणा है। कुसुम सिनहा की बोलो ' अहिल्या ' कविता बड़ी ही मर्मान्तक है। प्रत्येक नारी के मन में उठने वाले मूक प्रश्नों की मूर्त अभिव्यक्ति है। श्रद्धा , विश्वास ,त्याग ,तपस्या , पतिपरायणता की प्रतिमूर्ति भारतीय अबला के जीवन का संभवत: यही सत्य है। नीरज की ' दीवारों के कान' कविता सरकारी तंत्र पर बड़ा ही सटीक व्यंग्य है। खाकी वर्दी वाला रईसों के मैले दामन से भिज्ञ होते हुये भी उन्हें छोड़ने का साहस नहीं करता क्योंकि ' सबके तार सत्ता - प्रतिष्ठान तक फैले हैं।' रंगों और प्रेम के पर्व होली पर लिखी सभी कविताएँ बड़ी मनोहारी , यथार्थ एवं होली के विविध दृष्यों का सजीव चित्र प्रस्तुत करती हैं। प्रो. ओमकुमार आर्य का ' च-चमचा' व्यंग्य लेख चमचों के भरे - पूरे परिवार , विषय की व्यापकता का बड़ा रोचक वर्णन करने वाला है। मैं चमचागिरी नहीं कर रही हूं, सच कह रही हूं कि लेख की सरस , आनुप्रासिक भाषा विभिन्न प्रकार के चमचों को साकार देती है। राजनति तो चमचों का उद्‌गम स्थान है ही आजकल ये सभी धार्मिक , सामाजिक, सांस्कृतिक , शैक्षिक संस्थाओं से लेकर कवि सम्मेलनों तक में भी चोखी संख्या में पाये जाते हैं। राधा गुप्ता का ' दुनिया नई बनायेंगे' बालगीत आतंकवादियों को मानवता का पाठपढ़ाने के लिए ' उगते सूरज' बच्चों के संकल्प को दर्शाते हुये उनमें नवीन ओज- उत्साह का संचार करता है।

कहानियों का स्तर बड़ा ऊँचा है। सभी कहानियाँ अत्याधिक प्रेरक, संवेदनापूर्ण एवं हृदयग्राही हैं। सुमन कुमार घई की ' लाश' कहानी बड़ी ही यथार्थपरक है। विदेश को स्थायी निवास अपनाने के लिये उचित - अनुचित साधन अपनाने वाले लोगों को घिनौनी परन्तु सच्ची तस्वीर इस कहानी में देखी जा सकती है। ' मर तो बेचारी उसी दिन गई थी जिस दिन उसकी शादी हुई थी। लाश को कभी न कभी तो गिरना ही था। आज वह गिर गई। ' इसके साथ ही विदेशों में रह रहे बुजुर्गों के दायित्वों तथा उनकी रोजमर्रा की ज़िन्दगी की आन्तरिक पीड़ा भी मन में एक टीस छोड़ जाती है।

नि:सन्देह 'हिन्दी चेतना' एक उच्च स्तरीय साहित्यिक पत्रिका है।बहुसंस्कृतिमय कनाडा देश में इस पत्रिका के माध्यम से बहुदेशीय साहित्यकारों की रचनाओं के बहुरंग अपनी इन्द्रधनुषी छटा बिखरते हैं एवं साथ ही साहित्यकारों को एक मंच पर लाने तथा प्रवासी साहित्यकारों की सृजनात्मक शक्ति निखारने का प्रयास स्तुत्य है। इस महान कार्य के लिये श्री श्याम त्रिपाठी जी तथा उनके सहयोगी बधाई के पात्र हैं। 'हिन्दी चेतना' की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएँ।

डा. जनक खन्ना (कैनेडा)

3301 पामर ड्राइव
बर्लिंगटन , ओन्टेरियो

आदरणीय त्रिपाठी जी , सुरेखा जी व समस्त ' चेतना ' परिवार!

25 ता. की सँध्या सदा हम लोगों के लिये स्मरणीय सन्ध्या रहेगी। तीनों कवियों ने जितना मनोरंजन किया और हँसाया, इतना शायद बहुत समय से नहीं हुआ था व जिसकी हम सबको बहुत आवश्यकता थी।

आप सबका परिश्रम , आयोजन व स्वागत प्रशंसनीय है। आशा है आप, सबको भी यह आभास सभी ने दिया होगा कि ऐसा आयोजन टोरंटो शहर में व हिन्दी प्रेमियों के लिये बहुत दिनों बाद देखने में आया है।

आप सब अनेकों बधाई व प्रशंसा के पात्र हैं और हम सबके सहयोग पर आप सदा भरोसा कर सकते हैं , यह हमारा विश्वास है। आप सबके लिए अनेक शुभकामनाओं के साथ:-

इन्दिरा वर्मा
महेन्द्र वर्मा

हास्य कवि सम्मेलन- पत्र अविस्मरणीय आयोजन

25 अप्रैल का दिन टोरंटो के हिन्दी प्रेमियों के लिए अविस्मरणीय दिन रहेगा । जब उन्हें भव्य हास्य रस - कविसम्मेलन में भारत के राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त तीन कवियों की रससिक्त कविताओं का रसास्वादन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इन तीन कवियों की हास्य - व्यंग्य एवं ओजपूर्ण वाणी ने श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर लिया; किसी को समय का भास नहीं था; काव्य रस की इस त्रिवेणी में सभी गोते लगा कर कृतकृत्य हो रहे थे। कलम की ताक़त तलवार से अधिक होती है। इन व्यक्तियों ने अपनी हास्य व्यंग्यात्मक तथा ओजभरी कविताओं से इस उक्ति को पूर्ण चरितार्थ कर दिया । राजनीति , समाज , धर्म, परिवार, - कोई ऐसा ज्वलंत विषय नहीं था जो इनके मधुर कंण्ठ से अछुता रहा हो और फिर हास्य द्वारा इन कविताओं में एक करारा व्यंग्य व्यंन्जित होता था जिस कारण ये कविताएँ मर्म को भेदते हुये हृदय पर एक अमिट छाप छोड़ने वाली थीं। हास्य - व्यंग्यात्मक कविताओं में जीवन का सार था, सत्य था यथार्थ था, मीठी चुटकी थी और थी अत्याधिक रोचकता।

आज के तनावग्रस्त जीवन में हास्य को एक अचूक चिकित्सा के रूप में अपनाया जा रहा है। लगता है कि उस दिन इन कवियों की वाणी ने हमारे लम्बे समय के तनाव को दूर कर दियो ; हँसी के फव्वारे एवं अनवरत ताली बजाने से हाथों के एक्यूप्रैशर - दोनों ने हमारे तन - मन को तनावमुक्त कर एक नई शक्ति - स्फूर्ति प्रदान कर दी। गजेन्द्र सोलंकी जी ने वीर रसमयी कविता ' रामसेतु ' के माध्यम से आज के ज्वलन्त विषय पर सभी श्रोताओं के मनों को उद्वेलित कर दिया । उनकी ओजस्वी वाणी बड़ी ही प्रभावशाली व प्रेरक थी। तीनों श्रेष्ठ कवियों की हास्य - व्यंग्य - तीन भावों की त्रिवेणी में गहरी डुबकी लगा कर सभी हिन्दी- प्रेमी आनन्दित हो रहे थे और आज भी वे क्षण रोमांचित कर रहे हैं ; अविस्मरणीय हैं।

टोरंटो में इस उच्च स्तरीय हास्यकवि सम्मेलन की आशातीत सफलता के लिए ' हिन्दी चेतना' के संपादक श्री श्याम त्रिपाठी जी तथा उनके सहयोगियों को हार्दिक बधाई। नि:संदेह उनका यह प्रयास सराहनीय है। हमें विश्वास है कि भविष्य में इस प्रकार के साहित्यिक समायोजनों से वह भारत की धरती से सुदूर बसे हिन्दी प्रेमियों की साहित्यिक क्षुधा को शांत कर हिन्दी भाषा के प्रचार - प्रसार में सतत प्रयत्नशील रहेंगे।

शुभ कामनाओं सहित- डा.जनक खन्ना

त्रिपाठी जी,
"हिन्दी चेतना " का अप्रैल का 'होली विशेषाँक अँक ' प्राप्त हुआ।
देखकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। रंग बिरंगा कलात्मक आवरण होली के अवसर पर अत्यन्त उपयुक्त था। पत्रिका का स्तर निखार पर है। डा. ओम कुमार आर्य की रचना " चमचा" अति रोचक है। शब्दों के उचित चयन के लिए उन्होंने अच्छी रिसर्च की है।
डा. सुधा ओम ढींगरा द्वारा प्रस्तुत साक्षात्कार लेखकों के विषय में अच्छी जानकारी प्राप्त करवाते हैं। मैंने जगजीत सिंह द्वारा गाया गीत " वो काग़ज़ की कश्ती "तथा बेगम अख्तर द्वारा गाई ग़ज़ल हमने समझा था कि बरसात में बरसेगी शराब कई बार सुनी थी ,परन्तु मालूम न था कि वह सुदर्शन फ़ाकिर द्वारा लिखी गई है। सुधा जी को बहुत सारा धन्यवाद।
हिन्दी सेवा का आपका प्रयास सराहनीय है हमारी शुभकामनाएं पत्रिका के साथ हैं।

उषा देव (अमरीका)

25 अप्रैल 2008 की संध्या हिन्दी प्रचारिणी सभा तथा ' हिन्दी चेतना ' परिवार के लिए अविस्मर्णीय रहेगा।

भगवत शरन श्रीवास्तव

जीवन के रंग संग मनवा उमंग करे
अलसाये भावों में नव रस तरंग भरे।

इसी ध्येय को लेकर ' हिन्दी चेतना ' के प्रधान संपादक श्री श्याम त्रिपाठी ने भारत से आये तीन सुप्रसिद्ध कवियों को कैनेडा आमंत्रित कर एक विराट कवि सम्मेलन का आयोजन किया। इस कवि सम्मेलन में सभी हिन्दी संस्थाओं ने सहयोग देकर कवि सम्मेलन को सफल बनाया।

श्री गजेन्द्र सोलंकी की ओजपूर्ण वाणी ने सभा में प्राण फूंक दिये और सारा हाल करतल ध्वनि से गूँज उठा। गजेन्द्र जी के विषय में जितना भी कहा जाय कम ही होगा। उनका भारत प्रेम और राष्ट्र भावना से ओत प्रोत कविताएँ उच्चकोटि के साहित्य का प्रमाण देती हैं। उनके संचालन नें चार चांद लगा दिये। उन्हीं के शब्दों में- सुनो मेरे मीत राष्ट्र भावना के गीत -

प्रीत की प्रतीत लेके आया तब धाम जी
आपके अतीत के ही संस्कार वाली रीत,

पावन सी प्रीत लेके आया तब धाम जी

डा. सुनील जोगी के हास्य ने तो मानो प्रत्येक को ठहाके लगाने के लिये विवश कर दिया। हास्य के अतिरिक्त उनके संवेदन शील गीतों ने सभी के हृदय के अंतर को छुआ। उनके कविता पाठ की विधि तथा सोने जैसी खरी वाणी सुनते ही बनती थी। उनका व्यक्तित्व आकर्षक तथा कविता के ही अनुरूप था।

उनके कुछ कविता अंश:-

'कलयुग में पैसा बना । ईश्वर अल्ला राम
बिना दाम के हो नहीं, सकता कोई काम'
कुछ संवेदनशील
सदियों से पहले कुछ सपने
दर्पण जैसे टूटे थे।
ज्यों डाली से पत्ते टूटे,
तुमसे ऐसे छूटे थे।'

डा. सुरेश अवस्थी ने मेरे हृदय के भीतर झाँका और मुझे ऐसा लगा कि कोई मेरी ही बात कह रहा हो। मुझे उनके व्यंग्य के साथ जो गूढ़ बात वह कहते हैं का एक अनूठा ढंग दीख पड़ा जो हर कवि में नहीं मिलता। उनकी वाणी में ओज है। वह किसी बात को व्यंग्यात्मक बनाकर समझा सकते हैं। ऐसी प्रतिभा कम ही लोगों में दिखाई देती है। मैं हिंदी चेतना और हिंदी प्रचारिणी सभा के सभी लोगों को इस हास्य कवि सम्मेलन की सफलता पर बधाई देता हूं। आशा है कि यह सहयोग सदा प्राप्त होता रहेगा।

बधाई संदेश :-

पत्रिकाएँ चाहे साहित्यिक हों, सांस्कृतिक हों, धार्मिक हों, राजनीतिक हों, व्यावसायिक हों अव्यावसायिक होंअथवा अन्तर्जालीय; आधुनिक युग में पत्रिकाओं का अत्यंत महत्वपूर्ण योग दान रहा है। पुस्तकें ज्ञान का कुम्भ होती हैं, उन में युग ठहर सा जाता है। प्राय: विषय-वस्तु समय के साथ कल की बात सी बन जाती है परन्तु पत्रिका एक प्रवाहमयी जल-धारा जैसी होती है, जो युग की छवि को उकेरते हुए, समय तथा समाज के लिए निरन्तर नूतन दिशा दिखाते हुए युग के साथ ही प्रवाहित होती रहती है। एक व्यक्ति द्वारा लिखित पुस्तक एकांगी हो सकती है परन्तु पत्रिका का अस्तित्व बहु आयामी ही होता है; वह एक पुष्प-गुल्म जैसी होती है, जिसमें ऋतु के अनुसार प्रफुल्लित होने वाले पुष्पों को एक विशेष क्रम से सज्जित कर के प्रस्तुत किया जाता है। पत्रिका में अनेक लेखकों, कवियों तथा कलाकारों की रचनाएँ होती हैं, जो युग का प्रतिनिधित्व करती हैं।

पत्रिकाएँ समाज का सच्चा मार्ग-दर्शन कर सकती हैं। आजकल हिन्दी में भाषा-प्रदूषण की भयंकर आँधी आई हुई है। हिन्दी की यह समस्या अन्य भारतीय भाषाओं के साथ नहीं हैं। यदि भारतीय भाषाओं में ऐसा मेल-जोल हो जाए तो भारत की भाषायी समस्या हल हो जाए और देश की एकता को कोई भय न रहे। यह समस्या है अंग्रेज़ी के साथ। उदारवादिता, आधुनिकता तथा प्रयोगवादिता के नाम पर हिन्दी में अंग्रेज़ी के शब्दों का धड़ल्ले से प्रयोग किया जा रहा है। देखा गया है कि आजकल हिन्दी के कुछ शिखरीय विद्वान भी हिन्दी के दो वाक्य भली-भाँति नहीं बोल पाते। उनके वाक्यों में कोई न कोई आंग्ल भाषीय शब्द अवश्य आ जाता है। इसी प्रकार रचनाकार प्राय: कहानियों तथा लेखों में ही नहीं अपितु कविताओं तक में अंग्रेज़ी शब्दों की भरमार सी कर देते हैं। हिन्दी - उर्दू तो दूध-पानी भाँति समाहित सी हो ही गई हैं। जिसका प्रमाण हैं आज की रचनाएँ। अब तो बहुत सी पत्रिकाएँ स्पष्टतया उर्दू की रचना देवनागरी लिपि में होने के कारण हिन्दी की रचना कह कर प्रकाशित करने लगे हैं। मेरे पास ऐसे कई प्रमाण हैं। अस्तु, मुझे अंग्रेज़ी शब्दों के प्रयोग से कोई विरोध नहीं है, विरोध है उस प्रवृत्ति से जो अंग्रेज़ी को हिन्दी से ऊँचे स्तर की भाषा मानती है; जो अंग्रेज़ी के प्रयोग को उच्च सामाजिक स्तर का प्रतीक समझती है। मुझे परिवाद है अंग्रेजों की उस मानस-संतति से जो आज भी मानसिक -दासता से ग्रस्त है और अंग्रेज़ी एवं पाश्चात्य संस्कृति का पक्षपात कर के हिन्दी को धराशायी करने का सतत् प्रयास करती रहती है। मुझे ऐसे व्यक्तियों को देख-सुनकर पीड़ा होती है जो हिन्दी का खाते हैं और हिन्दी पर ही गुर्राते हैं।

डॉ॰ नरेन्द्र कोहली के अनुसार - "हिन्दी में अंग्रेज़ी शब्दावली के प्रयोग की बात मैं नहीं करता। भाषा को समृद्ध करना एक बात है और विकृत् करना एक अलग बात है।

हिन्दी को अंग्रेज़ी के इस मधुर विष तथा प्रदूषण से पत्रिकाएँ ही बचा सकती हैं। यदि सम्पादक-वृन्द अपनी नीति निर्धारित कर लें कि हम ऐसी भाषा-प्रदूषित रचनाएँ प्रकाशित नहीं करेंगे तो रचनाकार भाषा-प्रदूषण का कार्य नहीं कर सकेंगे। परन्तु, यदि सम्पादक गण ही अपनी भाषा को प्रदूषण से नहीं बचा पाएँगे तो अन्य ऋतुजन्य (मौसमी) रचनाकारों का तो कहना ही क्या! मुझे प्रसन्नता है कि हिन्दी चेतना इस दिशा में जागरूक एवं सचेत है। यह बड़े गर्व की बात है कि हिन्दी चेतना का स्तर उत्तरोत्तर उच्च होता जा रहा है। प्राय: देखा गया है कि कितनी ही पत्रिकाओं के प्रकाशन का शुभारंभ बड़े उत्साह पूर्वक होता है परन्तु दो-चार अंकों के पश्चात् वे पत्रिकाएँ काल-कवलित हो जाती हैं। विगत दस वर्षों से हिन्दी चेतना का प्रत्येक अंक नियमित रूप से निकलता रहा है। कितने ही मूल्यवान विशेषांक भी हिन्दी चेतना ने दिए हैं। मैं स्वयं साक्षी हूँ कि आतप हो या पावस, आँधी हो या हिम-वर्षण परन्तु श्री श्याम त्रिपाठी जी की लगन कभी क्षीण नहीं हुई है। वे हिन्दी चेतना के सम्पादन एवं प्रकाशन में इतने तल्लीन हो गए हैं कि वही उनकी चेतना बन गई है।

मैं हिन्दी चेतना त्रैमासिक पत्रिका की दसवी जयन्ती पर कामना करता हूँ कि हिन्दी चेतना उत्तरोत्तर विकसित होती हुई हर हिन्दी भाषी के गृह में पहुँच कर हिन्दी का अलख जगाए। इस ऐतिहासिक अवसर पर मैं समस्त हिन्दी-चेतना परिवार को बधाई देता हुआ श्री श्याम त्रिपाठी एवं श्रीमती सुरेखा त्रिपाठी के सुचारु स्वास्थ्य तथा दीर्घायु के लिए प्रभु से प्रार्थना करता हूँ।

एक कुंडलिया –

हिन्दी चेतना
हिन्दी चेतना का नवल फलदायी उत्कर्ष।
बंधु ! देखते-देखते बीत गए दस वर्ष।।
बीत गए दस वर्ष, देखकर हर्ष हो रहा।
अति उज्ज्वल भविष्य का है संदर्श हो रहा।।
कवि आदेश करे हिन्दी की दूर वेदना।
सारे जग में हो समादृता हिन्दी चेतना।।

– महाकवि प्रो. हरि शंकर आदेश
महानिदेशक - भारतीय विद्या संस्थान, ट्रिनिडाड एंड टुबेगो; कनाडा; अमेरिका

हिन्दी चेतना की दसवीं जयन्ती पर बधाई

हिन्दी चेतना के दस संघर्ष-पूर्ण वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। परन्तु दृढ़ प्रतिज्ञ संस्थापक तथा मुख्य संपादक भ्राता श्री श्याम त्रिपाठी जी के कठिन तप और त्याग ने इसे अंक प्रति अंक अधिकाधिक मनोरम रूप में प्रस्तुत किया है। इस मध्य में कितनी ही अन्य पत्रिकाएँ, संस्थाएँ तथा हिन्दी की महान विभूतियाँ इस से जुड़ी हैं; जो हमारे लिए अत्यन्त गौरव की बात है। मैं हिन्दी चेतना परिवार के समस्त कर्मठ कार्यकर्ताओं, शुभ चिन्तकों, रचनाकारों तथा पाठकों को हार्दिक बधाई देती हूँ। हर हिन्दी भाषी से मेरा निवेदन है :

बढ़ कर आगे आइए।
हिन्दी चेतना घर-घर पहुँचाइए।।

सम्मानीय प्रो. त्रिपाठी जी,
' हिन्दी चेतना' , अप्रैल, 2008 का अंक मिला धन्यवाद।

यह नया अंक पत्रिका को नया रूप रँग देता दिखायी देता है। आवरण - पृष्ठ तो भारतीय कला का ही रूप है । आपका सम्पादकीय विचारोत्तेजक है तथा कई महत्वपर्ण मुद्दों को उठाता है , जैसे ' हिन्दी चेतना' की दस वर्ष की हिन्दी - सेवा का इतिहास , प्रवासी साहित्य को प्रोत्साहन और नये - नये प्रवासी लेखकों को मंच प्रदान करके उनकी सृजनात्मकता को प्रोत्साहित करना तथा इस साहित्यिक यज्ञ के द्वारा भारतीय चिन्तन की ' वसुधैव कुटुम्बकम् ' परम्परा को स्थायी और ठोस रूप देना एक प्रवासी पत्रिका के ऐसे संकल्प तथा व्यवहारिक कार्य स्तुत्य ही नहीं , बल्कि हिन्दी विश्व में सम्मान के अधिकारी हैं। जहाँ तक रचनाओं का सवाल है , इस बार आपने कठोरता से रचनाओं का चयन करके अच्छी - से अच्छी रचनायें देने का प्रयत्न किया है। डा. सुधा ओम ढींगरा का प्रेम जनमेजय से लिया इन्टरव्यू एक अच्छी शुरुआत है, लेकिन प्रत्येक अंक में किसी प्रवासी लेखक से भी भेंट वार्ता हो तो अच्छा रहेगा। होली पर रचनाएँ देकर आपने भारत के सांस्कृतिक एवं धार्मिक पर्वों - उत्सवों से पाठकों को परिचित कराकर उन्हें भारतीयता के साथ जोड़ने का सफल प्रयत्न किया है। इस अंक में सुमनकुमार घई, नीरज नैथानी , गौतम सच्चदेव , राधा गुप्ता, अनुपमा सिंह, कनिका सक्सेना,गजेन्द्रसोलंकी , सुदर्शन प्रियदर्शनी , रमेश शौनक , सुरेश चन्द्र शुक्ल , राज महेश्वरी आदि कीरचनाएं देकर पत्रिका के स्तर को ऊँचा किया है ।

कुल मिलाकर यह अँक कायाकल्प की नयी शुरुआत है और आशा करता हूं कि इसका प्रत्येक अंक पिछले अंक से भी बेहतर होता जायेगा। आपके साथ डा. सुधा ढींगरा का सहयोग सोने में सुहागे का काम कर रहा है। यह पत्रिका के लिये शुभकारक है। आपने एक अच्छी टीम बना ली है जो मिलजुलकर काम कर रही है । यह पत्रिका के लिए शुभकारक है ।

विनीत-
डा. कमल किशोर गोयनका

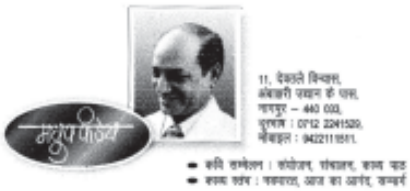

बंधुवर श्री त्रिपाठी जी,
विनम्र अभिवादन।
आशा है , स्वस्थ सानंद होंगे।

कुछ माह पूर्व आपने फोन सम्पर्क किया था, साथ ही ' हिन्दी चेतना ' के जनवरी अंक में आपने मेरी कविता प्रकाशित करने की अनुकम्पा की, यह मेरे प्रति आपके अपनत्व भाव का ही परिचायक है। आभार शब्द बौना लगता है। हाँ, कृतज्ञता ज्ञापन मैं अपना कर्तव्य समझता हूं। आपके समान महानुभाव से सम्पर्क सानिध्य में मेरे घनिष्ठ भाई श्री अरविंद जी के योगदान को मैं अपनी धरोहर समझता हूँ।

जबकि भारत में हिन्दी साहित्यिक पत्रिकाएँ बंद हो रही हैं, आप विदेश में निरंतर ' हिन्दी चेतना' के प्रकाशन का क्रम बनाये हुये हैं - इसके पार्श्व में हिन्दी के प्रति आपके समर्पण भाव की जितनी सराहना की जाये , कम है। कृपया मेरी बधाई स्वीकार करें।

इस पत्र के साथ कुछ नई कविताएँ 'हिन्दी चेतना' में प्रकाशनार्थ संलग्न कर रहा हूँ ,जिनका समावेश पूर्व प्रेषित संकलन में नहीं है। उपयुक्त लगें, तो सुविधानुसार प्रकाशित करने का कष्ट करें।

आशा है, आपका अपनत्व पाने का सौभाग्य - सुख, मुझे निरंतर प्राप्त होता रहेगा।

आदर एवं अभिवादन सहित

पाठको! अक्टूबर 2008 का अँक हम विशेषाँक निकाल रहे हैं। आपको यह जानकर हर्ष होगा कि यह विशेषाँक हम श्रद्धेय, वरिष्ट एवं प्रख्यात उपन्यासकार , नाटककार , कहानीकार, व्यंग्यकार एवं निबन्धकार, डा.नरेन्द्र कोहली पर निकाल रहे हैं।

डा. नरेन्द्र कोहली आतंक, साथ सहा गया दु:ख, मेरा अपना संसार, दीक्षा,अवसर,युद्ध, महासमर, अभ्युदय,अभिज्ञान एवं तोड़ो कारा तोड़ो इत्यादि उपन्यासों, आत्मा की पवित्रता,जगाने का अपराध, आधुनिक लड़की की पीड़ा, (व्यंग्य) आदि, गारे की दीवार, निर्णय रुका हुआ (नाटक), नमक का कैदी, निचले फ़्लैट में, कहानी का अभाव, (कहानियाँ) इत्यादि के रचयिता हैं। डा. कोहली के साहित्य की ये सिर्फ झलकियाँ हैं । डा. कोहली के व्यक्तित्व , कृतित्व एवँ साहित्य पर रचनाएँ आमंत्रित हैं । लेखकों एवं पाठकों से निवेदन है कि रचनाएँ जुलाई तक हमें अपने चित्र सहित भेज दें ।

रचनाएँ भेजने का पता है:-

hindichetna@yahoo.ca
sudhaom9@gmail.com

आपके हित की बात :-

अब आप तक घर बैठे हिंदी साहित्य पहुंच सकता है। देखिये !

www.pustak.org

आप हिंदी चेतना को On line पर पढ़ सकते हैं.....
www.vibhom.com

www. RadioSabrang.com

वैश्विक समुदाय की प्रस्तुति
अनेकता में एकता का प्रतीक
रेडियो सबरंग (डेनमार्क)
साहित्य का वैश्विक स्तरीय मंच
उच्च कोटि के साहित्यकारों को
उनकी आवाज़ व प्रसिद्ध गायकों ,
गायिकाओं की आवाज़ में सुनें .....

सुनिए एक दूजे के संग
फिर महकेंगे सारे रंग

Hindi Chetna is a literary magazine published quarterly in Toronto, Ontario under the editorship of Mr. Shiam Tripathi. Hindi Chetna aims to promote the Hindi language, Indian culture and the rich heritage of India to our children growing in the Canadian society. It focuses on Hindi literature and encourages creative writers, young and old, in North America to write for the magazine. It serves to keep readers in touch with new trends in modern writing. Hindi Chetna has provided a forum for Hindi writers, poets and readers to maintain communication with each other through the magazine. It has brought many local and international writers together to foster the spirit of friendship and harmony.

सुप्रसिद्ध हास्य कवि डा. मधुप पांडेय
की हास्य और व्यंग्य

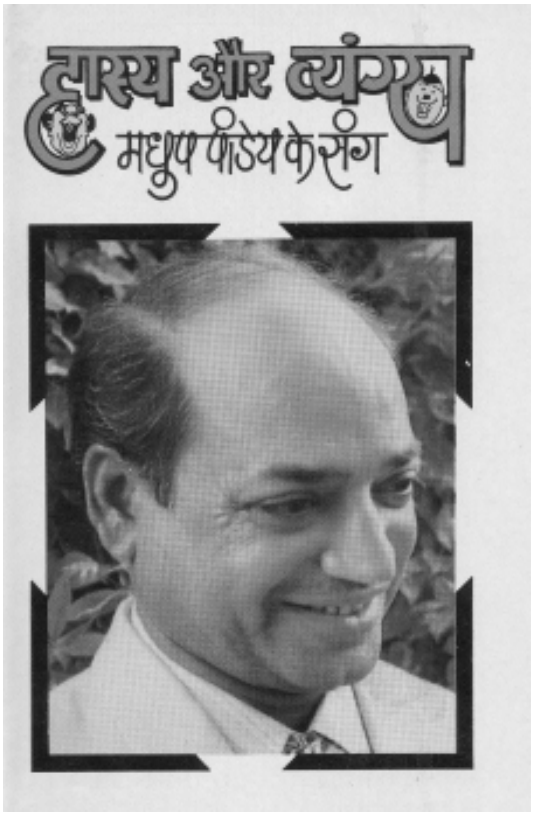

महाकवि प्रो. आदेश की जोश भरी
प्रवासी की पाती

कवि सम्मेलन सुनने के लिए भावी पीढ़ी तैयार की जा रही है ...

देवेन्द्र सिंह

भारत में जन्मे, पले एवं आरंभिक शिक्षा भोपाल में लेने के बाद,उच्च शिक्षा ग्रहण करने देवेन्द्र सिंह संयुक्त राष्ट्र अमेरिका आए। अभियंता बनने के उपरांत न्यूजर्सी के हो लिए। यहाँ अपनी सुपत्नी और दो बच्चों के साथ रहते हैं।

देवेन्द्र सिंह वीर रस के कवि हैं। राष्ट्र भक्ति से भरी कविताओं को वे ओजपूर्ण आवाज़ में प्रस्तुत कर लोगों को मत्रमुग्ध कर देते हैं। एक शाम हिंदी के नाम तथा हिन्दुत्व गर्जन नाम से इनकी रचनाओं की एक सी. डी. व डी.वी.डी. उपलब्ध है। पश्चिम की पुरवाई नाम से अमेरिका के स्थायी कवियों की कविताओं का संग्रह भी संपादित करवाया था। हिंदी भाषा को अमरीकी स्कूलों द्वितीय भाषा के रूप में लाने में सक्रिय हैं- हिंदी यू.एस.ए. नामक संस्था बनाकर हिंदी शिक्षा के कार्य में संलग्न हैं। आज हिंदी यू.एस. ए. द्वारा 20 से अधिक हिंदी की पाठशालाएँ चलाई जा रही हैं , जिनमें 700 से अधिक विद्यार्थी हिंदी सीख रहे हैं। भारतीय दुकानों के नामों का हिंदी करण हो , इस बारे में भी वे प्रयत्नशील हैं। प्रति वर्ष हिंदी महोत्सव बडी धूम - धाम से न्यूजर्सी में आयोजित करते हैं। उस समय बच्चों का कार्यक्रम , कविसम्मेलन एवं पुस्तक मेले का भी आयोजन होता है। हिंदी के लिए की गई विशेष सेवाओं स्वरूप विभिन्न संस्थाओं द्वारा इन्हें सम्मानित किया गया है। इस संदर्भ में दिल्ली की संस्था अक्षरम् , न्यूआर्क के वर्ल्ड बिजनेस फोरम,न्यूजर्सी की दशहरा समिति तथा फ़्लोरिडा की हिन्दू यूनिवर्सिटी द्वारा इनका सम्मानित होना उल्लेखनीय है। गत दिनों 'हिंदी चेतना' के लिये मैने देवेन्द्र सिंह जी से अमेरिका में उनके हिंदी कार्य और उससे प्राप्त हुई सफलताओं के बारे में बातचीत की-

सुधा – हिन्दी यू.एस.ए.और इसके कार्यों के बारे में बताएं.....

देवेन्द्र सिंह- हिंदी यू.एस. ए. की स्थापना सात वर्ष पहले हुई थी। यह हिंदी कार्यकर्त्ताओं और स्वयंसेवकों का समूह है। हिंदी का काम तो हम कर रहे थे पर ज्यों - ज्यों काम बढ़ा तो उसे अनुशासित रूप - रेखा देना जरूरी था। पाठशालाएँ देवेन्द्र सिंह के नाम पर नहीं चलाई जा सकती थीं अत: प्रत्यक्षता व्यवस्थित ढाँचा बनाया गया। अमेरिका के कानूनों का पालन भी करना था। पर अप्रत्यक्ष रूप में बड़ी खुली व्यवस्था है। अध्यक्ष, उपाध्यक्ष जैसी कोई बात नहीं। सभी कार्य कर्त्ता हैं और एक समूह हिंदी का काम कर रहा है। शाखाएँ फैली हुई हैं- न्यूआर्क , न्यूजर्सी , पैन्सनवेलिया, डैलवेयर, कैनेडा, कैनेटिकट, फलोरिडा।

सुधा – कितनी कक्षाएँ एवं श्रेणियाँ हैं...?

देवेन्द्र सिंह- 25 से अधिक कक्षाएँ हैं और पाँचवीं श्रेणी तक पढ़ाया जाता है । दो स्तर और बढ़ा रहे हैं। अभी इन्हें और बढ़ाया व निखारा जा रहा है।

सुधा- इस पैमाने पर काम करने के लिए बहुत से स्वयं सेवकों की जरूरत है। हिंदी यू.एस. ए. के पास कितने कार्य कर्त्ता हैं।

देवेन्द्र सिंह- हिंदी यू.एस.ए. के असंख्य कार्य कर्ता हैं पर मुख्य रूप से जुड़े 50 से 60 स्वयं सेवी हैं जो मीटिंगों में उठते बैठते हैं और 115 के करीब अध्यापक हैं। पिछले वर्ष 1200 के करीब विद्यार्थी थे और इस वर्ष कुछ कक्षाएँ और बढ़ेंगी। जो पाठशालाएँ चल रही हैं उनमें और बच्चों की भर्ती होगी- 1500 बच्चों की उम्मीद है।

सुधा- यह तो मैं समझ गई कि हिंदी यू.एस.ए. का काम भावी पीढ़ी को हिंदी भाषा , भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति से सराबोर करना है। इसके अतिरिक्त और क्या उद्देश्य हैं?

देवेन्द्र सिंह- मुख्य उद्देश्य स्कूलों में हिंदी ले जाना है। कई विश्वविद्यालयों में हिंदी है पर स्कूलों में हिंदी न होने से एक अन्तर सा आ जाता है। स्कूलों से बच्चे हिंदी पढ़कर यूनीवर्सिटी जाएंगे तो और भी अच्छा रहेगा। बच्चों को अपनी भाषा के प्रति आत्म विश्वास होगा और तनाव भी कम होगा। हम चाहते हैं कि स्कूलों से हिंदी पढ़ कर जाएँ तो यूनीवर्सिटी में क, ख, ग, न सीखें बल्कि भाषा का आनन्द लेकर और आगे अध्यन करें। मिडिल स्कूल और हाई स्कूल में हिंदी ले जाने की कोशिश है। एडिसन (न्यूजर्सी) के एक स्कूल में तो हो गई है दो तीन और स्कूलों से बात चल रही है शीघ्र ही परिणाम सामने आयेगा। संघर्ष जारी है।

सुधा- ' हिंदी महोत्सव' हर वर्ष आप करते हैं। इसमें बच्चों के सांस्कृतिक कार्यक्रम , कवि सम्मेलन होते हैं। क्या आप
हमारे पाठकों को बतायेंगे - कि इसका उद्देश्य क्या है?

देवेन्द्र सिंह- अमेरिका में हिंदी का यह सबसे बड़ा विज्ञापन है। इतना सुदृढ़ हिंदी का मंच है। यह एक तरह से हिंदी की

की प्रयोगशाला है। पूरा वर्ष जो पाठ्यक्रम पढ़ाया जाता है । उसका प्रदर्शन इस महोत्सव में होता है। हज़ारों की करतलध्वनि में बच्चों का हिंदी के प्रति विश्वास अटूट और रुचि बढ़ती है। भारत में पाठ्य क्रम एवं प्रयोग शाला होती है। हिंदी यू.एस.ए. की यह प्रयोग शाला है। हम इसमें प्रतियोगिताएँ ही रखते हैं। हिंदी सीखने और समझने की जो उनकी शक्ति है उसका प्रदर्शन वे करते हैं। इन प्रतियोगिताओं के कई माध्यम हैं- कविता , कहानी, लेख, वाद - विवाद .... इन प्रतियोगिताओं का उद्देश्य हार - जीत नहीं , जो भी मंच पर हिंदी बोलता है विजेता है। बच्चों को मैडल, ट्राफी दी जाती हैं कि उनमें अच्छी क्षमता उजागर हो और वे मेहनत के साथ मंच पर आएँ। आगे आने के लिए बच्चे उच्चारण पर ध्यान देते हैं। शब्द ज्ञान प्रतियोगिता ,शब्द अंताक्षरी इत्यादि प्रतियोगिताओं में बच्चे बड़ी तैयारी से आते हैं। बच्चा तीन मिनट बोलता है तो भाषा के प्रति विश्वासनीय हो जाता है उसमें आत्म विश्वास बढ़ जाता है। यहाँ के बच्चों की मातृभाषा अंग्रेजी है और हिंदी के प्रति अटूट आस्था देने का इससे बड़ा यहाँ कोई और मंच नहीं है । बच्चा इस मंच पर सैकड़ों बच्चों को हिंदी बोलते , उसका प्रदर्शन करते देखता है तो हिंदी भाषा के प्रति रुचि ,मोह एवं सम्मान बढ़ता है। वातावरण ऐसा बनता है कि दूसरे बच्चे भी प्रोत्साहित होते हैं , यहां तक कि माँ - बाप भी - जो सोचते हैं कि उत्तरी अमेरिका में हिंदी कैसे पढ़ाएँ? मंच पर सब कुछ बच्चे ही सँभालते हैं।

दूसरे दिन कवि सम्मेलन होता है यह भी हिंदी प्रचार - प्रसार का ही रूप है - हम " ग्रास रूट" पर काम कर रहे हैं ताकि 40, 50 साल बाद कविसम्मेलनों में श्रोता हों .....कवि सम्मेलन सुनने के लिए भावी पीढ़ी तैयार की जा रही है - कवि सम्मेलनों के भावी श्रोता .....

देवेन्द्र जी ने इतनी ऊँची बात कह दी कि मेरी बातचीत का सिलसिला यहीं समाप्त हो गया। भारतीय सभ्यता - संस्कृति के इस सारथी को 'हिन्दी चेतना' की ओर से बहुत सारी शुभकामनाएँ। देवेन्द्र जी अपने उद्देश्य में सफल हों।

डा. सुधा ओम ढींगरा

'हिन्दी चेतना' के लिए यह गर्व का विषय है कि भारतीयता के अग्रदूत अपने जीवन के महान उद्देश्यों को चेतना के पाठकों को बाँट रहे हैं। मैं देवेन्द्रसिंह का बहुत आभारी हूं जिन्होंने अपना अमूल्य समय डा. सुधा ढींगरा को दिया। *संपादक हिन्दी चेतना*

साउथ एशियन लिटरेरी सोसाइटी आफ कैनेडा के उदघाटन समारोह न्यूटन लाइबरेरी सरी , बी.सी. में

टोरंटो नगर में 25 अप्रैल 2008 को हिन्दी चेतना के मंच पर विराट हास्य कवि सम्मेलन की एक झलकियाँ।

शहीद

डा. सुधा ओम ढींगरा

बेटा शहीद हुआ
पति शहीद हुआ
भाई शहीद हुआ
पिता शहीद हुआ
प्रकृति सुबकी
इन्सानियत बिलखी
चाँद , सूरज , तारों
की रौशनी तड़पी
नेताओं और धर्म
के लिए- इंसान नहीं
सिर्फ सिपाही शहीद हुआ
जो बेगुनाह था
देश- प्रेम से
ओत- प्रोत देश भक्त
देश के लिए शहीद हो गया।

माँ की फरियाद

डा.सुधा ओम ढींगरा

सूरज से कहो
रौशनी न दे
अंधेरों में रह लूँगी।

चाँद से कहो
चाँदनी न दे
बिन चाँदनी जी लूँगी।

तारों से कहो
अपनी चमक न दें
रास्तों में भटक लूँगी।

ऋतुओं से कहो
रंग बदलना छोड़ दें
बेरंगी ही रह लूँगी।

सब दुख सह लूँगी
मर कर जी लूँगी
जीकर मर लूँगी।

पर बेटा मेरा लौटा दो मुझे
वह सिर्फ देश प्रेमी और
सिपाही ही नहीं, इन्सां भी है।
20 वर्ष भी पूरे नहीं
किए उसने,
लड़ने का ही नहीं
जीने का भी हक़ है उसे।

उपरोक्त कविताएँ ईराक युद्ध में शहीद हुये नौजवान सिपाहियों को समर्पित हैं। इसे नार्थ कैरोलाइना के सैनिक संस्थान समारोह में हाल ही में पढ़ा गया।

खुदा के आँसू

तुम्हें इंसान का चोला दिया, हैवान बन बैठे
दिया तुम को खुदाई नूर, तुम शैतान बन बैठे

रहो पाकीज़गी से इसलिए भेजा था दुनियाँ में
मगर तुम नाम पर मज़हब के बेईमान बन बैठे

दिये तोहफ़े हज़ारों किस्म के मैंने तुम्हें लेकिन
वही अब मारने, मरने का हैं सामान बन बैठे

यही ख़्वाइश थी मेरी कि रहो तुम भाई - चारे से
सितम - ओ- जुल्म का सबके लिये फ़रमान बन बैठे

मैं खुद अपने किये के हश्र से मायूस सा होकर
बहाता हूं 'ख़लिश' आंसू कि क्या इंसान बन बैठे।

महेश चन्द्र गुप्त 'खलिश'
(भारत)

मोर क्यों नाचता है?

डा. गौतम सचदेव - यू. के.

बतलाओ क्यों मोर नाचता ?
अपनी खुशी जताने को
न
सुन्दर पँख दिखाने को
न
घन- घन वर्षा लाने को
न
बतलाओ क्यों मोर नाचता?
अपनी चाल दिखाने को
न
चुस्ती फुर्ती लाने को
न
अपना मन बहलाने को
न
बतलाओ क्यों मोर नाचता?
अपनी शान दिखाने को
न
अपनी थकान मिटाने को
न
अपना व्याह रचाने को

हाँ
इसीलिए है मोर नाचता
एक मोरनी पाने को
उसको खूब रिझाने को
अपनी बहू बनाने को
मोर नाचता मोर नाचता

झड़ते हुये पत्ते कि उजड़ते हुये पत्ते

डा. गौतम सचदेव(यू.के.)

(कुछ त्रुटियाँ होने के कारण पुनः आपकी सेवा में)

किस ग़म से गये सूख सिकुड़ते हुये पत्ते
बेघर हैं बिना जुर्म उजड़ते हुये पत्ते

मौसम की लगी चोट कि अपनों के सताये
मिट्टी में मिले खून चुपड़ते हुये पत्ते

वादे हैं न दिल और न क़समें हैं किसी की
क्यों फिर भी गये टूट उजड़ते हुये पत्ते

मरने पे न मिल पाई कभी क़ब्र या अरथी
घूरे पे बिना कफ़न अकड़ते हुये पत्ते

बाँहों में न आकाश समेटा है किसी ने
कंगाल रहे चाँद पकड़ते हुये पत्ते

मर्मर ही करें पर न कहें और न कुचलो
क़दमों में गिरें नाक रगड़ते हुये पत्ते

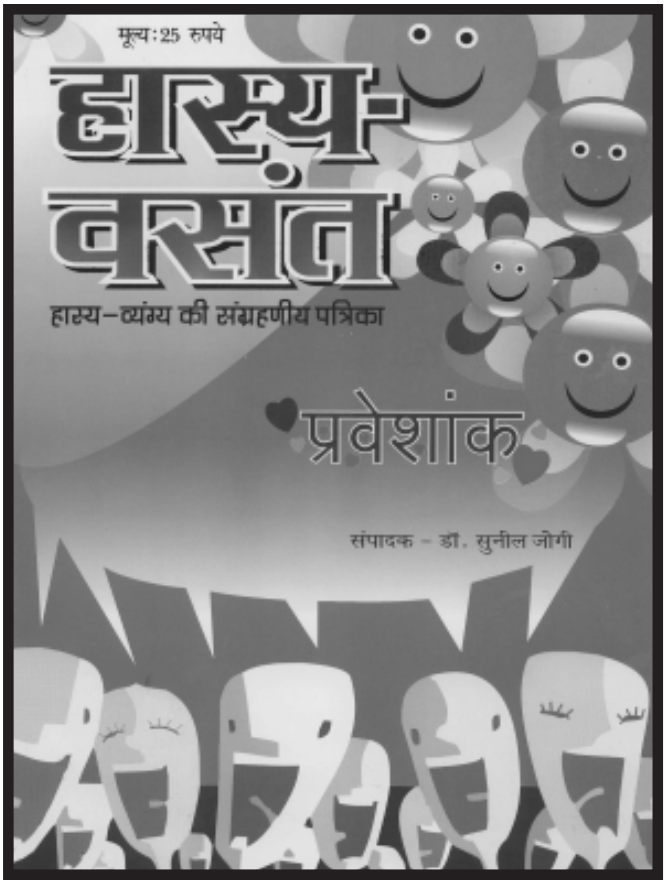

तीन छोटी कविताएँ
इला प्रसाद (अमेरिका)

1 कलम

मैं बोलती थी
और कोई नहीं सुनता था मुझे।
अब मैं चुप हूं।
कलम बोलती है
और सब,
सुन रहे हैं मुझे!
कभी नहीं सोचा

2.स्त्रीत्व

कभी नहीं सोचा
कि ऐसा भी कोई गीत होगा
जिसे मैं कभी नहीं गा पाऊँगी
ऐसा भी कुछ लिखा होगा
जिसे किसी को
कभी नहीं दिखा पाऊंगी।

अब हैरान हूँ
कैसे मैं नहीं सोच सकी
यह सब?
क्यों नहीं समझ सकी
स्त्री होने की
अपनी नियति को?.....

3.आकाश

आखिर चलते- चलते ही
पाँवों में मजबूती आई
और मैं टिक कर खड़ी हो सकी।

अब पाँवों में दम है
और पैर तले की ज़मीन की
पुख्तगी का अहसास भी

अब कल्पना के पंख नहीं
इच्छाओं के पर हैं
जो मैं अपने हिस्से का आकाश तलाशने
निकल पड़ी हूं !

बुढ़ा रही स्मृतियाँ
(संतोष शौनक की अंग्रेजी कविता का रमेश शौनक द्वारा हिन्दी रूपान्तर)

यादें भूल रही हैं , बुढ़ा रही हैं
पुस्तक के पीले पड़ रहे पन्नों सी
फटे जा रहे हैं रंगीन और चमकीले कवर
अलग हो रहे
भुरभुरा रहे, धूल से अटे
कूड़े के ढेर पर फैंकी जा रही स्मृतियाँ
मैं इन्हें गांठना चाहती हूं
फिर से जिल्दाना चाहती हूं
लेकिन जो पृष्ठ पीले पड़ चुके हैं
पीले के पीले ही रहेंगे
अंततः सारे के सारे शब्द
सभी भाव, सभी विचार
जीर्ण पड़ जायेंगे
विषम टुकड़ों में टूट- टूट
बिखर जायेंगे
मुझे पढ़ लो
स्याही फीकने से पहले
काग़ज़ के भुरभुरा कर बिखरने से पहले
मेरे पृष्ठ अभी भी आतुर हैं
पलटे जाने को
अगला पृष्ठ , फिर उससे अगला पृष्ठ
फिर उससे अगला ...

माँ बोली

प्राण शर्मा (यू. के.)

पहले अपनी बोली बोलो
फिर चाहे तुम कुछ भी बोलो
इंगलिश बोलो, रूसी बोलो
तुर्की बोलो, स्पैनिश बोलो
जर्मन बोलो, डैनिश बोलो
अरबी बोलो,चीनी बोलो
कुछ भी बोलो लेकिन पहले
अपनी माँ की बोली बोलो

अपनी बोली मां की बोली
मीठी-मीठी,प्यारी-प्यारी
अपनी बोली माँ की बोली
हर बोली से न्यारी - न्यारी
अपनी बोली माँ की बोली
अपनी बोली से नफरत क्यों
अपनी बोली माँ की बोली
दूजे की बोली में खत क्यों

अपनी बोली का सिक्का तुम
दुनिया वालों से मनवाओ
खुद भी मान करो तुम इसका
औरों से भी मान कराओ
माँ बोली के बेटे हो तुम
बेटे का कर्त्तव्य निभाओ
अपनी बोली माँ होती है
क्यों न सर पर इसे बिठाओ !

'मधुर मधुर'

भगवत शरण श्रीवास्तव
'शरण'(कैनेडा)

मधुर मधुर स्वर गाता चल
सब पर प्यार लुटाता चल
सभी एक माँ की संतानें
धरती के गुण गाता चल।

है असीम आकाश अरे मन
अपनी खोज बढ़ाता चल।
अपना और पराया है क्या
इस उस को अपनाता चल।

मन्दिर मस्जिद गुरुद्वारों में
प्रभु सबको दर्शाता चल।
जिनका कोई नहीं हो जग में
उनको कन्ठ लगाता चला।।

भरे भावना सजग चेतना
ऐसा गुण सिखलाता चल।
तू जो करेगा और करेंगे
जीवन राग सुनाता चल।।

सभी लक्ष्य पाने को आतुर
सत की राह दिखाता चल।
कर्म ही जीवन की सच्चाई
मन के राग मिटाता चल।।

आओ रोपें बीज सुधामय
गरल की छाप छुड़ाता चल।
पतझर तो आते जाते हैं
उपवन पुष्प खिलाता चल।।

हरित कान्ति हो नहीं भ्रान्ति हो
ऐसे पाठ पढ़ाता चल।
सुधर हो जीवन नहीं प्रदूषण
सब में ज्योति जगाता चल।।

बाण चलें ना प्राण लुटे ना
यह सबको समझाता चल।
विश्व बने यह प्रेम भाव का
सबको मीत बनाता चल।।

ग़ज़ल

देवमणि पाण्डे ,मुम्बई (भारत)

सावन आया धूल उड़ाता रिमझिम की सौगात कहां
ये धरती अब तक प्यासी है पहले सी बरसात कहां।

मौसम ने अगवानी की तो मुस्काये कुछ फूल मगर
मन में धूम मचाने वाली खुशबू की बारात कहां।

खोल के खिड़की दरवाज़ों को रोशन कर लो घर आँगन
इतने चांद सितारे लेकर फिर आयेगी रात कहां।

भूल गये हम हीर की तानें किस्से लैला मजनूं के
दिल में प्यार जगाने वाले वो दिलकश नग़मात कहां।

इक चेहरे का अक्स सभी में ढूंढ रहा हूं बरसों से
लाखों चेहरे देखे लेकिन उस चेहरे सी बात कहां।

ख़्वाबों की तस्वीरों में अब आओ भर लें रंग नया
चांद , समंदर, कश्ती, हमतुम, ये जलवे इक साथ कहां।

ना पहले से तौर तरीके ना पहले जैसे आदाब
अपने दौर के इन बच्चों में पहले जैसी बात कहां।

(नव अंकुर)

क्या खोया क्या पाया मैंने

माधुरी माथुर (भिलाई)

जब यह घर अपनाया मैंने
इस घर के हर पल को जी कर
इस घर को एक घर बनाया मैंने
क्या खोना क्या पाना इसमें
अपना फर्ज़ निभाया मैंने
यही जीवन धन पाया मैंने
न कुछ खोया न कुछ पाया
अपना फर्ज़ निभाया मैंने

चाँद शुक्ला हदियाबादी

(डैनमार्क)

कौन कहता है लबो रुख़सार की बातें न हों
सुर्खियों की बात हो अख़बार की बातें न हों

दुश्मनों का जो रवैया है ये उन पे छोड़ दो
दोस्तों में तो कभी इंकार की बातें न हों

एक हो तुम पाँव हैं दो कश्तियों में किसलिए
इस तरफ़ आ जाओ तो बेकार की बातें न हों

सब ज़माना न कह दे कान की कच्ची हैं ये
घर की दीवारों में भी अग़यार की बातें न हों

जान न जाए ज़माना जाने मन यह जान लो
प्यार की बातों में अब तकरार की बातें न हों

" चाँद" हरदम गर्दिशे अय्याम में चलता रहा
आज इसके सामने रफ़्तार की बातें न हों

क्यों छोड़ा देश

राज महेश्वरी (कनाडा)

कहने को कह सकता हूं
अपने को समझा सकता हूं
अच्छा जीवन बिताने हेतु
अपना देश छोड़ आया हूं
मुझसे पूछते हैं लोग
जब मैं घूमने जाता हूं
क्यों अपना देश छोड़ा
क्यों न वापस आ जाता हूं
जो कारण हैं इसके
बताना बड़ा कठिन है
समय के प्रारम्भ से
गतिमान मनुष्य है
यदि मनुष्य कहीं न जाता
नये - नये स्थान न बसते
मानव की प्रगति के
इतिहास रिक्त ही रहते
देश छोड़ने की पीड़ा
हृदय में सदैव रहती है
किन्तु नया घर बसाने में
खुशी भी तो होती है
नये स्थान पर आदमी
प्रेरणा भरा होता है
नव सृजन करने में
जान लगा देता है
और मानव की कहानी को
नयी दिशा देता है
कोई रोक सकता नहीं
प्रकृति का तकाज़ा है
हवा के साथ तिनका सा
मनुष्य उड़ा जाता है
क्यों छोड़ा देश
मुझे कुछ पता नहीं
केवल इतना जानता हूं
आदमी कभी रुका नहीं ।

ग़ज़ल

द्विजेन्द्र (द्विज)
हि.प्र. - भारत

आइने कितने यहाँ टूट चुके हैं अब तक
आफ़री उन पे जो सच बोल रहे हैं अब तक

टूट जायेंगे मगर झुक नहीं सकते हँ भी
अपने ईमाँ की हिफ़ाज़त में तने हैं अब तक

रहनुमा उनका वहाँ है नहीं मुद्दत से
क़ाफ़िले वाले किसे ढूंढ रहे हैं अब तक

अपने इस दिल को तसल्ली नहीं होती वरना
हम हक़ीक़त तो तेरी जान चुके हैं अब तक

फ़तह कर सकता नहीं जिनको जुनूं मज़हब का
कुछ वो तहज़ीब के महफ़ूज़ किले हैं अब तक

उनकी आँखों को कहाँ ख़्वाब मयस्सर होते
नींद भर भी जो कभी न सो सके हैं अब तक

देख लेना कभी मन्ज़र वो घने जंगल का
जब सुलग उठ्ठेंगे जो ठूँठ दबे हैं अब तक

रोज़ नफ़रत की हवाओं में सुलग उठती हैं
एक चिंगारी से घर कितने जले हैं अब तक

इन उजालों का नया नाम बताओ क्या हो
जिन उजालों में अँधेरे ही पले हैं अब तक

पुरसुकून आपका चेहरा ये चमकती आँखें
आप भी शहर में लगता है नये हैं अब तक

ख़ुश्क आँखों को रवानी ही नहीं मिल पाई
यूँ तो हमने कई शे ' र कहे हैं अब तक

दूर पानी है अभी प्यास बुझाना मुश्किल
और ' द्विज ' ! आप तो दो कोस चले हैं अब तक।

बीता समय लौट कर नहीं आता

आशा भाटिया- मस्कत

अंजना और श्रुति अंतरंग सहेलियां थीं। दोनो हम उम्र थीं और एक ही कक्षा में पढ़ती थीं। श्रुति अंजना से अधिक बुद्धिमान और स्मार्ट थी और हर परीक्षा में उसे अंजना से अधिक अंक प्राप्त होते थे। पर साधारण बुद्धिवाली अंजना की एक बहुत बड़ी विशेषता थी कि वह अपना हर कार्य परिश्रम से करती थी। वह अपने हर पल - पल का हिसाब रखती थी।

देखते ही देखते दोनों ग्यारहवीं कक्षा पास करके बारहवीं कक्षा में पहुंच गईं। दोनों ही डाक्टर बनना चाहती थीं। लेकिन मेडिकल कालेज में दाखिला लेने के लिये प्रवेश-परीक्षा में पास होना ज़रूरी था। बस दोनों ने फार्म भरे

और लग गईं परीक्षा की तैय्यारी में। पर इन छुट्टियों में श्रुति के परिवार का अचानक जम्मू - काश्मीर जाने का प्रोग्राम बन गया और श्रुति हो गई डाँवाडोल! उसने अपनी किताबें बंद कीं और चल दी अपने परिवार के साथ काश्मीर की सैर पर। वहीं अंजना ने प्रवेश - परीक्षा के लिये पढ़ाई की और प्रवेश - परीक्षा दी पर वह सफल न हो सकी।

दूसरे वर्ष भी दोनों ने प्रवेश - परीक्षा के लिये फार्म भरे पर इस वर्ष श्रुति के परिवार में किसी की शादी हो रही थी और स्मार्ट श्रुति चल दी शादी में धूम मचाने। श्रुति ने इस वर्ष परीक्षा नहीं दी। इस वर्ष भी परिश्रमी अंजना ने परीक्षा दी पर वह यह परीक्षा इस बार भी पास न कर सकी।

तीसरे वर्ष अंजना ने फिर फार्म भरा लेकिन इस बार वह परीक्षा में सफल रही। अब दोनों सखियाँ एक - दूसरे से बहुत दूर थीं और उनकी शादी हो चुकी थी। समय पंख लगाकर उड़ता चला गया। श्रुति ने शादी के बाद एक पाठशाला में अध्यापिका की नौकरी कर ली पर कभी - कभी वह अपनी गहरी सखी को अवश्य याद कर लिया करती थी। देखते - देखते अब तक बीस वर्ष बीत चुके थे।

अचानक एक दिन किसी सुपर मार्केट में श्रुति ने एक जानीपहचानी सी आवाज़ सुनी। एक मिनट में ही श्रुति ने अपनी प्रिय सखी को पहचान लिया। दोनों बिछुड़ी सहेलियाँ सालों बाद मिली थीं। दोनों में जमकर बातें हुईं।

अंजना ने श्रुति को बताया कि वह अब किसी बड़े अस्पताल में स्त्री - रोग विशेषज्ञ है और लोगों को उससे

इलाज कराने के लिये एपोंइटमेट लेना पड़ता है। दोनों ने फिर से मिलने का वायदा करके एक - दूसरे से विदा ली। आज श्रुति अपने घर के आँगन में बैठी अपने बारे में सोच रही थी। शायद समय का मोल न समझ पाने के कारण ही वह अपनी डाक्टर बनने की अभिलाषा पूरी न कर सकी थी नहीं तो आज वह भी अपनी सखी की तरह एक सफल डाक्टर होती।

आज वह चाह रही थी कि बीता हुआ समय लौट कर आये और वह फिर से प्रवेश- परीक्षा देकर मेडिकल कालेज में पढ़े । पर अब क्या हो सकता था । आज उसने जीवन की इस सच्चाई को महसूस किया कि जो समय को नष्ट करते हैं समय उनका साथ नहीं देता और बीता हुआ समय कभी लौट कर नहीं आता।

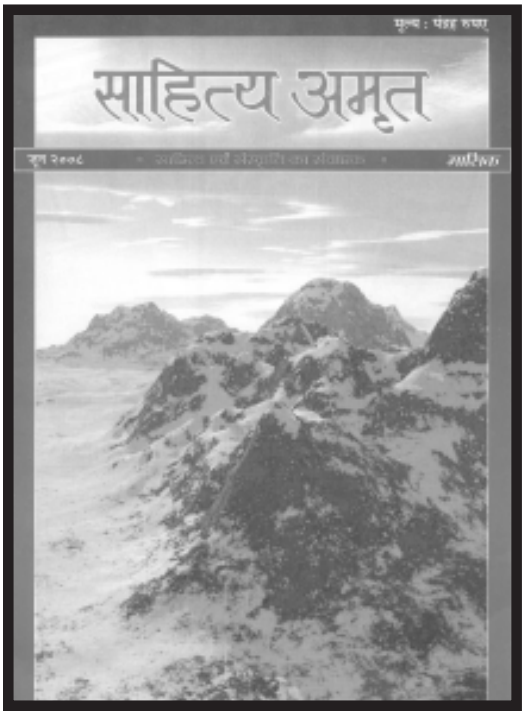

दरअसल – लघु कथा

देवांशु पाल - छत्तीस गढ़

चौराहे पर अचानक दंगा भड़क उठा। धारदार हथियारों के आपस में टकराने की आवाज़ सुनाई पड़ने लगी, जो हिंसक राजनीति का शिकार हो गया था। अभी इसी वक्त उसके बारे में सोचने या उसकी सहायता करने का मेरे पास वक्त नहीं था। किसी भी क्षण मेरे साथ कोई भी अप्रिय घटना घट सकती है। यही सोचकर मैं भीड़ में से भाग निकलने लगा। तभी वह चीख दूर तक मेरा पीछा करती रही। भागता हुआ मैं घर आया। पसीने से मेरा बदन भीगने लगा था। साँसें तेज चलने लगी थीं। मैं हाँफने लगा था, तभी आचानक दरवाज़े पर दस्तक सुनाई पड़ी मैं चौंक उठा । इस वक्त दरवाज़ा खोलना ख़तरे से खाली नहीं था। पता नहीं दस्तक देने वाला आदमी किस धर्म का, किस झण्डे का होगा । उसके हाथ में किस तरह के हथियार होंगे? यही सब सोचकर मैं डरने लगा ।

दरवाज़ा टूटने लगा था । मैंने घबराकर दरवाज़ा खोल दिया। खून से लथपथ वह मेरी बाहों में आकर गिर पड़ा। उसे मैं संभालू कि उससे पहले ही उसने मेरी बाहों में दम तोड़ दिया। वह कोई और नहीं मेरा ही इक्कीस साल का लड़का था।
चीख दरअसल उसकी ही थी।

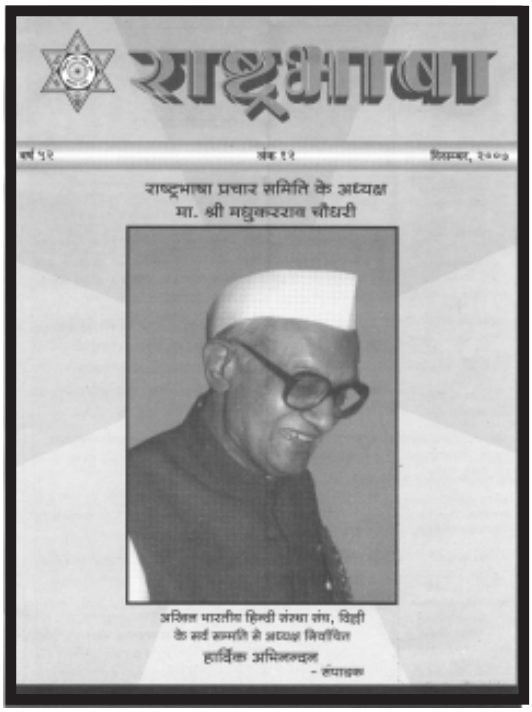

शहर बन्द –लघु कथा

निशा भोंसले - छत्तीसगढ़

उस दिन मैं दफतर से शाम को घर अपनी दुपहिया वाहन से लौट रही थी। चौराहे से गुजरते समय अचानक किसी बूढ़ी औरत की करुण आवाज़ मुझे सुनाई दी - " बेटी जरा रुकना तो "। मैं अपनी दुपहिया वाहन धीमी कर सड़क के किनारे खड़ी हो गई। औरत पास आकर खड़ी हो गई। वह काफी कमज़ोर लग रही थी। माथे पर पसीना आ रहा था। वह मैली फटी साड़ी पहने हुई थी। दोनो हाथों से एक पोटली संभाले हुये थी। वह औरत पूछने लगी- " बेटी तुम शहर की ओर जा रही हो ? मैंने कहा - हाँ! फिर वह बोली - " मुझे थोड़ी दूर अपनी गाड़ी में बैठा कर ले जाओगी ? मैं बहुत थक गई हूँ। घुटने में दर्द हो रहा है" । मैंने पूछा - " तुम रहती कहाँ हो ? इधर किस काम से आई हो? वह बोली - " आज शहर बन्द है , कहीं कोई काम नहीं मिला इसलिए शहर से दूर काम की तलाश में निकल पड़ी थी। दिन भर घूमती रही पर काम नहीं मिला "।

मैं उसे अपनी दुपहिया गाड़ी में बैठाकर चौराहे तक ले आयी। जब वह चलने लगी तब मुझसे पूछ बैठी - " बेटी तुम तो पढ़ी लिखी हो , क्या तुम्हारे पास मेरे इस सवाल का जवाब है। क्या तुम बता सकती हो, जो लोग अक्सर शहर को बन्द कराते हैं , हम जैसे रोज कमाने वाले अपना पेट कैसे भरेंगे।"

मैंने उस बूढ़ी औरत के चेहरे की झुर्रियों में अनेक सवालों को जन्म लेते हुये देखा। उन सवालों में सच्चाई की ऊष्मा थी और तजुर्बों की गरमाहट। वह कुछ पल मेरे जवाब के इन्तज़ार में खड़ी रही, जब मुझे कहते हुये नहीं सुना वह अपने गन्तव्य की ओर चल पड़ी ।

और मेरे कानों में उस बूढ़ी औरत का सवाल काफी देर तक गूँजता रहा।

नारी समानता

अमित कुमार सिंह (भारत)

नारी समानता के
इस युग में
भोजन पका रहा हूँ,
दफ़्तर से लौटी
बीबी के लिए
चाय बना रहा हूँ।

नारी जागरण की
क्रान्ति का शिकार हूँ,
कपड़े धुलता - धुलता
हुआ अब मैं बेहाल हूँ।

याद कर बीते दिनों को
सिसकता हूँ,
नारियों के इस नये कदम
से सिहर जाता हूँ।

कहीं कोई गलती
हो जाये
इससे बचता हूँ,
नारी उत्पीड़न का
केस कर दूँगी,
इस धमकी से
बहुत डरता हूं।

चारों ओर नारी - उत्थान
की चर्चा सुनता हूँ,
और अखबारों में अब
' घरेलू पति चाहिये'
का इश्तहार देखता हूँ।

वो भी क्या दिन थे
आदेश जब हम
दिया करते थे,
चाय - पकौड़ों में
देरी होने पर
कितनी जोर से
गरजा करते थे।

नारी शक्ति के
इस युग में
अब पुरुष - उत्पीड़न का
केस लड़ता हूँ,

कटघरे में खड़े
पुरुषों की सहमी हुयी
हालत को
बेबस देखता हूँ।

क्या सही है
क्या गलत. अभी कुछ नहीं
समझ आता है,

अब तो नारियों से
यही विनती-

भूलकर पुरानी बातों को
यदि वो बाँट लें
अब काम आधा - आधा,
तो होगा जीवन में
दोनों के सकून
ये है हमारा वादा।

चेहरे पर चेहरा

किरन सिंह (भारत)

मुखौटा पहन अपनी
पहचान छुपाये हुये हैं
आज का इंसान
चेहरे पर चेहरा लगाये हुये है।

समेट अपने अन्दर
दु:खों का समन्दर, चेहरे पर हंसी
चिपकाये हुये है
आज का इंसान
चेहरे पर चेहरा लगाये हुये है।

वास्तविकता का
सामना करने से
घबराये हुये हैं, आज का इंसान
चेहरे पर चेहरा लगाये हुये है।

चेहरे पर पड़ी
झुरियों को,
मेकअप में
छुपाये हुये है
आज का इंसान
चेहरे पर चेहरा लगाये हुये है।

जिसे समझा था दोस्त
निकला वो दुश्मन,
सच्चाई से कितनी दूरी
बनाये हुये है
आज का इंसान
चेहरे पर चेहरा
लगाये हुये है।

दिखावे के लोभ में
अपनों को ही
सताये हुये है,
आज का इंसान
चेहरे पर चेहरा
लगाये हुये है।

खुद ही को
धोखा देकर,
खुश रहने के

सपने सजाये हुये है
आज का इंसान
चेहरे पर चेहरा
लगाये हुये है।

चेहरे पर चिपके
इस चेहरे को देखकर
सोचता ' किरन ' ये मन-
क्यों कोमल संवेदनाओं
के मोल पर मशीनी,
हो रहा है इंसान?

आधुनिकता की
इस दौड़ में,
अकेला ही तो
रह गया है वो,
जाने क्या चाहता है।
आज का ये इंसान?

संदेश

भगवानदास लाहौटी (अमेरिका)

सीमा पर डटे सैनानी से मेरा संदेश।
तुम हो महान् करता गर्व तुम पर देश।
तुम कर्मठ नीतिपरायण तुम बलवान।
अपना कर्तव्य निभाते देकर निज प्राण।

कभी भूख प्यास कभी जोश कभी उदास
शीत घास वर्षा हिमपात सभी है रास।
कभी पाती आती घरसे कभी अन्धकार।
घर बिटिया का जन्म तुम न पाते समाचार।

कर न्योछावर परिवार सुख तुम खड़े।
देश की आन मान निभाने प्राण पण अड़े।
तुम हो त्यागी सच्चे अर्थ में हे! सैनिक।
कष्ट भय सेवा मृत्यु तुम को दैनिक।

राष्ट्र रक्षा का बीड़ा लेकर सेवारत।
आज्ञापालन स्वधर्म बना होकर निरत।
तुम्हारी सेवा से है स्वतन्त्रता सुरक्षित।
मानव मात्र चाहता स्वत्रंतता सुहित।

साध

कनिका सक्सेना (कैनेडा)

फिसलती रेत को मुट्ठी में कैद कर,
ख्वाब के घरौंदे बनाकर,
जिन्दगी को संवारकर
मैंने अपने से संधि कर ली।।

टेढ़ी - मेढ़ी लकीरों को सीधा कर,
मन की आशंकाओं को ठुकराकर
एक राह प्यार की जगाकर
मेंने अपने से संधि कर ली।।

पग- पग पर इक अहसास होता गया
जो जिन्दगी के करीब लाता गया,
और हर राह पर बुनियादें बनती गई,
तृष्णाओं से मुक्त हो -
मैने अपने से संधि कर ली।

जन्म दिवस (लघु बाल कथा)

उषा देव - अमेरिका

छोटी सी रिया के जन्मदिवस की आज छटी वर्ष गाँठ थी। घर में धूम धाम है क्योंकि रिया अपने माता- पिता की इकलौती सन्तान है और आज इस खुशी में वह बहुत बड़ा जशन मना रहे हैं। अनेकों मित्रों और सम्बन्धियों को आमंत्रित किया गया है। अतिउत्तम पकवान, अतिउत्तम सजावट, सभी कुछ बड़े पैमाने पर चल रहा है। रिया सुन्दर गुलाबी कपड़ों में सजी नन्हीं गुड़िया सी लग रही है।

प्रथानुसार भोजन के पश्चात केक काटने का समय आया। नन्हीं रिया ने केक काटा , सबने तालियाँ बजाकर प्रसन्नता प्रकट की और "हैपी बर्थ डे"एक स्वर में गाकर बच्ची को आशीर्वाद दिय।15-20मिनट तक मित्र गण इस वातावरण में मग्न रहे। अब समय आया कि रिया अपने उपहार खोले और देखे उसे क्या उपहार मिले हैं। परन्तु रिया कहीं दिखाई नहीं दे रही थी। उसे पुकारा गया परन्तु उसका कहीं चिन्ह तक नहीं था। अब माता- पिता थोड़ा घबरा गये कि अभी वह यहीं थी और अब एकदम कहाँ चली गई । सारे घर में ढूँढ़ा गया परन्तु सफलता नहीं मिली। सारे घर में सन्नाटा छा गया। माँ का रो रो कर बुरा हाल था। वह सोच रहे थे कि अगला कदम क्या उठाया जाय कि सबने रिया को सामने के द्वार से घर के भीतर प्रवेश करते देखा। माता पिता ने लपक कर उसे गोद में उठा लिया और उसका चेहरा चुम्बनों से भर दिया। नन्हीं रिया यह दृष्य देखकर कुछ घबरा सी गई। उसके माता पिता उससे यही प्रश्न पूछ रहे थे," बेटी , तुम सब रौनक छोड़कर कहाँ चली गई थी ?"

रिया ने जो बताया उसे सुनकर किसी भी माता - पिता का सिर गर्व से ऊँचा हो जायेगा। वह बोली, " हमारी गली के अन्तिम घर में मीनू नाम की छोटी सी लड़की रहती है । मैं उसे नहीं जानती और वह मुझे नहीं जानती। आज सुबह स्कूल जाते हुये बस में वह अपने साथ बैठी लड़की को बता रही थी, आज उसका जन्म दिन है। उनके परिवार में किसी सदस्य की कार दुर्घटना में मृत्यु हो गई है, इसलिये उसके माता- पिता उसका जन्मदिन नहीं मना रहे हैं। मीनू काफी उदास लग रही थी। मैं केक का एक टुकड़ा उसके पास ले गई थी और उसके मुँह में डालकर कहा, "हैपी बर्थ डे!"

ग़ज़ल

कवि कुलवंत सिंह (भारत)

बड़े हम जैसे होते हैं तो रिश्ता हर अखरता है।
यहां बनकर भी अपना क्यों भला कोई बिछड़ता है।

सिमट कर आ गये हैं सारे तारे मेरी झोली में,
कहां मुश्किल हुआ संग चांद अब तो अकड़ता है।

छुपा कान्हा यहीं मैं देखती यमुना किनारे पर,
कहीं चुपके से आकर हाथ मेरा अब पकड़ता है।

घटा छायी है सावन की पिया तुम अब तो आ जाओ,
हुआ मुश्किल है रहना अब बदन सारा जकड़ता है।

जिसे सौंपा था मैंने हुस्न अपना मान कर सब कुछ,
वही दिन रात देखो हाय अब मुझसे झगड़ता है।

उहाँ छोड़ि इहँवै बैकुठा

डा. ओंकारनाथ द्विवेदी (कनाडा)

एक बार एक व्यक्ति के मन में यह इच्छा हुई कि यदि उसे इसी जीवन में स्वर्ग का आनन्द मिल सके तो मरने से क्या होगा, ऐसा सोचना ही व्यर्थ है? ऐसे सुख की प्राप्ति के लिए उस व्यक्ति ने बड़ी कोशिशें की। उसने बहुतों से पूछा कि क्या कोई ऐसा व्यक्ति है जो बता सके कि वह सुख कहाँ व किसको मिला है। बड़ी कोशिशों के बाद यह पता चला कि किसी एक गाँव में बड़ा सयाना आदमी रहता है ,शायद उसके पास इस विषय की जानकारी हो। तो यह व्यक्ति उस बुडढे के पास गया तो देखने लगा कि वह तो बड़ा ही जर्जर व्यक्ति था जिसके सिर पर न तो कोई बाल थे, जो झुककर लकड़ी के सहारे बड़ी ही मुश्किल से चल पा रहा था। उसके सब दाँत गिर चुके थे, व शरीर में तमाम झुर्रियाँ पड़ी हुई थीं। उसकी उम्र 90 के समीप लग रही थी। खैर! उससे , स्वर्ग जैसा सुख कहां व कैसे मिल सकता है, पूछने पर पता उसने कहा कि यह तो मुझे नहीं मालूम , पर नदी के उस पार मेरे बड़े भाई रहते हैं , शायद उन्हें मालूम हो। तो यह आदमी नदी के उस पार गया जहां एक साधारण से मकान में एक बृद्ध पुरुष व उनकी पत्नी रह रहे थे। पर वे लोग देखने में पहिले व्यक्ति से कुछ कम उम्र के लगे। उनसे भी वही प्रश्न पूछा गया तो उनका जवाब था कि इसका उत्तर तो मेरे बड़े भाई ही दे सकते हैं। उसने यह भी बताया कि मेरे बड़े भाई व भाभी तराई इलाके में रहते हैं। तो यह व्यक्ति वहाँ पहुंचा तो देखा कि एक व्यक्ति जो देखने में 65 वर्ष का लग रहा था , हाथ में कुदाल लेकर बागवानी कर रहा था । बदन में न कोई झुर्रियां , सिर के बाल ज्यादा सफेद भी नहीं , व शरीर पूरा स्वस्थ! फिर जब उस व्यक्ति की पत्नी आयी तो वह भी छरहरे बदन की अधेड़ महिला लगी। तो उस स्वर्ग की तलाश करने वाले व्यक्ति ने झुंझला कर इस अधेड़ उम्र वाले व्यक्ति से पूछा कि यह रहस्य क्या है कि तुम्हारे दो छोटे भाई जो देखने में अति वृद्ध लग रहे थे , उनसे तुम देखने में काफी कम उम्र के हट्टे - कट्टे जवान लग रहे हो , तो मुझसे झूठ क्यों बोला गया। उत्तर में इस व्यक्ति ने कहा कि भाई तुम इतनी दूर से चलकर आये हो , थक गये होगे। चलो पहिले हाथ - मुंह धो लो , कुछ नाश्ता कर लो , बाद में बातें करेंगे। हाथ - मुंह धोने के बाद पकवान - नाश्ता आ गया व उसकी औरत ने बड़े स्नेह व मनुहार से मीठे वचन बोलकर सुख की तलाश करने वाले व्यक्ति को चैन कहां। उसने पूछा कि आप दो बातें बतलाइये ।

1. यदि आप उन लोगों के बड़े भाई हैं तो इसका रहस्य क्या है? 2. वह स्वर्ग वाला सुख इस संसार में इसी जीवन में कैसे मिल सकता है?उत्तर मिलाकि स्वर्ग और नर्क कहां है व कैसा है इसको बतलाने वाला तो अभी तक कोई व्यक्ति वहां से आया नहीं है । जो कुछ हमको बतलाया जाता है धर्म ग्रन्थों के द्वारा , वह तो कल्पना मात्र है क्योंकि कोई चश्मदीद गवाह अभी तकनहीं मिला है। पर यदि इसी संसार में रहते हुये स्वर्ग जैसा आनन्द प्राप्त करना हो तो उसके लिये निम्न बातों का होना आवश्यक है। 1. स्नेहमयी , ममताभरी , सुलक्षण , सुशीला , सरल स्वभाव वाली गृहणी का होना 2. अपनी पत्नी को मित्र के समान मानने वाला , समय समय पर पत्नी के कार्यों की सराहने करने वाला,अपने कार्य को पूरी जिम्मेदारी से निभाने वाला, और घर - बाहर सम्मान देने वाला पति का होना; 3. दोनों में परस्पर स्नेह,हिलमिल कर अपना - अपना उत्तरदायित्त्व निभाने की क्षमता और विश्वास का होना। ये तीनों बातें जिस दम्पति में पायी जाती हैं वहां स्वर्ग ही तो है तो उत्तर आता है स्वर्ग या नर्क कहीं मरने के बाद मिलते हैं यह तो पता नहीं, पर इस धरती पर व्यक्तियों को स्वर्ग जैसा सुख या नर्क जैसी यातना मिल जाती है। इसलिये यदि ऐसा जीवन साथी मिल जाये जो सम्मान , आदर, स्नेह, करुणा , दया तथा मित्रता दे सके , जिसे प्रतिदिन देखकर यह लगे कि अभी फिर से उसे देखने को कब मौका मिले,जिसे पास पाकर मन को शान्ति व हृदय को ढाढ़स मिले, और जिसके पास रहने से समय कब बीत गया , इसका पता न लगे, ऐसे जीवन साथी के साथ ही स्वर्ग का आनन्द मिलता है। यह सुनकर वह व्यक्तत्त जो स्वर्ग की खोज में निकला था, अपने घर वापस आ गया। तो वह स्वर्गवाला दाम्पत्य जीवन कैसा हो?

इस विषय में

कवि घाघ यह कहते हैं :-

भुइयां खेड़े हर हैं चार । घर होय गिहथिन गऊ दुधार।।
अरहर की दाल , जड़हन का भात। गागल निबुआ और घिव तात।।
खांड दही जौ घर में होय। बांके के नौन परोसे जोय।।
कहैं घाघ तब सबही झूठा। उहाँ छोड़ि इहँवै बैकुंठा।।

यद्यपि घाघ की उपरोक्त कहावत ग्रामीण क्षेत्र से सम्बंधित है, फिर भी इसका अर्थ यह है कि यदि घर में खेती इतनी है कि चार गोंई । अर्थात आठ बैलों की खेतीहोती है,अर्थात समृद्धशाली किसान हो। घर में गृहस्थी को सुचारु रूप से चलाने वाली स्त्री हो, घर की गाय दूधदे रही हो (जिस घर में दही घी दूघ की कमी न हो) शाम को जब खाना खाने बैठे तो अरहर की दाल बने, साथ में चावल (यानि जाड़े के मौसम में पैदा हो ऐसा चावल बड़ा ही स्वादिष्ट व सुगंधवाला होता है।

साथ में स्वाद के लिए रसील (गागल) नीबू मिले, और ऊपर से गरम - गरम घी डाला जाये और घर का दही शक्कर के साथ मिले, लेकिन खाना परोसने वाली एक सुन्दर कटाक्ष नयनोंवाली स्त्री हो, तो कवि घाघ कहते हैं कि वह बैकुंठ तो इसी धरती पर ही है। बाकी सब तो कहने व सुनने की बात है।

उस ज़माने की बात जब पुरुष बाहर का काम करते थे और औरतें घर का काज देखतीं थीं। काम से थका पुरुष घर आता था तो उसकी पूरे दिन की थकावट, आफिस या काम की किचकिच व झंझट, अन्य समस्यायें सब भूल जाती थी जब घर में प्यार मुहब्बत से , मनुहार से सुन्दर सी सज - धज के न भी तैयार हो तो भी , बाँके नयन वाली, मुस्कराती हुई , स्नेह से , खाना खिलाती थी तो सारे दिन की थकावट तुरन्त रफूचक्कर हो जाती थी। अब तो कई परिवारों में पति -पत्नी दोनों कार्य करते हैं , दोनों ही थके हुये घर आते हैं ,तो ऐसी स्थिति में कवि घाघ की युक्ति तो नहीं लगेगी। फिर भी स्नेह से,शान्ति से हिलमिल कर , साथ -साथ खाना बनाया जाये व खाया जाये तो सुखी जीवन बन सकता है। तो क्या स्वर्ग का सुख दिलाने में केवल स्त्री का ही उत्तरदायित्व है? क्या पुरुष का कोई कर्तव्य नहीं बनता ?इसमें तो कोई संदेह नहीं कि घर व गृहस्थी स्त्री के ही कारण चलती है क्योंकि भगवान ने उन्हें वे गुण जन्मजात दिये हैं जो सम्बन्ध बनाने व प्रगाढ़ करने के लिए अति उचित हैं।

पुरुष ,स्वभावत: सीधे बोलने वाला , सांसारिक व्यवहार से अनभिज्ञ व आतिथ्य सत्कार में उतना कुशल नहीं होता । पर दोनों मिलकर उस सुख को इस धरती पर अपने परिवार में ला सकते हैं यदि उन दोनों में उचित समीकरण स्थापित हो जाये।

इसीलिये यजुर्वेद में लिखा है:-

संतुष्ठो भार्या भर्ता , भर्ता भार्या तथैव च।
यश्मिण्नैव कुले नित्यम कल्याणम् तत्रैव ध्रुवम।।

जिस परिवार में पत्नी सुख से व संतुष्ट रूप से रहती है , वहां उसका पति भी सुखी जीवन व्यतीत करता है । और जहां पति - पत्नी दोनों में ताल - मेल बैठ गया उस परिवार में तो सुख व आनन्द का निवास है। यहां पर ध्यान देने वाली बात यह है कि पत्नी की संन्तुष्टता पर पहिले जोर दिया गया है क्योंकि यदि पत्नी संतुष्ट है तो तभी परिवार में सुख - समृद्धि व शान्ति होती है। तो क्या पत्नी को खुश रखने से ही बैकुंठ वाला सुख मिल सकता है?यह बात सचमुच में सही है क्योंकि यदि किसी पुरुष को ऐसी पत्नी मिल जाये जो-

अति चंचल,नित कलह रुचि, पति सौं नाहि मिलाप।
सो अधमा तिय जानिय ,पाइय पूर्व पाप।

ऐसी पत्नी का साथ मिले तो वह व्यक्ति समय के पहले ही बूढ़ा हो जायेगा। मानसिक कष्टों को झेलेगा , हृदय की बीमारी लग जायेगी , व अन्य समस्यायें पीछे पड़ेंगी। इसलिये यह अति आवश्यक है कि पत्नी कलहप्रिय न होकर कलावती हो और उसके लिये कुछ हद तक पति ही जिम्मेदार होता है क्योंकि विवाह के बाद हर औरत पूर्ण प्रयत्न करती है कि वह अपने व्यवहार से, काम से, बातों से , व आचरण से सबको सम्मोहित कर ले। पर बाद में यदि उसका विपरीत स्वभाव बन जाता है तो उसके ससुराल वाले, व मुख्यत: पति ही ज़िम्मेदार होते हैं । लेकिन वह स्त्री चाहे तो सुख समृद्धि कभी भी ला सकती है । इसलिये पुरुषों को चाहिये कि अपनी पत्नी का पूरा सम्मान करें, उन्हें अपना अभिन्न मित्र मानें , अपना संबन्ध मधुर बनायें रखें, धर्म का आचरण करते हुये सांसारिक कार्य करें तो इसी संसार में बैकुन्ठ का आनन्द मिल सकता है।

सच

अनुराधा चंदर (अमेरिका)

सच चाहे कितना ही कड़वा क्यों न हो
पर कई मीठी मीठी झूठों के सामने जीत ही जाता है !
जिन्दगी एक सच के सिवाय और है ही क्या .....
कई झूठ का सवाल सिवाय एक सच और क्या है ?
हजारों झूठ का हिसाब चुकाते चुकाते
थक जायेंगी पीढ़ियों दर पीढ़ियां
अंधेरे में दिया जलाकर, रोशनी तो ला सकते हो
कुछ पल के लिये
पर, फिर दिया बुझ गया तो जिन्दगी का रहस्य -
जो है एक सच
आ जायेगा सामने
हमेशा के लिये।
खोल देगी तुम्हारा सारा भेद
झूठ से तुम दुनिया को झुठला सकते हो
पर क्या अपने आप से छिपा सकते हो ?

ग़ज़ल

ब-ज़ाहर[1] तो सारे लोग तुम्हारे ज़रूर थे
दो चार दिल से लेकिन हमारे ज़रूर थे

उन के हुज़ूर चेहरे पै रौनक तो आ गई
पलकों पै कुछ लरज़ते सितारे ज़रूर थे

दिल को न थी उम्मीद के तू आयेगा मगर
कई बार तुझ को यूंही पुकारे ज़रूर थे

तेरे बग़ैर साग़र-ो-मीना में डुब कर
दिन रात यूं फिराक के गुज़ारे ज़रूर थे

तसवीर से मिले है तसकीने दिल कहीं
तनहायिों में खाके उतारे ज़रूर थे

मुकददर हुई हमें न आमद बहार की
पहलू चमन के जब के निखारे ज़रूर थे

नाहक सितम पै वो रहे अशकों की ओट में
आंखों से गो निकलते शरारे ज़रूर थे

ये नसीब था के भटकें मौजों के साथ साथ
दरयाये दरद-ो-ग़म के किनारे ज़रूर थे

मैहशर में भी हमारी पूछी सुनी न गई
इस में तेरी रज़ा के इशारे ज़रूर थे

आख़िर को हम भी काईले तकदीर हो गये
तौर-ो-तरीक परखे सारे ज़रूर थे

तूफां के जोश का था पास वरना "शैदा"
तैह से सफीने[2] हम ने उभारे ज़रूर थे

महेश नन्दा "शैदा"

---

(1) जो देखने में आये (2) कशतियां

غزل

۱. بظاہر تو سارے لوگ تُمہارے ضرُور تھے
دوچار دِل سے لیکِن ہمارے ضرُور تھے

۲. اُن کے حضُور چہرے پہ رونق تو آئی تھی
پلکوں پہ کُچھ لرزتے سِتارے ضرُور تھے

۳. دل کو نہ تھی اُمید کہ تُو آئے گا، مگر
کئی بار تُجھ کو یُونہی پُکارے ضرُور تھے

۴. تیرے بغیر ساغر و مینا میں ڈُوب کر
دِن رات یُوں فِراق کے گُزارے ضرُور تھے

۵. تصویر سے مِلے ہے تسکینِ دِل کہیں؟
تنہایئوں میں خاکے اُتارے ضرُور تھے

۶. مُقدر ہُوئی ہمیں نہ آمد بہار کی
پہلُو چمن کے جب کہ نِکھارے ضرُور تھے

۷. ناحق سِتم پہ وہ رہے اشکوں کی اوٹ میں
آنکھوں سے گو نِکلتے شرارے ضرُور تھے

۸. یہ نصیب تھا کہ بھٹکیں موجوں کے ساتھ ساتھ
"دریائے درد و غم کے کِنارے ضرُور تھے"

۹. محشر میں بھی ہماری پُوچھی سُنی نہ گئی
اِس میں تیری رضا کے اشارے ضرُور تھے

۱۰. آخِر کو ہم بھی قایِل تقدیر ہو گئے
طور و طریق پرکھے سارے ضرُور تھے

۱۱. طُوفاں کے جوش کا تھا پاس ورنہ شیدؔا
تہ سے سفینے ہم نے اُبھارے ضرُور تھے

मेरे नाना

राहुल उपाध्याय (अमेरिका)

मेरे नाना
एक पेड़ के लिए
सारे मोहल्ले से लड़े थे
ये नहीं कटेगा
ये नहीं कटेगा
कहते कहते
अपनी जिद पर अड़े थे
नाना की वजह से
सड़क के विस्तार में
रोड़े आ पड़े थे

सड़क का विस्तार रुक गया था
परिवार का विस्तार हो रहा था
समय अपनी चाल चल रहा था
नाना चल बसे थे
बहुयें आ बसी थीं

उनके पोते अपने पाँव पर तो खड़े थे।
लेकिन जीवन के और भी दुखड़े थे।
अपनी आज़ादी का परिचय देने के लिये
खुद को कमरों में बंद करना ज़रूरी है

एक नहीं
सारे के सारे पेड़ काट दिये गये
ताकि फिर न सर उठा सकें
जमीन खोद खोद कर
जड़ से ही मिटा दिये गये

मैं दो साल में
जब भी वहाँ जाता हूँ
परिवार को हरा भरा पाता हूँ

लेकिन उस पेड़ को
याद से नहीं मिटा पाता हूं

मेरे घर में
एक नहीं कई पेड़ हैं
बेडरूम की खिड़की से
देखता हूं उन्हें
जैसे वो किसी पेंटिग का हिस्सा हो
मैं उनसे कभी जुड़ नहीं पाता हूं

अंत जिज्ञासा का!

मधुप पांडेय (भारत)

एक विदेशी पर्यटक
भारतवर्ष आया।
गाइड ने उसे ताजमहल दिखाया।
देखकर उसका
चेहरा खिल गया
उसे लगा कि
उसे स्वर्ग -सुख मिल गया।
फिर गाइड ने उसे
अजंता- एलोरा दिखाए।
देखकर उसके
तन- मन मुस्कराये।
फिर गाइड उसे
खजुराहो ले गया।
पर्यटक को आश्चर्य का
धक्का दे गया।
उसने बिना विलंब,
बिना किये देर।
दिखाए उदयपुर,
जयपुर, जेसलमेर।
अंत में पर्यटक बोला -
" आपने मुझे सभी
पर्यटन स्थल दिखाए।
मुझे बहुत अच्छे लगे,
बेहद पसंद आए।
परन्तु यहाँ आने से पहले
मुझे मिले थे संकेत।
कि भारत वर्ष में
होते हैं भूत - प्रेत।
" मि. गाइड मेरी जिज्ञासा मिटा दो।
हो सके तो कहीं
भूत- प्रेत दिखा दो।"
सुनकर गाइड
कुछ देर सोचता रहा।
अपने सिर के
बाल नोचता रहा।
फिर अचानक
उसे क्या सूझी
कि उसने जिज्ञासा को
जड़ से मिटा दिया।
पर्थटक को संसद की
दर्शक - दीर्घा में
ले जाकर बिठा दिया!!

नादानी (लघु कथा)

नीरज नैथानी (भारत)

आज ' भागवत सप्ताह ' का अन्तिम दिन था। पुरोहित जी पितृ - दान में मिलने वाली वस्तुएं चारपाई , बिस्तर कपड़े , छतरी, जूते, बर्तन आदि को लाने के लिए अपने चौदह वर्षीय पुत्र को भी साथ ले गये। घर लौटने पर पुत्र ने जिज्ञासावश पूछा, पिता जी, आपके यजमान , भागवत कथा किसलिये करवाते हैं तथा साथ में इतनी सारी चीज़ें दान में क्यों देते हैं ? पंडित जी ने पुत्र को समझाया बेटा मैं अपने यजमानों के दिवंगत माता - पिता की आत्मा की शान्ति के लिए भागवत करता हूं तथा ऐसा विश्वास किया जाता है कि दान में दी गयी ये वस्तुएँ कुल पुरोहित के माध्यम से पितरों को सन्तुष्ट करती हैं। लड़के ने फिर पूछा , " पिता जी, क्या आपने दादा - दादी की मृत्यु के पश्चात भागवत करवाकर ऐसी वस्तुयें दान की थीं ?" पंडित जी ने थोड़ा सोचकर पुत्र को बताया , बेटा ये सब अन्धविश्वास है। किसने देखा है कि मरने के बाद आत्मायें भौतिक वस्तुओं का उपयोग करती भी हैं या नहीं।

"पंजाबी लहरें रेडियो प्रोग्राम टोरंटो का सबसे पुराना हिन्दी पंजाबी का अतयन्त लोक प्रिय प्रोग्राम है।"
सुनना न भूलें।
प्रोडयूसर व निर्देशक
सतेन्द्र पाल सिंह सिधवान

फोन नम्बर: 416-677-0106

खामोशी की आवाज

सुखवर्ष कंवर 'तनहा'

खामोशी की भी आवाज होती है
खामोशी बे-आवाज नहीं होती
तन्हाई भी एक एहसास है
तन्हाई बिन एहसास नहीं होती
आत्मा बे-दाग है बादाग नहीं होती
जिन्दगी की राह कठिन है
पर राह बिन साथ नहीं होती
पर कभी साथ चल कर भी राह आसान नहीं होती
जिन्दगी एक साज है
बेसाज नहीं होती
गर साज टूट जाए रहता तो साज है
पर आवाज नहीं होती
जीवन का सफर तो लम्बा सफर है
इस सफर में लोग मिलते तो बहुत हैं
पर सबसे वह बात नहीं होती
खुशी भी एक अहसास है
जो 'तन्हा' का साथ नहीं देती
खामोशी की भी आवाज है
खामोशी बे-आवाज नहीं होती।

लखनऊ की सड़क से लेकर ओसलो-पार्लियामेन्ट तक का सफर

माया भारती, ओस्लो नार्वे

सुरेशचन्द्र शुक्ल "शरद आलोक" का नाम आते ही मेरे मन में एक ऐसे व्यक्ति का चित्र खिंच जाता है जिनसे बातचीत करने में अपनेपन के अहसास के साथ, श्रद्धा और प्रेम छलकता है। कविता उनके रोम-रोम में बसी है, कहानी समाज के यथार्थ का अवलोकन करती है। वैश्विक समस्याओं से उत्पन्न उनकी चिन्ता कहीं उनकी कविताओं में मशाल की तरह जल जाती है तो कहीं व्यंग्य करती कहीं पाठक से प्रश्न करती है।

आज से 40 वर्ष पहले चौदह वर्ष की आयु में "वर्षा आगमन" कविता से लेखन आरम्भ करने वाले आठवीं कक्षा के विद्यार्थी सुरेशचन्द्र शुक्ल "शरद आलोक" को नहीं पता था कि वह आगे चलकर लेखक बनेंगे। "हे बापू तुम धन्य हो", "ओ मनुआ जीवन का सुफल बनाय लेव" आदि कवितायें जब उन्होंने रची थीं तब वह हाई स्कूल में पढ़ते थे। मध्यमवर्गीय गरीब परिवार में जन्मे इस संघर्षशील रचनाकार ने जीवन के अनेक उतार चढ़ाव देखे। उन्होंने अपनी पहली काव्य की लघु पुस्तक "वेदना"(1976) में लिखी था, संघर्ष ही जीवन है। उनका वह संघर्ष आज चालीस वर्ष बाद भी जारी है।

"सत्य के साथी कभी मरते नहीं, / समय के साथी कभी रुकते नहीं।"/ "प्रेम से बड़ा नहीं उपहार / विरह में पला हमारा प्यार।"/ "नेह के दीपक जला दूँ।"/ "करुणा तुम मेरी सहेली"/ "मेरे भीगे पलक छुए क्यों,/ चूम न पाये ये प्यारा मन"/ "हमारे प्राण सा भारत"/ "समर्पण वीरों का चन्दन"/ "लेखनी कर उनका जयगान" आदि गीतों के रचनाकार का लेखन निरन्तर चलता रहा। चाहे आर्थिक तंगी आयी हो चाहे और कोई मजबूरी रही हो इस कलम के सिपाही का लेखनी ने सदा साथ दिया। हाईस्कूल उत्तीर्ण करके वर्ष 1972 में सवारी और मालडिब्बे कारखाना आलमबाग, लखनऊ में नौकरी कर ली और आर्थिक स्थिति मजबूत करने में अपने पिता का हाथ बटाने लगे। नौकरी करते-करते आपने गोपीनाथ लक्ष्मण दास रस्तोगी इण्टर कालेज से हाई स्कूल, दयानन्द ऐंग्लो वैदिक महाविद्यालय लखनऊ से इण्टरमीडिएट (1975), लखनऊ विश्वविद्यालय के अन्तर्गत बप्पा श्री नारायण डिग्री कालेज से स्नातक (1979) और श्रमकल्याण विभाग कानपुर से श्रमिक शिक्षक (1977) की शिक्षा प्राप्त की। इन सात वर्षों में नौकरी करते हुए अवैतनिक स्थानीय लघुपत्रों अमृतांजलि और श्रमांञ्चल में सहायक सम्पादक भी रहे।

वे गोपीनाथ लक्ष्मण दास रस्तोगी इण्टर कालेज में साहित्य परिषद के उपाध्यक्ष और सांस्कृतिक परिषद के महामन्त्री चुने गये और विद्यार्थी जीवन से ही साहित्यिक कार्यक्रमों में सक्रियता से हिस्सा लेते रहे। स्वतन्त्रता संग्राम सेनानियों: शचीन्द्रनाथ बक्शी, रामकृष्ण खत्री, गंगाधर गुप्ता, दुर्गा भाभी, प्रकाशवती, डा. रमा सिंह आदि के सम्पर्क में आने से उनपर समाजसेवा का भाव जगा और वे खाली समय समाजसेवा में व्यतीत करने लगे। स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी स्व. गंगाधर गुप्ता उनके मित्र बन गये थे। उनकी सेवा से प्रसन्न होकर लोकनायक जयप्रकाश नारायण ने शरद आलोक को लखनऊ विश्वविद्यालय में माला पहनाकर सम्मानित किया।

महादेवी वर्मा और जैनेन्द्र कुमार से शुभ आशीर्वाद पाने वाले सुरेश शुक्ल जी ने बताया कि वर्ष 1969 में डा. आभा अवस्थी की गुड़ियों की प्रदर्शनी का उदघाटन करने आयी उनकी प्रिय कवयित्री महादेवी वर्मा जी ने उनकी कविता सुनी और आशीर्वाद प्रदान किया। जैनेन्द्र कुमार जी ने शरद आलोक जी की रचनाओं (कहानियों) पर अपनी सम्मति 1984 को अपने दरियागंज दिल्ली पर स्थित अपने निवास पर दी थी।

शरद आलोक जी ने बताया कि कुँअर चन्द्रप्रकाश सिंह, कमलेश्वर, कुँवर नारायण, गोपीचन्द नारंग, असगर वजाहत, उबैदुर रहमान हाशमी, शंभुनाथ, विनोदचन्द पाण्डेय, गिरिजाशंकर त्रिवेदी, डा. विद्याविन्दु सिंह, डा. सुधा पाण्डेय, मनोरमा जफा, स्व. लक्ष्मीकान्त वर्मा, उपकुलपतियों लोकेश शेखावत, डी. एन. बाजपेई और राम प्रकाश सिंह ने इनके साहित्य पर विभिन्न कार्यक्रमों पर प्रकाश डाला तथा उनके स्वागत में लखनऊ विश्वविद्यालय, जामिया मीलिया, दिल्ली और अवधेश प्रताप सिंह विश्व विद्यालय, रीवा में उनके व्याख्यान कराये गये और सम्मानित किया गया।

सुरेशचन्द्र शुक्ल "शरद आलोक" एक बहुत संवेदनशील रचनाकार हैं। उनके अनेक गीतों की पंक्तियाँ जो नीचे दी जा रही हैं पाठकों को स्मरण होंगी: "सत्य के साथी कभी मरते नहीं, / समय के साथी कभी रुकते नहीं।"/ "प्रेम से बड़ा नहीं उपहार / विरह में पला हमारा प्यार।"/ "नेह के दीपक जला दूँ।"/ "करुणा तुम मेरी सहेली"/ "मेरे भीगे पलक छुए क्यों,/ चूम न पाये ये प्यारा मन"/ "हमारे प्राण सा भारत"/ "समर्पण वीरों का चन्दन"/ "लेखनी कर उनका जयगान" और "हम हलवाहे के बैल नहीं हैं, जहाँ कहो जुत जायेंगे। दूध के बदले पानी बेचो सहन नहीं कर पायेंगे।"

शरद आलोक की कविताएँ पाठकाएँ को छाया देती है। वे आकुल वसन्त में कहते हैं: "आओ रुको यहाँ कुछ देर बन्धु! /समय ने बाँधे यहाँ सेतु बन्धु! / आकुल वसन्त अपने गाँव बन्धु! / मिलेगी यहाँ सबको छाँव बन्धु।

कवि कर्म को वह बहुत महत्वपूर्ण मानते हैं। उन्होनें अपनी "कवि-कविता" शीर्षक कविता में विस्तार से लिखा है कि "कवि वही जो समय का सच कहे,/ किन्तु दोषी भावना से बच रहे।"

शरद आलोक जी सड़क पर बाल मजदूरों के रूप में देवदूत देखते है तो कहीं गर्मी ऋतु में द्वार-द्वार शीतल जल के लिए गगरी बेचने वाली महिला के रूप में पूनम का चाँद नजर आता है। कहीं आदर्श जाल में फाँस सा चुभा दिखाई देता है। कहीं आदर्श मदिरा की तरह दिखाई देने लगती है।

काव्य-कहानी नाटक और अन्य विधाओं में "शरद आलोक" ने महत्वपूर्ण कृतियाँ दी हैं। काव्य की चर्चित पुस्तकों में "रजनी", "नंगे पाँवों का सुख" और "नीड़ में फँसे पंख है"। चर्चित कथाओं की बात वर्ष 1985 में आरम्भ होती है। 1985 में इनकी कहानी "आसमान छोटा है" सारिका, कादम्बिनी और स्वतन्त्र भारत में छपी थी जिस पर बहुत से पाठकों ने प्रतिक्रिया स्वरूप पत्र लिखे थे। चर्चित कहानियों का यह सिलसिला "आदर्श एक ढिंढोरा" के कादम्बिनी में प्रकाशित होने से आगे बढ़ा। कहानी "तलाकशुदा बच्चे", "प्रेमांकन", "दुनिया छोटी है", "सरहदों के पीछे" कादम्बिनी में छपीं। "वापसी" ने प्रवासी भारतीय के भारत लौटने की ललक को बहुत सजीवता से चित्रित किया गया है। "मदरसे के पीछे" प्रेमकथा में अफगानिस्तान में स्थित आतंकवाद और धर्मान्धता की त्रासदी का बहुत नाटकीय वर्णन हुआ है। सरहदों से दूर में जातिवाद का वर्णन अपनी चरम सीमा पर हुआ है।

शरद आलोक जी की बातचीत रोचक और तथ्यपूर्ण होती है। सत्य, व्यंग्य, यथार्थ और भाषा का प्रयोग जिस तरह आपस में बातचीत के दौरान शरद आलोक जी करते हैं वह उनके काव्य और कहानियों में भी प्रगट होता है। भाषा में कोई बनावट नहीं, शैली प्रवाहपूर्ण और विषय कथ्य के अनुसार, हिन्दी के साथ-साथ कभी-कभी पंजाबी, उर्दू भाषा के मुहावरे लखनवी अन्दाज में पात्रों के अनुसार प्रयोग करते हैं। इनकी कई कहानियों में लखनवी अन्दाज देखने को मिलता है।

कहानियों: तलाशी, तनाव और लाश के वास्ते में कहीं मन्टो नजर आते हैं तो कहीं प्रेमचन्द और दूधनाथ सिंह की तरह यथार्थ कथ्य का ताना बाना लेकर आते हैं। जब साहित्य की बात होती है तब वे दूसरे लेखकों को समाहित करते हुए बातचीत करते हैं और अच्छे साहित्य की प्रशंसा किये बिना नहीं रहते। किसी से विचारों में भिन्नता होते हुए भी उसके साहित्य को नहीं नकारते। एक अच्छे आलोचक के गुण हैं आप में। अपनी अनेक स्वरचित कहानियों के लिए शरद आलोक हमेशा याद किए जाते हैं जो हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि बन गयी हैं।

विदेशों में रहकर पत्रिका निकालना कितना आसान है? वे 28 वर्षों से भली भांति जानते हैं क्योंकि नार्वे से वर्ष 1980 से 1985 तक "परिचय" और वर्ष 1988 से "स्पाइल-दर्पण" और 2007 से "वैश्विका" को निकाल रहे हैं, इसमें विदेशों में रहने वाले हिन्दी रचनाकारों का सहयोग मिला है। ओस्लो-पार्लियामेन्ट में सोशलिस्ट लेफ़्ट पार्टी की तरफ से 2003 से 2007 तक प्रतिनिधि चुने जा चुके हैं और अभी ओस्लो के स्कूलों और टैक्स समिति के सदस्य हैं।

दिल्ली हिन्दी अकादमी, नार्वेजी लेखक यूनियन और छठे विश्व हिन्दी सम्मेलन द्वारा उन्हें पुरस्कृत किया जा चुका है। सोनांञ्चल साहित्यकार संस्थान सोनभद्र, उत्तर प्रदेश, भारत आपके नाम से नामित "सुरेशचन्द्र शुक्ल राष्ट्रभाषा पुरस्कार" किसी एक विद्वान को प्रतिवर्ष प्रदान करता है। वे नार्वेजीय लेखक सेन्टर, नार्वेजीय फिल्म यूनियन, नार्वेजीय पत्रकार यूनियन और इन्टरनेशनल फेडेरेशन आफ जर्नलिस्ट के सदस्य हैं।

स्नेहिल किरणें

शशि पाधा (अमेरिका)

उस दिन जो भेजीं थीं तुमने
धूप किरण की स्नेहिल लड़ियां
रोज़ सुबह खिड़की के द्वारे
मुझसे मिलने आतीं वे।

कभी चूमतीं पलक उनींदी
कभी छुएँ अलसाये अंग
कभी तैरतीं दीवारों पर
चित्रित करतीं अनगिन रंग
खेलें मेरी खुली अलक से
नयनों में बस जायें वे
मुट्ठी में भर लेना चाहूं
दीपशिखा बन जायें वे

छू लेतीं अन्त:स को मेरे
कोमल भाव जगायें वे
रोज़ ही मिलने आयें वे।

कभी कभी डाली पे बैठी
पंछी से दो बातें करतीं
और कभी कलियों को छूकर
पीत सुनहरी आभा भरतीं
और कभी बदली के पीछे
जाने क्यों छिप जातीं वे
देख मेरे नयनों की पीड़ा
आंगन में मिल जातीं वे

गगन लोक की मीठी बातें
मुझे सुनाने आतीं वे
रोज़ ही मिलने आतीं वे।

तूने मुझको भेज दिया था
स्नेह का जो अनुपम उपहार
झिलमिल करते आंगन बगिया
स्वर्णिम लगता यह संसार
मैं भी ये किरणों की लड़ियां
दिशा - दिशा में बांधूंगी अब
दीप्तिमान हो सारी धरती
लक्ष्य यही मैं साधूंगी अब

बदलाव (बाल कथा)

पुर्नकथन

डा.नीलाक्षी फुकन नेउग (अमेरिका)

किसी एक शहर के किनारे एक बहुत घना जंगल था। उसके एक बड़े पेड़ के तने में एक मादा उल्लू रहती थी।
उसे शोर - हंगामा बिल्कुल पसंद न था। थोड़े ही दिनों से उस पेड़ में दूसरी बहुत चिड़ियों ने घौंसले बनाने शुरू कर दिये। उस पेड़ पर आने वाली चिड़ियों की संख्या इतनी बढ़ गयी थी कि रोज़ शाम को झगड़े होने लगे। क्योंकि ज्यों ही कोई घौंसला खाली देखतीं तो बाहर से आने वाली चिड़ियां उस पर कब्ज़ा कर लेतीं और शाम को घौंसले के असली मालिक आकर उनके साथ झगड़ते। ऐसी घटनायें अब इतनी बढ़ चुकी थीं कि सबको अपने - अपने घौंसलों की रक्षा करने की चिन्ता लगी रहती थी। कभी कोई चिड़िया दाने ढूंढ़ने भी नहीं जाती थी।

रोज़ के हंगामे से तंग आकर मादा उल्लू एक दूसरा घर ढूँढ़ने वहां से निकल पड़ी। उसे एक स्कूल के पास एक पेड़

अच्छा लगा । तने में एक खोखल देखकर वहीं रहने लगी। उसे नया माहौल बहुत अच्छा लगने लगा था। अब उसे अच्छी नींद भी आने लगी थी। स्कूल के बच्चों को रोज़ बाहर खेलते देखकर उसे बहुत खुशी होती थी। लेकिन कुदरत के नियमों को कौन नक्कार सकता है? उसे एक दिन पता चला कि वह माँ बनने वाली है। दिन व दिन वजन

बढ़ता गया और वह खोखल धीरे - धीरे छोटा पड़ने लगा। उसे अपने सगे - संबन्धों की बहुत याद आने लगी।
वह फिर उसी पुराने जंगल की ओर दूसरे खोखल की खोज में निकली। वहाँ जा कर वह चौंक गयी। पूरा जंगल कट चुका था और वहाँ पर नयी - नयी इमारतें खड़ी की जा रही
थीं। अपने साथी - संम्बन्धी कहां चले गये कुछ अता - पता नहीं। उसे बहुत दुख हुआ। सोचा इन्सानों को हम पक्षियों के घरों को उजाड़कर क्या मिलता है? क्या

ऐसे ही समय बीतने लगा। मादा उल्लू के तीन बच्चे हुये और वे पाँचों हँसी - खुशी उस पेड़ में रहने लगे।

हास्य व्यंग्यः-हास्य व्यंग्यः-

देवेन्द्र कुमार मिश्र (भारत)

भ्रष्टता

जब से वे भ्रष्टता
को अपने आचार
में लाये हैं
कोठी वाले सेठ
कहलाये हैं।

नेताजी का पशु प्रेम

एक नेता शक्ल से
लग रहे थे अभिनेता
पशु महत्व को समझा रहे थे
पशुओं से प्रेम करना सिखला रहे थे
नाम था परमानन्द
गधे के सिर पर हाथ फेरते
ले रहे परम आनन्द
वे बोले - गधे मेरे पुत्रों के समान हैं
हमने कहा - इसमें क्या शक है
आप लगते भी गधे के बाप हैं
किन्तु आपने गधे को ही क्यों
बकरे को बेटा क्यों नहीं कहा है
वे बोले- गधे को बेटा मान शाबासी पायेंगे
बकरे को तो हम
डिनर में चबा जायेंगे ।

लोक लाज

सुरेशचन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक'
(नार्वे)

बाबू जी बहुत बीमार हैं। उन्होंने बोलना बंद कर दिया है। " अम्मा ! बाबू जी ने बोलना बंद कर दिया है। भैया को भेजकर डाक्टर को बुलवाओ", राधा ने कहा। तुम्हारा भैया गंगाजल लेने गया है। माँ ने उत्तर दिया। और विचार मग्न हो गयी। राधा से रहा नहीं गया उसने ज़ोर देकर कहा , " अम्मा भाभी को भेजकर डाक्टर को बुलवा लो।"

"मैंने तुम्हारी भाभी को मन्दिर में दुआ मांगने के लिये भेज दिया है।"

अरे! अम्मा ! यह तुमने क्या किया। भाभी को जेठ की लू में मन्दिर भेज दिया। पुजारी मन्दिर में ताला लगाकर अपने घर पर सो रहे होंगे। फिर माँ ने बेटी की ओर एक क्षण देखकर अपना मुँह मोड़ लिया। राधा ने कहा, " अम्मा ! बाबू जी को दुआ की नहीं दवा की जरूरत है। भाभी को कहीं लू लग गयी और वो बीमार हो गई तब क्या होगा?"

" बेटी ! इलाज के लिए न तो तुम्हारे भैया के पास पैसे हैं और न ही मेरे पास। लोग यह न कहें कि हमने तुम्हारे बाबू जी के लिए कुछ नहीं किया । हम गरीबी से तो लड़ सकते हैं , परन्तु धार्मिक लोकलाज के दिखावे को नज़र अन्दाज़ नहीं कर सकते।"

अचानक राधा के पिता की धड़कनें बन्द हो गयीं। लोग इधर - उधर देखने लगे। राधा ने बाबू जी के सीने को दोनों हाथों से सात बार दबाया और बाबू जी के सिर पर मुख रखकर रोने लगी। यह देखकर लोग आपस में कानाफूसी करने लगे और बोले देखो राधा को क्या हो गया जो अपने बाप के मुख से मुख लगाये फूंक रही है।

हास्य - व्यंग्य

आधुनिक युग का पंच तंत्र

प्रो. ओम कुमार आर्य (भारत)

मैं कई दिनों से सोच रहा था कि पंचतंत्र जैसी कालजयी रचना की आधुनिक युग में, वर्तमान संदर्भ में भी कुछ न कुछ प्रासंगिकता होनी ही चाहिये। विचार था कि कोई अधिकारी विद्वान मिले और इस विषय में चर्चा करूं। इच्छा में दम हो तो उसके अनुरूप सफलता भी अवश्य मिलती है। तो एक दिन मुझे अपने एक ऐसे मित्र अचानक मिल गये जो हमसे परिचित तो अच्छी तरह थे पर कई बरसों से मिले नहीं थे। अजब संयोग था कि नाम था उनका लक्ष्मी कांत शर्मा।

वे संस्कृत ग्रन्थों के अच्छे जानकार हैं। विशेषकर नीति-परक रचनाओं के तो विशेषज्ञ हैं जैसे ' शुक्रनीति' विदुर नीति' ' चाणक्य नीति ' ' हितोपदेश' - ' पंचतंत्र ' आदि। ' पंचतंत्र ' पर तो घंटों विचार व्यक्त कर सकते हैं। गत दिनों जब मुझसे मिले तो एक नई पते की बात भी बताई। बोले देखो लोक में प्रसिद्ध है कि ' पंचतंत्र' के रचयिता विष्णुशर्मा थे और मैं (मेरे मित्र) लक्ष्मी कांत और ' विष्णुशर्मा' पर्य्यायवाची हैं । अत: यदि विष्णु शर्मा ' पंच तंत्र' के रचयिता थे तो मुझे भी ' पंचतंत्र ' की पूरी जानकारी होनी चाहिये। क्योंकि समानार्थी शब्दों के हिसाब से हम दोनों - विष्णुशर्मा लक्ष्मीकांत शर्मा- नाम राशि हैं। तो नाम की लाज तो रखनी ही होगी।

वे बताने लगे कि ' देखो' मध्ययुग में किन्हीं अमर शक्ति राजा के तीन बिगड़ैल राजकुमारों को रास्ते पर लाने के लिए 80 वर्षीय विष्णु शर्मा ने जिम्मा लिया था कि वे मात्र छ: महीनों में राजपुत्रों को एकदम लायक और राजनीति में पारंगत कर देंगे। वे पुत्र थे बहुशक्ति , उग्रशक्ति और अनन्तशक्ति। मेरे मित्र कहने लगे कि मैंने न केवल ' पंचतंत्र' को पढ़ा है बल्कि उसकी ही तर्ज पर एक बहुत ही सरल और व्यवहारिक ' पंचतंत्र ' आधुनिक युग के राजकुमारों के लिए बनाया भी है। प्राचीन काल में चूंकि राजतंत्र था इसलिये राजकुमार राजघरानों में ही होते थे। पर आजकल तो सर्वत्र प्रजातंत्र की धूम और गूँज है। अत: हर गली मोहल्ले में , नुक्कड़ चौराहे पर राजकुमार ही राजकुमार खड़े, घूमते , मटरगश्ती करते मिलते हैं।

विष्णुशर्मा का दावा था कि वे केवल छ: महीनों में राजकुमारों को बुद्धिमान एवं कुशल राजनीतिज्ञ बना देंगे। उन्होंने कहा कि मैं विष्णु शर्मा का मुकाबिला तो नहीं कर सकता पर विनम्रता पूर्वक विश्वास दिलाता हूं कि मेरे वर्तमान युग के पंचतंत्र के एक - 2 सिद्धान्त को एक - 2 महीने में पूरी तरह सीखा जा सकता है , यूं कुल जमा पाँच महीनों में ही बुद्धिमान - बना जा सकता है। राजनीति के गुर सीखे जा सकते हैं। कुछ सोच समझकर ही चलना होगा, क्योंकि राजतंत्र में राज्य एक राजा से छीना या हथियाया , या जीता जाता था। आजकल चुनाव , चुनावी जोड़ - तोड़ , मध्यावधि चुनाव या उपचुनावादि में तिकड़म लड़ाकर राज्य या सत्ता हथियायी जाती है । तो उन्होंने अपने प्रजातंत्रीय ' पंचतंत्र ' पर यूँ प्रकाश डाला।

उन्होंने स्पष्ट किया ' तंत्र' माने व्यवस्था या कोई सिस्टम या प्रणाली । पर वे तंत्र का अर्थ करते हैं सिद्धान्त , नुक्ता , सूत्र । तो उनके पंचतंत्र में पाँच सिद्धान्त , नुक्ते , सूत्रों का समावेश है। मुलाहिजा फरमाइये!

1. चापलूसी- प्रथम सूत्र है चापलूसी। इसके लिए चिकनी चुपड़ी , लच्छेदार और अतिश्योक्ति पूर्ण भाषा की आवश्यकता है। जानकारों के बीच रहकर और ज्यादा अभ्यास भी करना पड़ता है। जितना गुड़ डालोगे , उतना ही माधुर्य भी मिलेगा।

2. अवसर वादिता - यह दूसरा सूत्र है । हवा का रुख देखो , उगते हुये सूरज को पहचानना सीखो। हाथों के उठने गिरने का गणित ध्यान से समझो। समय की भाषा सुनो , अर्थ समझो, , बेड़ा पार है। यह नुस्खा भी राजनीति में तुरंत असर दिखाता है चाहे आमचुनाव हो चाहे मध्यावधि चाहे उपचुनाव चाहे सदन के भीतर किसी को समर्थन देने न देने का मामला हो । गंगा गये गंगाराम और जमना गये जमनादास, इसी सूत्र पर आधारित कहावत है।

3. थाली में छेदवाद - हिन्दी में एक कहावत है कि जिस थाली में खाना उसी में छेंद करना। मित्र ने कहा कि शायद नैतिकवादी इसको अवगुण करार देते हों पर राजनीति में यह नुस्खा बड़ा ही कारागर साबित हुआ है। खासकर आधुनिक युग की राजनीति में तो इस सूत्र का कोई जवाब नहीं। समय को देखते हुये जिस थाली में खाया है उसमें एक छेंद भी कर सकते हो , दो या तीन भी और आवश्यकता हो तो पूरी थाली को ही छेदों वाली छलनी भी बना सकते हो। यह काम जितनी बेशर्मी और नुगरेपन से करोगे उतनी ही ज्यादा कामयाबी मिलेगी।

4. सीढ़ी तोड़वाद- इसको ' सीढ़ी हटाववाद या सीढ़ी

अर्थात सीढ़ी फेंकवाद भी कहा जा सकता है। अर्थात जिस सीढ़ी का सहारा लेकर आप ऊपर गये हैं उस सीढ़ी को हटा दो, तोड़ दो, परे फेंक दो, ताकि कोई अन्य उसका उपयोग न कर सके। जिस व्यक्ति का उपयोग किया है उसको अब सारहीन समझकर दूर फेंक दो , उसे स्पर्धा का अवसर मत दो। इसी का दूसरा रूप है।

5. यू टर्न- यह पाँचवा सूत्र है। अर्थात तुरंत पलट जाना। किसी बात पर आप एक दिशा में कितनी ही दूर क्यों न निकल जायें, अपने स्वार्थों की पूर्ति और लक्ष्य सिद्धि के लिए यू- टर्न लेने में भी संकोच न करें।इस प्रकार इन उपर्युक्त सिद्धान्तों को प्रयोग में लाने से वर्तमान युग में काफी सफलता मिल सकती है। कुछ गौण सूत्र और भी हैं पर वे भी इन्हीं पाँच के अंतर्गत आ जाते हैं। जैसे मुखौटावाद, लालीपोपवाद, मीठी गोलीवाद, टरकालेजी, आदि। मित्र ने बताया कि हिन्दी के कुछ मुहावरे, और कहावतें भी ऐसी हैं जो उपर्युक्त नुक्तों का पूरा अनुमोदन और समर्थन करती हैं। इसलिए उनके अनुसार आचरण करना भी आधुनिक युग के पंचतंत्र को जल्दी समझाने में मददगार हो सकता है । जैसे सब्ज़ बाग दिखाना, ख्याली पुलाव पकाना, हाथी के दांत खाने के और दिखाने के और आदि- आदि।

मैंने अपने उन मित्र से आधुनिक युग के ' पंचतंत्र' विषयक जो कुछ सुना था इस लेख में लिख दिया है। इसके अनुसार चलकर सफलता मिलती है या नहीं इसकी गारण्टी मेरी नहीं है, उन मित्र की है । मैं तो इतना ही कह सकता हूं कि मध्ययुग के विषय के विष्णु शर्मा की भाँति आज के युग के लक्ष्मीकाँत शर्मा ने ' आधुनिक युग का पंचतंत्र' तैयार तो बड़ी महेनत से किया है। हमें उनके परिश्रम और बुद्धि की दाद देनी चाहिये।

पुस्तक पर पाठक की (प्रतिक्रिया)

आदरणीय वेदप्रकाश जी , नमस्कार।

बहुत समय बाद कुछ बहुत अच्छा सकारात्मक पढ़ने को मिला। हार्दिक धन्यवाद श्री श्याम त्रिपाठी जी का जिन्होंने मेरी कुछ दिन पहले की कैनेडा यात्रा के समय मुझे आपका उपन्यास " एक नयी क्रान्ति" भेंट किया।

इतने संवेदनशील विषय को आपने अति प्रभावी सहज रूप से अभिव्यक्त किया है। आपने न केवल समाज की एक विकृति की ओर ध्यान आकार्षित किया है बल्कि सम्भव समाधान भी सुझाया है।

आपकी रचना इतनी अनुपम और रोचक है कि रुक रुक कर अंग्रेजी की किताबें पढ़ने का आदी हो जाने के बाद भी मात्र दो बैठकों में , मैं पूरा उपन्यास पढ़ने को बाध्य हो गया। हाँ पढ़ते - पढ़ते अनेकों बार रुका अवश्य, अपनी डबडबाई आँखें पोंछने के लिए । कभी समाज के तिरस्कृत वर्गों की अवस्था पर आंसू बहे, कभी राजू और रश्मि के जीवन के भावुक क्षणों में और कभी उत्कृष्ट जीवन मूल्यों के प्रसंगों पर।

यदि संक्षिप्त में कहूं तो आपकी सुकृति " एक नयी क्रान्ति" पढ़कर विवेग जागा और आनन्द भी खूब आया । हार्दिक इच्छा है कि भविष्य में भी आपकी सशक्त लेखनी के माध्यम से हम भारतीय व भारतीय मूल के पाठक राष्ट्र व समाज के ज्वलंत विषयों के प्रति सजग होंगे। साथ ही प्रेरित होंगे अपनी दायित्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिये।
शुभकामनाओं सहित
आपका
गजेश धारीवाल
मस्कत, ओमान

समीक्षा
रुबाईयात
शायर - सुरेन्द्र भुटानी , पोलिश
रूपान्तर -
मानुष शिज़ोवस्की

सुरेन्द्र भुटानी की ' रुबाईयात' ने एक पंथ दो काज सिद्ध किये हैं। प्रथम तो यह संग्रह उसकी उर्दू शायरी की शृंखला में एक नई कड़ी जोड़ती है। साथ ही हर रुबाई के सम्मुख उसका पोलिश रूपान्तर प्रस्तुत करके शायर ने अपना संदेश अपने रिहायिशी देश- पोलैंड के कविता प्रेमियों तक पहुंचाया है।

उर्दू समझने वालों के लिए यह कृति , एक रोचक एवं महत्वपूर्ण देन है । यूँ तो उर्दू का हर शायर ' दर्द' के विषय पर बहुत कुछ लिख गया है लेकिन सुरेन्द्र ने उसे अजनबी परिवेश की, प्रवास की टीस से जोड़कर उर्दू शायरी को एक नई पभिाषा , एक नया अंदाज़ दिया है :-

तन्हा रहा अधुरा रहा, उठता धुँआ रहा
हर पल जिन्दगी में बेकसी- बेअरमाँ रहा
मिटी मंज़िल किस्सा -ए - तलाशे नाकामिल है
बस ख़लाओं में हर दम ऐसे कारवाँ रहा

इसी बेकसी के रंग उनकी प्रेम - परक रुबाइयों में भी नज़र आते हैं:

रिसते ज़ख़्मों पे मरहम की तमन्ना है
ज़ीस्त के लिये हमदम की तमन्ना है
हर पल सवालिया सलीन लटकते हैं
हाँ आज दस्ते - मरियम की तमन्ना है

ग़मे - जानाँ से ग़मे - दौराँ तक का सफ़र भी शायर बहुत कुछ नये रास्तों से तय करता है:

ये रहनुमाओं की बस्ती है संभल के चल
जीवन से भी मौत सस्ती है संभल के चल
अहले सियासत के परचम खून से धुले हैं
अजब यहाँ बुतपरस्ती है संभल के चल

भाषा के दृष्टिकोण से भी काव्यमय प्रयोग का पहलू भी इस रुबाई - संग्रह की एक विशेषता है । जगह - जगह नये अंदाज़ , नये मुहावरों में कही बात बिजली कौंध की तरह चौंका देती है। मसलन -

मेरे पास क्यों खड़ा रहा अधूरा चाँद
दिल ही में क्यों अड़ा रहा अधूरा चाँद

या फिर- पलकों की छाँव में गीत कुछ लिखे।

कुछ लोग इन रचनाओं को ' वज़न' और ' बहर' के फीतों से नापेंगे। मैं नहीं समझता कि हर तुकान्त कविता के लिए यह पापदंण्ड ठीक है। सुरेन्द्र भुटानी की रुबाइयों में जो ताज़गी है , जो अचानकत्व है , वह काफी हद तक उनके मिसरों के अपारम्परिक गठन पर भी निर्भर है।

एक और बात ! ' रुबाइयात का संबरण शायर की इंसानियत और संवेनशीलता से जुड़ा हुआ है। यूँ तो कलियुग में पुराने प्रेम रददी की टोकरी में फेंक दिये जाते हैं। सुरेन्द्र ने जिस ढंग से अपनी पहली प्रेमिका को मरणोपरान्त काव्यात्मक श्रद्धाँजलि दी है वह मर्मदर्शी ही नहीं, उसके हृदय की विशालता को दर्शाती है। कविता के सजीव होने में व्यक्तित्व की पृष्ठभूमि भी महत्व रखती है। रुबाइयों का पोलिश भाषा में रूपान्तर मूल कविता की तुलना में कितना सशक्त है , यह तो इस समीक्षक के भाषा - ज्ञान से परे है। परन्तु इतना अवश्य कहा जा सकता है कि उर्दू शायरी को मध्यवर्तीय यूरोप के एक बड़े देश तक पहुंचाने का यह प्रयत्न सराहनीय है। भारतीय साहित्य के दाायरे को विश्व- व्यापी बनाने में इसका योगदान रहेगा , यह मेरा विश्वास है।

समीक्षक:-
संतोष कुमार खरे

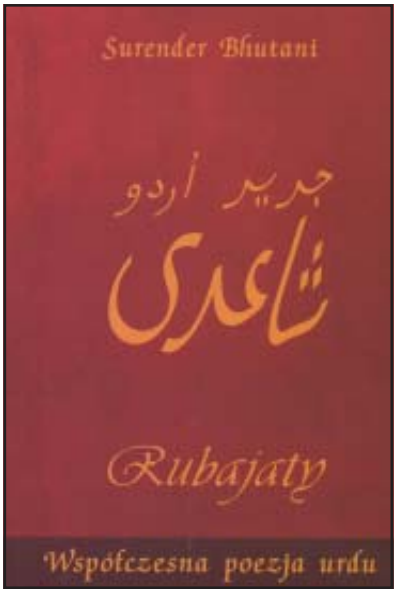

■ चित्रकाव्य-कार्यशाला

नांव में लम्बी पूंछ की जीत हुई
और पहना जीत का हार
वो पूंछ वाला खुशिओं से नाचा
बजे शादियाने ढोल
देखो, देखो, क्या कारनामे करेगा
होगा कुर्सीपर विराजमान
वास्तीराम घई, टोरांटो, कनाडा

+

देखिये कितना सुहाना समा
प्रत्येक श्रोता मंत्र मुग्ध बेठा
कर्ण प्रिय संगीत वादन
नाटय् प्रस्तुत हो रहा
मनोरंजन पाकर जन मन
हर्ष व्याप्त हो रहा
कला और संस्कृति संगम
विस्तार अनुपम हो रहा
राज महेश्वरी, टोरांटो, कनाडा

कहते, बन्दर नकल में तेज, उससे भी तेज है इन्सान
अपने पितरों के गुण-दोष कुछ तो पाती है सन्तान
योग ऋषी पतांजलि ने जितने योगासन अपनायें
पशु-पक्षियों की आकृति को, देख कर ही है बनाये
जिससे जो आसब अपनाया, दिया उसीको वैसा नाम
अब तो सब लोग जान गये, जबसे आये है बाबाराम
नृत्यकला भी तो मानव ने, पशु-पक्षियों से ही सीखी
सूर्य नृत्य, नाग नृत्य करे, उनके जैसे देखा देखी
किसी बरात में भांगडा करते, जब जब जाते है बराती
यह तसबीर उसी दृश्य की, हू बहू है याद दिलाती
हर इक अपनी धुन में नाचे, कोई कैसे, कोई वैसे
पूछ लगी होती मानव को, वह भी नंगते? तब कुछ वैसे
भांग चबाकर कभी बन्दर, जंगल में उत्पात मचाले
आजकल के भांगडे जैसा तब वे दृश्य बन थे जाते
उन्हें देखकर हम भी शायद, सीख गये है करना भंगडा
बदल गया है नशा भांग का, नया नशा बन गई है मदिरा
सुरेन्द्र पाठक, मिसिसागा, कॅनडा

+

जीवन नाव में तीन और छै का निभता नहीं है नाता
खींचातानी - अहंकार, खुशियों को चट कर जाता।।
जो चाहो तुम सुख से जीना, जियो और जीने दो।
ढोल बजाओ, मौज मनाओ, सबको गले मिलने दो।।
जीवन का बस यही सार है, सभी मिटा कर दूरी।
एक हो जाओ, रहो प्रेम से, इच्छाएँ हों पूरी।।
डा. जनक खन्ना (मिसिसागा, कॅनडा)

+

मानव क्यों दानव बना, घर घर आग लगाए।
ढोल, मजीर बजवा कर, डौंडी भी पिटवाए।
नकल न कर हनुमान की, वह थे श्री राम के मीत।
असत्य को भी मात दी, हुई सत्य की जीत।
उषा देव, अमेरिका

+

डारविन का कथन है, मानव बानर की सन्तान।
आदिवासी उस कथन का, नाट्य् द्वारा करते सम्मान।
महेन्द्र कुमार देव (अमेरिका)

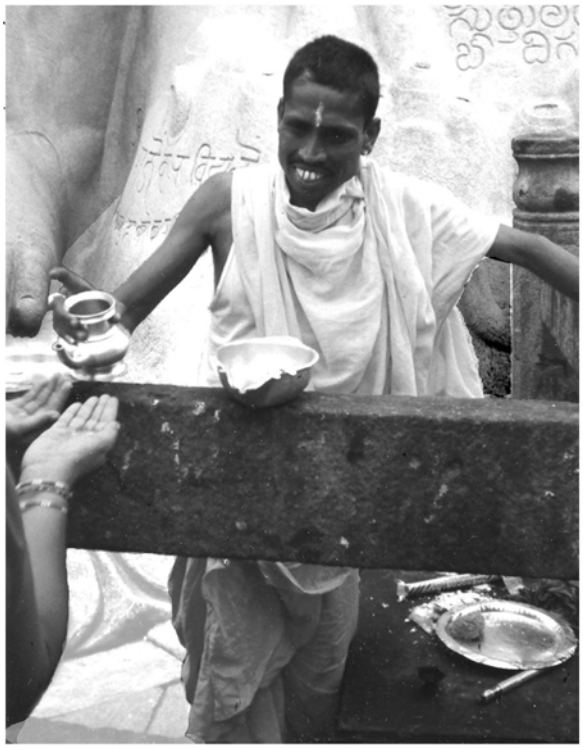

■ चित्रकाव्य-कोशाला

इस चित्र को देखकर आपके मन में जो भी भाव आयें उन्हें अधिक से अधिक छः पंक्तियों के अन्दर व्यक्त करके भेजें।

Indo-Canada

Income Tax Services Ltd.

Income Tax / Book keeping Experts
Management Consultants

☎ 905-264-9599

905-264-9587

15 Ayton Crescent, Woodbridge, Ontario L4L 7H8

'मुट्ठी भर धूप' : समीक्षा

श्रीनाथ प्रसाद द्विवेदी (बैकुअर कैनेडा)

'मुट्ठी भर धूप' रेखा मैत्र का काव्य संकलन है जिसे वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली ने प्रकाशित किया है । इस संकलन में उनकी 78 कविताएँ संकलित हैं। काव्य पुस्तक का शीर्षक रेखा की एक कविता पर आधारित है। ' मुट्ठी ' शब्द वैयक्तिता की परिधि की ओर संकेत करता सा लगता है जबकि ' धूप ' शब्द जीवन के उजास प्रसंगों और प्रकृति के तादात्मय का अहसास दिलाता है। इसके अलावा यह शब्द ' धूप' - ज्ञान , चेतना , अनुराग , करुणा और विहव्लता का भी प्रतीक है जिसकी अनुभूति को बटोरने की मात्र पहल है - मुट्ठी में बन्द करने की प्रक्रिया।इस तरह शब्द बिंब में ढलता जाता है।यह कहना अनुचित न होगा कि शीर्षक में कविता अथवा कविता में शीर्षक समाया है।रेखा की कविताओं के विश्लेषण से यह सत्य उभरता है कि मूलत: उनकी कविता वाहय से अंतर की सूक्ष्म लेकिन सरल यात्रा है। ऐसी यात्रा की झलक हमें कतिपय छायावादी तथा संत कवियों की रचनाओं में मिल जायेगी किन्तु रेखा अपनी रचनाओं को दार्शनिक गूढ़ता तथा रूक्षता से साफ बचा लेती हैं चाहे वह कविता - 'परिणति', ' प्रयोग' या 'आनन्द' हो और वे अपनी बात,अपने अनोखे अंदाज़ में, इस तरह कह जाती हैं कि उसका मानवीय रागात्मक रूप बिखरता नहीं। या कहें कि जब वे अपने अंतर में झाँकती हैं तब उस क्रिया में उनकी तल्लीनता स्पष्टत: उभरती है जो शायद उनकी काव्य की भावभूमि है। ये सच है कि अपने अनुभवों की कंकड़ियां समेटते हुये रेखा उनके खुरदुरेपन से अनभिज्ञ नहीं दिखतीं।

वे कहती हैं - अनुभूति तो होती ही गूंगे का गुड़ है।

हाँ इन्हें छुआ जा सकता है। यानी इनके शरीर होता है।

वाणी नहीं होती (अपरिचित अनुभूति) किन्तु फिर भी कुछ लमहों के लिए उनका रोमांचित हो उठना स्वाभिव ही लगता है।

वस्तुत: रेखा की यह स्वीकारोक्ति मुझमें - तुममें भीतर , बहुत भीतर , घटनाएँ , दुर्घटनाएँ , कब्रिस्तान की लाशों सी दबी पड़ी हैं। वही कविता कहानी की , सूरत धरती है। शव घटनाओं के हमें सोचने के लिए विवश करती हैकि जीवन के सागरीय तट पर घटनाओं की सीपियों का चयन आसान नहीं फिर भी रेखा जी की मन पसंदी का परिचय हमें उनकी रचनाओं से किसी सीमा तक मिल ही जाता है। उनकी कविता प्रवाहमान निर्झरणी की तरह आकस्मिक मोड़ लेकर कब अप्रत्याशित दिशा और गति अख्तियार कर लेगी यह समझना कभी - कभी मुश्किल हो जाता है। ऐसा अहसास उनकी कविताएँ - ' विष कन्या', अनुभूति 'अयवा ' मुर्दा' पढ़कर होता है। वैसे सामान्य को अविस्मरणीय बना देने की कला में रेखा प्रवीन हैं। उनकी विशिष्टता शब्दों के चमत्कारिक प्रयोग का प्रतिफल नहीं अपितु शिल्पगत है। नि:सन्देह उनका साहित्यअनुभवगम्य है इसलिए संग्रह की कवितायें हृदय की अतुल गहराइयों में उतरने की क्षमता रखती हैं।

रेखा की कविता'रास्ते' के पढ़ने से ऐसा लगता है कि वे वक्त और हालात से समझौता करने की कोशिश नहीं अपितु फौलादी इरादों से ' अपने खुद ही गढ़ने होंगे,की उदघोषणा करती हैं जो उनकी संकल्पवृत्ति और आत्म - विश्वास का परिचायक है। लगता है यह महाकवि तुलसीदास के ' कत विधि सृजी नारि जग माही। पराधीन सपनेहु सुख नाही।' धारणा को उनकी चुनौती है। यही नहीं ' हाँ, मुझे (अपने पराये) सभी के खिलाफ खड़ा जरूर होना पड़ा। (अपने पराये)इससे ये बात साफ जाहिर है कि रेखा जी के हाथ भीख या सहायता के लिये फैलते नहीं बल्कि उर्जा संचित करती हुई मुट्ठियाँ हैं जो सर्घष के लिये तत्पर नज़र आती हैं। इसमें शक नहीं कि उनकी कविताओं में संयत विरोध के भाव हैं विद्रोहात्मकता अथवा आक्रामकता के नहीं।

इनकी कविताओं - ' मुकुट' , ' सूरजमुखी' , 'फासले' और ' गेंद' आदि को पढ़कर ऐसा आभासित होता है कि मानवीय जीवन का रास्ता सहज तथा कंटकविहीन नहीं। लोगों की उपेक्षा , तिरस्कार और समूची अस्मिता को झुठलाने वाले व्यवहार से किसी भी व्यक्ति का पीड़ित तथा दुखी हो जाना लाजिमी है। किन्तु आम लोगों से भिन्न कवयित्री सहानुभूति समेटने का प्रयास नहीं करती और न ज़ख्मों की नुमाइश ही। रेखा अपनी पीड़ा को भली भाँति पहचानती हैं और इसीलिए भी कुंठा , हताशा और संत्रास को झटक देती हैं पालती नहीं और चल पड़ती हैं कोमल सपनों को सँवारने।

सागर का बिंब रेखा के अंतर में जैसे पालथी मारकर बैठा है इसीलिये उनकी कविताओं में घूम - फिर कर दिख जाता है चाहे वह कविता 'निशान' , ' नियति', ' मूँगा द्वीप ', ' प्यार तुम्हारा', अथवा 'ताड़ के पेड़' हो। वैसे सागर का बिंब बहुआयामी अर्थ सजोये है जो मानवीय दुखों, दर्दों , संघर्षों और विसंगतियों की गम्भीरता , गहनता और विस्तार के संदर्भों में अलग- अलग ढंग से रूपायित हुआ है , जिसमें प्रयोग की विभिन्नता परिलक्षित होती है।इस आलोच्य पुस्तक में स्थानीय रंगों से रंगे अनेक चित्र हैं जैसे ' लास एंजेल्स', ' स्मोकी माउन्टेन', ' शिकागो', 'न्यूयार्क एक गुलदस्ता' , 'मूँगा द्वीप' और 'लंदन का हवाई अड्डा' आदि जिन्हें पढ़कर पाठक के जहन में इन स्थलों के चित्र उभरते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि रचनाकार की दृष्टि महानगरों की गगनचुम्बी इमारतों ,विशालकाय माल्स, पर्वत श्रंखलाओं और रेतीले सागरीय

तटों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि उनकी गहराइयों में उतरकर मानवीय संदर्भों से जोड़ती है, परिणाम स्वरूप कवितायें फोटोग्राफी के चौखटे से निकलकर अपना भावात्मक रूप ग्रहण करने में समर्थ दिखती हैं।
' एकवेरियम' कविता में दो मछलियाँ अपने प्रतिबिंब को चूमती हैं यह परोक्ष रूप से मुग्धा नायिका की प्रकृति की कलात्मक अभिव्यक्ति है , जो सराहनीय है। ' भरत मिलाप' में रेखा का यह कहना - ' तुमरे देह की सुगंध में - मेरे नन्हें की सुगंध आ मिली थी। उस भरत मिलाप को - मेरा शत - शत नमन ', कविता देह की सुगंध तक ही सीमित है जिसमें यौन मांसलता की विकृति नहीं। फलत: सामाजिक मर्यादा की गाँठ खुलती नहीं और कविता शारीरिक न होकर मानसिक बनी रहती है।
आशीर्वाद' तथा ' विष कन्या' में मिथकों का नया रूप अपनी पूरी ताजगी के साथ उभरकर आया है। ' मौत किश्तों में' , 'भाभी के लिये', 'एक गुलज़ार' और एक तस्वीर अमिताभ दा की ' ऐसी कविताएँ हैं जो व्यक्तिगत संबधों की दस्तावेज़ हैं।

चटखते रिश्तों में नेह की तिक्तता है, कडुवाहट है तो कहीं स्नेहिल अनुराग का मधुर स्पर्श। कुल मिलाकर ये रचनायें जीवन की सच्चाई को उजागर करती हैं। ' ख्वाब' कविता अन्य कविताओं से हटकर अपना विशिष्ट स्थान बनाने में समर्थ है क्योंकि इसमें जनकल्याण का शंखनाद है। रेखा कहती हैं - ' प्रभु मुझे जो दिया सो दिया - झोपड़ी में बसती लड़कियों को- पक्के रंग ही देना।

ताकि तुम्हें मैं माफ कर सकूँ, इन पंक्तियों में ' सर्वे भवन्तु सुखीन: ' शास्त्रोक्ति की अनुगूजें हैं । ये कहना अनुचित न होगा कि रेखा की निजी अनुभूतियाँ भारतीय नारी की द्वंदात्मकता का कच्चा चिट्ठा प्रस्तुत करती हैं। मुझे इनकी रचनाओं में भारतीय कथाशिल्पी ममता कालिया की कहानियों में वर्णित दाम्पत्य जीवन की परछाइयाँ परलक्षित होती है। मेरे विचार से यदि इन कविताओं को संस्मरणात्मक ढंग से एक धागे में पिरो दिया जाय तो सम्भवत: डोंगरी की हस्ताक्षर पद्मा सचदेव की ' बूंद बावड़ी ' का ये लघु रूप बन सकती है

मेरे विचार से यदि इन कविताओं को संस्मरणात्मक ढंग से एक धागे में पिरो दिया जाय तो सम्भवत: डोंगरी की हस्ताक्षर पद्मा सचदेव की ' बूंद बावड़ी ' का ये लघु रूप बन सकती है। रेखा की कविताओं में प्रेम के गहरे एवम् चटकीले बिखरे रंगों का अहसास

हमें उनकी कविताओं - ' प्रत्याशा' , ' यात्रा' ,' फासले', ' स्वीकृति ' और 'टूटे रिश्ते' के विवेचन से मिलता है जिसका आधार उत्सर्ग , त्याग, निष्काम और निष्छलता है। वास्तव में प्यार की यह उदात्तता भोगवादी सामाजिक प्राणियों के लिये तो अव्यवहारिक ही लगेगी। यह तो मानना ही होगा कि रेखा जी की कविताओं में वर्ग चेतना, आतंकवाद, दलितवाद, और बाज़ारवाद आदि विचारों की खोजकरना बेमानी होगी। वास्तव में इनकी कविताएँ बढ़ती हुई संवेदनहीनता के बदले संवेदनशीलता की पुर्नस्थापना करती हैं। यह अतिरेक नहीं कि रेखा पाठकों में बौद्धिकता अथवा आध्यात्मिकता जगाना नहीं चाहतीं बल्कि उनकी मूक -

- गूंगी - बहरी संवेदनाओं को अपने भावों के मृदुल स्पर्श से तरंगित करना जानती हैं। मेरा विश्वास है कि इस संकलन में रूपायित संवेदनाओं के सूक्ष्म कोलाजों , बिंबों और संकेतों से संवेदनशील पाठक अवश्य प्रभावित होंगे लेकिन जिन्हें संवेदन का कहकरा नहीं आता उन्हें कविताओं में प्रयोग किये गये प्रतीकों तथा बिंबों को समझने में मुश्किलें तो आयेंगी ही।
रेखा की कविताओं का सम्मोहन है उनकीअभिव्यक्ति की ईमानदारी और उसका बेलौसपन। वे अपने जीवन के अछूते प्रसंगों को भी बिना लाग- लपेट के कह जाती हैं। इस सिलसिले में मुझे बच्चन जी ये पंक्तियाँ बरबस याद आती हैं - ' यदि छुपाना जानता तो, जग मुझे साधू समझता'। रेखा की कविताओं में भावात्मक सौन्दर्य के साथ कलात्मक का बेहतरीन समन्वय है । उन्होंने बड़े ही सार्थ , मौलिक और सफल नये प्रयोग किये हैं। उदाहरण के बतौर इनका उल्लेख किया जा सकता है - ' ये कलम है या सक्शन पम्प? जिता आस पास से खींचता है इन कागज़ों पर बिखेरता जाता है ' (अभी तो बस इतना ही)'

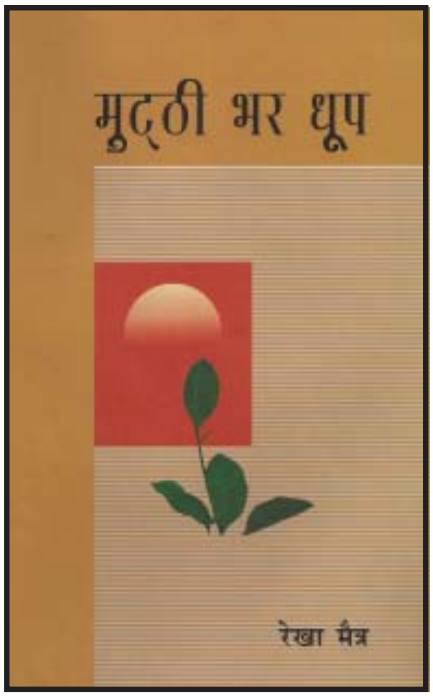

'आजकल मेरे आसपास - तुम्हारी उपस्थिति - बारूद के गोले सी होती है ! (बारूद)
' उदासी का भ्रूण - इन नौ महीनों - मेरे भीतर पलता रहा (भ्रूण)' यादों के चेहरे पर- झुर्रियाँ नहीं पड़ती कभी' (ठहरी यादे), और शब्दों के नीचे - शताब्दियाँ दबी पड़ी होती हैं! (ढीठ दिन)इसके अलावा ' गाँव की साझ' , ' डेण्डेलाइन', ' अंडमान द्वीप की शाम' और ' बदलाव ' ऐसी कविताएँ हैं। को जीवंत बना देता है। यही कारण है ये कविताएँ पठनीय बन सकी हैं।

जिनमें मानवीयकरण निहायत खूबसूरती के साथ अंकित किया गया है। रेखा की काव्य विधा है- अतुकांत कविता (नज़्म) जिनमें शब्दों की नहीं भावों की गीत्मकता है। रेखा की रचनाओं में शब्दों का फिज़ूलखर्च नहीं। वे शब्दों का उपयोग इस सलीके से करती हैं कि उनमें शब्दों का सतहीपन घुसपैठ नहीं कर पाता और अर्थ की प्रभावोत्पादकता सलामत रहती है। सरल तथा बोधगम्य शब्दों का उनकाचयन अभिव्यक्ति

उनकी अनुभूतियां उषा की रश्मियों सा फैलन , कनक की बालियों की तरह महकना और नयी कोपलों सा मुस्काना चाहती हैं और उसके लिये पाठकों की सहृदयता की अपेक्षा तो स्यात रचनाकार को रहेगी ही।

एकल मूवमेन्ट का ओमान में पदार्पण

मस्कत में 15 अप्रैल 2008 को भारतीय दूतावास के सभागर में **एकल विद्यालय** फाउन्डेशन का बहुत उत्साहजनक कार्यक्रम हुआ। जिसमें ओमान में बसे लगभग 150 विशिष्ट प्रवासी भारतीयों ने भाग लिया। जनप्रिय शेख **कन्कसी खीम जी की** अध्यक्षता में हुये इस आयोजन में मस्कत उद्योग , व्यवसाय व अन्य क्षेत्रों की जानी मानी हस्तियां उपस्थित रहीं।

इस कार्यक्रम में भाग लेने के लिए एकल विद्यालय फाउन्डेशन के अध्यक्ष श्री सुभाष चन्द्रा (चेयरमैन, ज़ी नेट वर्कस लि. एवं ईसल ग्रूप), एकल विद्यालय फाउन्डेशन के मैनजिग ट्रस्टी, मुम्बई के उद्योगपति श्री प्रदीप गोयल तथा एकल की सहयोगी संस्था फ्रन्डस आफ ट्राइवल सोसाइटी की मुम्बई शाखा के अध्यक्ष श्री जीतू भाई भंसाली विशेष रूप से पधारे।

एकल मूवमेन्ट का परिचय श्री प्रदीप गोयल ने ध्वनि व चित्रों के माध्यम से बहुत प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया। श्री सुभाष चन्द्रा ने एकल को राष्ट्रीय यज्ञ बताते हुये अपने अति भावुक , रोचक व अंतरंग अनुभव बाँटे। बाद में हुआ प्रश्नोत्तर सत्र बहुत ही प्रेरणात्मक और विचारोतेजक रहा। एकल विद्यालय , यानि , सुदूर बनवासी या विकास से अछूते ग्रामीण क्षेत्र में एक अध्यापक , एक गाँव , एक कक्षा का व्यवहारिक ज्ञान बांटना, समाज को सजग व सशक्त करता विद्यालय।

चित्र में दीप प्रज्वलित करते हुये ओमान के आदरणीय शेख कन्कसी खीम जी , साथ में श्री अनिल वढेर, श्री किरन अशर और लेखक गजेश धारीवाल जी।

चित्र में - दायें से बायें सर्व श्री प्रदीप गोयल, जीतू भाई भंसाली , अनिल वढेर , श्री सुभाष चन्द्रा , भारत के राजदूत अनिल वाधवा और आदरणीय शेख कन्कसी खीम जी।

राष्ट्रीय उत्थान व सामाजिक परिवर्तन के इस प्रयास को ओमान में भारत के राजदूत श्री अनिल वाधवा का मार्गदर्शन व पूर्ण सहयोग प्रारम्भ से ही रहा। कार्यक्रम की व्यवस्था में दूतावास में कार्यरत श्रीमती संगीता दुबे व श्री हरीश चन्द्र ने विशेष सहायता की।

इस कार्यक्रम के माध्यम से अब तक 250 एकल विद्यालयों के लिए सहयोग प्राप्त हो चुका है और यह संख्या शनैः शनैः काफी बढ़ेगी ऐसी प्रबल संभावनाएँ हैं। इस कार्यक्रम के सफल आयोजन व एकल की विद्या भागीरथी को मस्कत लाने में अनिल वाढेर, किशोर मेहता , व चन्द्रकान्त चोथा, प्रभाकर तिजारे का सतत प्रयास रहा ।

गजेश धारीवाल
मस्कत (ओमान)

हिन्दी चेतना के मंच पर एक यादगार हास्य कवि सम्मेलन

25 अप्रैल को शिंगार बैन्क्युएट हाल, ब्राम्पटन, कैनेडा में रंगारंग हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन ' हिन्दी चेतना'के सौजन्य से अन्य कई संस्थाओं के मिलाप से पूर्ण हुआ। रंगीन व रोचक शाम के इस कवि सम्मेलन में तीन महा कवियों ने भाग लिया जो अपने - अपने क्षेत्र में महारथी हैं। वीर व ओज के धनी श्री गजेन्द्र सोलंकी, हास्य रस के राजा डा. सुनील जोगी एवं व्यंग्य के प्रजापति डा. सुरेश अवस्थी की रचनाएँ , छन्द , विषय , व्यक्तिगत , सामाजिक व राजनीतिक प्रसंग (सरल व जटिल) आदि व्यक्त करने की विनोद - कला -स्थिति और दिशा अलग थी मगर तीनों महाकवि अपने - अपने कवि कर्म के प्रति अत्यन्त गंभीर थे। उनके उद्देश्यों में निष्ठा, लगन और उत्तरदायित्व का भाव साफ झलक रहा था और उनकी गायकी मधुर थी। उनकी भावनाएं संयत और सुन्दर होने के साथ - साथ उनकी रचनाएँ , छन्द , तुक, अलंकार स्वाभाविक थे। सबसे बड़ी बात तो यह थी कि तीनों महा कवियों में गुणो और विशेषताओं का अनोखा संगम था। जब भी वो मंच पर आये तो ऐसा लगा जैसे कलपना के पँख खुल गये हों और उन्हें आसमान पर विचरण करने का मौका मिल गया हो। या फिर यूँ कहें कि मानों काव्य सागर में हर डुबकी के साथ मुस्कराती सीप से हंसी के मोती आसानी से लाकर सौंपते रहे। कभी करुणा ,कभी वीर, कभी श्रंगार रस और हर पल हास्य रस से सभी श्रोताओं को भिगोते रहे।

सुरेश जी,सुनील जी, गजेन्द्र सोलंकी जी नि:सन्देह वाक- सिद्ध तो हैं ही मगर तीनों असीमित वाक शिल्पी भी हैं। उनका हर शब्द , हर तुक , हर अनुभूति कभी रोचक , कभी नरम , कभी पैने व्यंग्य से सभी के दिलों को बहलाती रही और हर पल सभी श्रोतागण ठहाके लगाते हुये लोट - पोट होते रहे और उनकी काव्य कला को करतल ध्वनि से सराहते रहे।

तीनों कवि एक दूसरे के मुकाबले अपने - अपने विकास क्रम में अधिक परिपक्व और मझे हुये सामने आये। कवि सम्मेलन की यह रोचक शाम एक अदभुत यादगार बन कर रह गई। तीनों कवियों की कैनेडा की पहली यात्रा सफल हो गई।

सरोज सोनी

टोरंटो में हास्य कवि, गजेन्द्र सोलंकी, डा. सुनील जोगी व डा. सुरेश अवस्थी के साथ हिन्दी चेतना के संपादक श्याम त्रिपाठी

महाकवि प्रो. हरि शंकर आदेश के निवास स्थान हास्य कवि गजेन्द्र सोलंकी, डा. सुनील जोगी, डा. सुरेश अवस्थी व श्याम त्रिपाठी

मंच पर कवि सुनील जोगी को तिलक सम्मान करते हुये
श्रीमती सरोज सोनी और श्री सुमन घई

हास्य कवि डा. सुरेश अवस्थी को तिलक व शाल देते हुये श्रीमती रंजना शर्मा व श्री राज महेश्वरी

मंच पर कवि गजेन्द्र सोलंकी को तिलक लगाती हुई
श्रीमती अरुणा भटनागर

हिंदी चेतना के मंच पर हास्य कवियों का आनन्द लेते हुये श्रोताओं की एक झलक।

'उत्तरी अमेरिका के हिन्दी साहित्यकार' का विमोचन

4 जून 2008 , टोरंटो के हिन्दी समाज के लिए एक अविस्मरणीय दिवस रहेगा। इसी दिन श्री श्रीनाथ द्विवेदी के विशेष अनुरोध पर, डा. शिवनन्दन सिंह यादव तथा श्रीमती डा. विमला यादव के निवास स्थान पर एक विशेष गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस गोष्ठी का उद्देश्य था - श्रीनाथ द्विवेदी जी द्वारा सम्पादित काव्य-संकलन " उत्तरी अमेरिका के हिन्दी साहित्यकार " का विमोचन ।

इस काव्य संकलन की विशेषता यह है कि इसमें उत्तरी अमेरिका के हिन्दी रचनाकारों की रचनाओं का अत्यन्त सुन्दर चयन किया गया है। पुस्तक की प्रस्तुति का विषय वस्तु दोनों ही दृष्टियों से द्विवेदी जी ने अत्यन्त सराहनीय कार्य किया है और उसके लिए वे बधाई के पात्र हैं। यह उल्लेखनीय है कि श्रीनाथ द्विवेदी जी ने 1988 में कैनेडा के हिन्दी कवियों का सर्वप्रथम संकलन ' कैनेडियन काव्यधारा' का संपादन किया था, जिसमें देश के अनेक शहरों के 17 कवियों की चुनी हुई कविताओं के साथ रचनाकारों का परिचय भी सम्मिलत था। इसमें सभी कविताओं का अंग्रेजी भाषा में अनुवाद भी दिया गया था।

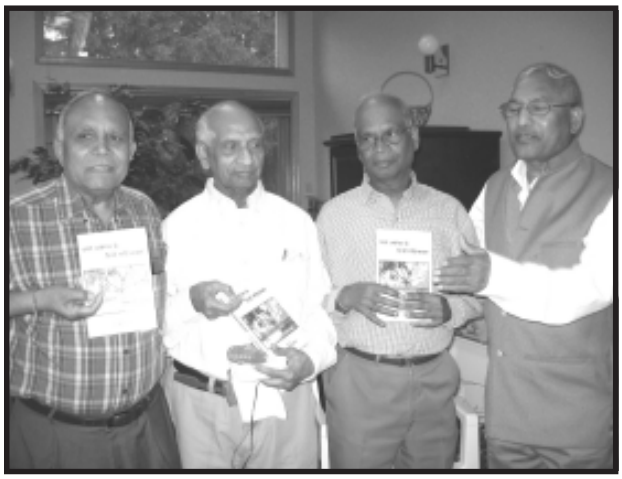

4 जून की गोष्ठी में श्रीनाथ जी ने टोरंटो के स्थानीय कवि - कवयित्रियों के लिए काव्य संकलन भेंट किया। उनके अनुरोध पर सभी उपस्थित कवियों ने काव्यपाठ भी किया। द्विवेदी जी ने भी अपने मधुर स्वर में गीत प्रस्तुत किये। उन्होंने हिन्दी गीतों में कुछ नये प्रयोग भी किये हैं जिन्हें श्रोताओं ने करतल ध्वनि से सराहा। इस गोष्ठी में भाग लेने वाले साहित्यकारों के नाम हैं।- डा. शिवनंदन सिंह यादव , डा. भारतेन्दु श्रीवास्तव, श्री भगवत शरण श्रीवास्तव, श्री श्याम त्रिपाठी, श्रीमती दीप्तिकुमार , श्रीमती शैल शर्मा तथा श्रीमती आशा बर्मन।

गोष्ठी के आयेजन के उपरान्त श्रीमती यादव द्वारा आयोजित सुस्वाद भोजन के साथ गोष्ठी का समापन हुआ।

'अभिमन्यु विजयी होगा'

अभिनव शुक्ला

सच है वातावरण विषैला है भीषण भयकारी है,
चीर लूटने को आतुर हर शासक हर अधिकारी है,
सच है विघटनकारी पुष्पों से लथपथ हर क्यारी है,
ज़हर घोलने का प्रकरम निरंतर जारी है,
पर छोटा सा सुमन भी वायु को सुरभित कर देता है,
एक ज़रा सा दीपक सारा अंधियारा हर लेता है,
एक बूँद जल की जीवन का गान मधुर कर देती है,
एक प्रार्थना सच्चे मन की पुण्य प्रचुर कर देती है,
छोटी सी मुस्कान बदल देती है चेहरे की रेखा,
कोयल की एक तान पे पूरा नंदन वन हँसते देखा,
समर नहीं होता है बम से, तोपों, टैंक धमाकों से,
युद्ध लड़े जाते हैं मन के भीतर के विश्वासों से,
चक्रव्यूह के भेद सीखकर परिचित हो मक्कारी से,
अभिमन्यु बनना होगा हमको पूरी तैयारी से,
नित्य जूझना होगा अंधियारे की काली चालों से,
हमें संभलना होगा पग-पग बिखरे मायाजालों से,
कालचक्र के न्यायालय का निर्णय पुण्यमयी होगा,
चक्रव्यूह टूटेंगे रण में अभिमन्यु विजयी होगा,
वायु सुगंधित चंदन लेकर दिशा- दिशा में लहरेगी,
अभिमानों के अचल दुर्ग पर ध्वजा धर्म की फहरेगी।

'येल यूनिवर्सिटी, कनैक्टिकट में प्रथम हिन्दी गोष्ठी सम्मेलन'

डा. राधा गुप्ता, हिन्दी प्रो. वेसलियन यूनिवर्सिटी, कनैक्टिक

4 एवं 5 अप्रैल 2008 को येल यूनिवर्सिटी, कनैक्टिकट में एक भव्य हिन्दी गोष्ठी सम्मेलन हिन्दी प्रो. श्रीमती सीमा खुराना की अध्यक्षता में सफलतापूर्ण सम्पन्न हुआ , जिसके मुख्य अतिथि थे टैक्सस विश्वविद्यालय , आस्टिन के हिन्दी प्रो. डा. रूपर्ट स्नेल , जिनके द्वारा लिखी गई कई हिन्दी पाठ्य पुस्तकें (टीच योर सेल्फ हिन्दी) कई स्तरों में विश्व के लगभग सभी विश्वविद्यालयों में पढ़ाई जा रही हैं।

4 अप्रैल, 2008 को सायं 6 बजे कॉमन रूम ल्यूस हाल में प्रो. रूपर्ट स्नेल एवं येल यूनिवर्सिटी के एलीमेंट्री एवं इण्टरमीडियट , हिन्दी के छात्र तथा वेसलियन विश्वविद्यालय से आये कुछ छात्रों के मध्य वार्तलाप हुई। छात्रों ने रू-ब-रू प्रो. रूपर्ट स्नेल से कई प्रश्न पूछे,जिनके उत्तर उन्होंने बड़ी सहजता, सूक्षमता एवं कुशाग्रता से दिये। छात्रों द्वारा पूछे गये कुछ प्रश्न इस प्रकार हैं.....

छात्र: हम हिन्दी सीखते तो हैं लेकिन यदि बीच में कुछ दिनों का अन्तराल (गैप) पड़ जाये तो हम हिन्दी भूल जाते हैं , ऐसा क्यों होता है?

प्रो. रूपर्ट : उसे फिर से पढ़िये , बार - बार पुन:वृत्ति (रिपीट) करने से आपकी हिन्दी अच्छी हो जायेगी।

छात्र: हिन्दी भाषा सीख पाना इतना कठिन क्यों है?

प्रो. रूपर्ट : क्योंकि हिन्दी एक अलग तरह की भाषा है जिसका व्याकरण बड़ा जटिल है, और इसमें अन्य भाषाओं की अपेक्षा स्वर और व्यंजन भी संख्या में अधिक हैं।

छात्र: हिन्दी पढ़ते समय हम यह कैसे जानें कि कौन सा शब्द हिन्दी भाषा का है और कौन सा शब्द उर्दू भाषा का?

प्रो.रूपर्ट: हिन्दी भाषा, हिन्दी - उर्दू शब्दों का समिश्रण है। इसमें कुछ फारसी शब्दों का भी समावेश हैअत: आप हर शब्द को हिन्दी समझ कर ही पढ़ें। ' मित्र ' हिन्दी शब्द है जबकि दोस्त उर्दू , दोनों ही हिन्दी भाषा में समाहित हैं।

छात्र: आपकी कहानी के अनुसार क्या वास्तव में आपने भारत में कभी अपने से बड़े को ' तुम' कहकर पुकारा था?

प्रो. रूपर्ट : हाँ, वृन्दावन में राधा - कृष्ण मंदिर में मैंने एक साधु से 'तुम' लहजे में बात की थी।

छात्र: यहाँ हम हिन्दी सीख रहे हैं और भारत में नान हिन्दी स्पीकिंग राज्यों में रिक्शेवाले हमारी अंग्रेजी समझते हैं, पर हिन्दी नहीं समझते, फिर हम हिन्दी क्यों सीख रहे हैं?

प्रो. रूपर्ट : मुस्कराते हुये .... आज पूरे विश्व में अंग्रेजी भाषा का प्रभुत्व है। वैसे भारत के हर प्रान्त में लोग स्कूलों में एक अनिवार्य भाषा के रूप में या दूसरी भाषा के रूप में हिन्दी सीख रहे हैं। हिन्दी मूवियों के माध्यम से भी लोग हिन्दी सीख रहे हैं। अंग्रेजी भाषी को देखकर अंग्रेज़ियत का जुनून सवार होना स्वाभाविक है।

अंत में रूपर्ट स्नेल ने छात्रों से एक प्रश्न किया...

प्रो.रूपर्ट: आप लोगों को हिन्दी सीखने में कौन सी चीज़ सबसे कठिन लगती है?

छात्र: मिश्रित क्रिया (कम्पाउण्ड वर्व)

प्रो. रूपर्ट : क्यों?

छात्र: क्योंकि यह समझ में नहीं आता कि कौन सी क्रिया पहले लगेगी और कौन सी बाद में।

प्रो. अश्विनी देव ने भारत की प्राचीन भाषाओं पर था

एक सामूहिक हंसी के साथ इस साक्षात्कार सभा का विसर्जन हुआ ।

इस साक्षात्कार के बाद 7 बजे ' द फलोवर्स आफ हिन्दी' विषय पर एक पैनल डिस्कशन हुआ जिसमें प्रकाश डाला और प्रो. रूपर्ट स्नेल ने हिन्दी के अनेक सूक्ष्म तथ्यों को विशेष रूप से विश्लेषित किया । छात्र- छात्राओं के प्रश्न - उत्तर के दौर के साथ यह पैनल लगभग 9 बजे समाप्त हुआ।इसके पश्चात रात्रिभोज (डिनर) का आयोजन था जिसमें कई तरह के भारतीय व्यंजन उपलन्ब्ध थे।

5 अप्रैल, 2008 को प्रात: 11:30 बजे छात्रों के बीच हिन्दी में एक प्रतियोगिता सम्पन्न हुई, जिसका विषय - " परिवार और परंपराओं की भूलभुलैयों में भारतीय व्यक्ति को अपनी पहचान ढूंढना कठिन हो जाता है।"

इसके पक्ष में भाग लेने वाले प्रतियोगी थे - 1. सुयाग भंडारी , 2. कुणाल लुनावत, 3. परमजीत शाह, 4. निखिल सूद, । इसके विपक्ष में थे भाग लेने वाले प्रतियोगी थे - 1. महिमा सुखदेव, 2. आशीष बसी 3.सौरिश भट्टाचार्य जी, 4. अनिला मदिराजू । इसके चेयर परसन थे - रौनिक बांगरू एवं को - चेयर परसन थे - दिलशेर कैरन।

इसमें भारत से आये अन्तर्राष्ट्रीय छात्रों ने अपना पक्ष प्रस्तुत करते हुये कहा कि - " यह सच है कि परिवार और परम्पराओं की भूलभुलैयों में हम अपनी पहचान खो बैठते हैं।" इसके विपक्ष में अमेरिका में जन्मे भारतीय मूल के छात्रों ने कहा कि - " यह कथन सही नहीं है , हम अपने परिवार और परम्पराओं के परिसीमन में रहकर ही अपनी पहचान बनाते हैं । उन्होंने इस बात पर ज़ोर देते हुये कहा कि उनके परिवार की विशिष्ट संस्कृति एवं परम्पराओं के वैविध्य में ही उन्हें उनकी पहचान मिली है। दोनों पक्षों के छात्रों ने अपनी बात को पूरे जोश और प्रवाह के साथ प्रस्तुत किया। उनके बोलने की धाराप्रवाह में कहीं भी शैथिल्य नहीं आया।

इस प्रतियोगिता की सबसे खास बात यह थी कि इसमें भाग लेने से दो महीने पहले एक आडीशन हुआ था , जिसमें भारत से आये हुये छात्रों ने स्वयं ही अपना पक्ष सामने रखा था। इस प्रतियोगिता के निर्णायक थे - 1. प्रो. रूपर्ट स्नेल टैक्सस विश्वविद्यालय , आस्टिन, 2. प्रो. अश्विनी देव, येल यूनिवर्सिटी , न्यू हेवन, 3. प्रो. सुषम बेदी, कोलम्बिया यूनिवर्सिटी , न्यूयार्क, जिन्होंने छात्रों के वक्तव्य को ध्यान से सुना और अपना निष्पक्ष निर्णय सुनाया। विजेता थे ... 1. निखिल सूद, जिन्हें पक्ष में बेस्ट स्पीकर का एवार्ड मिला। 2. सौरिश भट्टाचार्य जी, जिन्हें विपक्ष में बेस्ट स्पीकर का एवार्ड मिला।

3. आशीष बसी जिन्हें बेस्ट एफर्ट इन हिन्दी ऐज़ ए फारेन लैंग्वेज का एवार्ड मिला ।

4. कुणाल लुनावत , जिन्हें 'बेस्ट इन्टरजेक्टर' का एवार्ड मिला। इसके बाद विद्यार्थियों ने भारतीय रेस्टोरेंट ' सितार' में लंच की व्यवस्था थी। उसी समय हिन्दी छात्रों द्वारा उक्त निर्णायकों को भी विशेष सम्मान से सम्मानित किया गया। इस प्रतियोगिता से प्रो. सीमा खुराना के चेहरे पर एक सुखद लहर दिखाई दी। येल यूनिवर्सिटी में हिन्दी प्रतियोगिता की प्रथम आधार शिला की स्थापना हो सकी। इसका श्रेय इसके हिन्दी छात्रों व प्रो. सीमा खुराना को जाता है।

'कौन कुटिल खल कामी' का लोकार्पण

" व्यंग्य लेखन एक बहुत कठिन कर्म है जिसमें अपने को छिपाने की चतुराई नहीं चलती है। व्यंग्य लेखन और आत्मकथा लेखन में चतुराई नहीं चलती है। आप व्यंग्य के माध्यम से ऐसी मार करते हैं जो मार हो और लगे भी नहीं। प्रेम जनमेजय अपने लेखन के द्वारा ऐसा ही कठिन कर्म कर रहे हैं। " ये उदगार प्रसिद्ध आलोचिका **निर्मला जैन** ने प्रेम जनमेजय के, 'अक्षरम' द्वारा हिंदी भवन दिल्ली में आयोजित , ' ग्रंथ अकादमी' द्वारा सद्या प्रकाशित व्यंग्य संकलन ' कौन कुटिल खल कामी' का लोकार्पण करते हुये व्यक्त किए। उन्होंने सबसे पहले लेखक को बधाई दी कि वह रचना के अकाल से बाहर निकल आया है। उन्होंने लेखक की इस बात की भी प्रशंसा की कि उसमें ईमानदारी जिंदा है और इसी ईमानदारी के तहत उसने भूमिका में अपना रचना - अकाल से संघर्ष करने में रवींन्द्र कालिया और ज्ञान चतुरवेदी के सहयोग को रेखांकित किया है। प्रेम जनमेजय के व्यंग्य अपने प्रहार में निष्ठुर हैं पर उनमें मानवीयता निरंतर बनी हुई है। निर्मला जैन ने प्रेम जनमेजय के लेखकीय फक्कड़पन की प्रशंसा भी की।

मुख्य अतिथि डॉ. **कन्हैयालाल नंदन** ने कहा कि प्रेम जनमेजय जैसे 'खतरनाक ' रचनाकारों से सावधान रहना चाहिए क्योंकि इनकी दृष्टि बहुत पैनी है। इनकी कलम ईमानदार कलम है जो अपनी विसंगतियों पर भी बेहिचक प्रहार करती हैं। वे दिशायुक्त प्रहार करते हैं और निरर्थक बहकते नहीं हैं। उन्होंने कहा कि कुटिल खलकामी के गर्म - गर्म बाज़ार में कौन नंगई कर रहा है और कौन इस सबमें उजला दिख रहा है इसका ज्ञान यह संकलन देता है। **ज्ञान चतुर्वेदी** ने कहा कि मैं इस संकलन को एक उपन्यास की तरह , बहुत सारे काम छोड़कर,एक ही सिटिंग में पढ़ गया, यह किताब की ताकत को बताता है।

प्रेमजनमेजय ने इस किताब के द्वारा नई ज़मीन तोड़ी है और सही जगह तोड़ी है। प्रेम ने रेत में बीज डालने का काम किया है। उन्होंने अपनी सोच को तोड़कर बाहर आने का प्रयास किया है।

प्रदीप दत्त ने प्रेम जनमेजय की मुहावरेदार भाषा और विषय वैविधय् की प्रशंसा की है। उन्होंने कहा कि प्रेम जनमेजय उन गिने चुने व्यंग्य लेखकों में हैं जो तात्कालिक घटनाओं पर मात्रव्यंग्यात्मक टिप्पणियां नहीं करते हैं - अपितु दूर तक मार करने वाली रचना का सृजन करते हैं। और यही कारण है उनकी रचनाओं में नेताओं पर व्यंग्य कम है।

हरीश नवल ने कहा कि प्रेम का व्यंग्य प्रयोजनीय व्यंग्य है। प्रेम ने भूमिका में अपने जिस अकाल की चर्चा की है , वह अकाल नहीं है बहुत दिनों से जिस ज़मीन पर कोई फसल नहीं उस ज़मीन के अधिक उर्वर होने की प्रक्रिया है। ये परती के बाद की परती - कथा है। प्रेम जनमेजय जैसा भाषिक प्रयोग हमारे समय के व्यंग्यकारों में बहुत कम है। **दिविक रमेश** ने कहा कि प्रेम जनमेजय उन गिने चुने व्यंग्यकारों में से हैं जिन्होंने व्यंग्य को फूहड़ होने से बचाया है। भाषा पर इनकी पकड़ बहुत गहरी है। प्रेम जनमेजय की रचनाओं में एक तरह की महाकाव्यात्मकता है। ये खतरा मोल लेते हुये व्यंग्य करते हैं और स्वयं को भी कठघरे में रखते हैं। प्रेम की रचनाओं में हास्य की कमी है और ये व्यंग्य के साथ हास्य का घोलमेल कम ही पसंद करते हैं और यही कारण है इनका हास्य चुटीला होता है।

इस अवसर पर गद्य व्यंग्य पाठ का भी आयोजन किया गया जिसमें **विष्णु नागर , ज्ञान चतुर्वेदी, प्रेमजनमेजय, प्रदीप पंत, हरीश नवल, राजेश कुमार** ने अपनी रचनाएँ पढ़ीं। कार्यक्रम का संचालन राजेश कुमार ने किया और धन्यवाद ज्ञापन अक्षरम के अज्ञयक्ष अनिल जोशी ने किया। कार्यक्रम में प्रभाकर श्रोत्रीय , बालस्वरूप राही, शेरगांज गर्ग, अनूप श्रीवास्तव , प्रताप सहगल , प्रभात ,नरेशशांडिल्य , वीरेन्द्र सक्सेना , जगदीश चंद्रिकेश, सुभाष चंदर मनोहर पुरी , पुष्पा राही, के.पी. सकसेना (दूसरे) , ललित लालित्य समेत सौ से अधिक साहित्य प्रेमी उपस्थित थे।

प्रवीण शुक्ल
कार्यक्रम संयोजक अक्षरम्

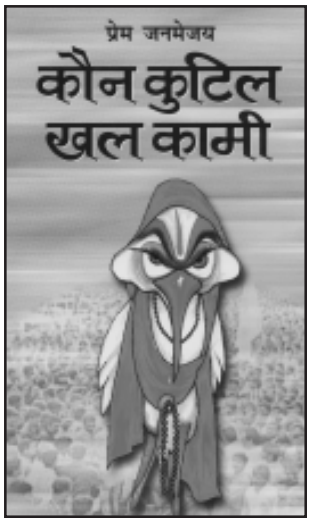

हिन्दी चेतना को जो पुस्तकें प्राप्त हुईं.....

1) कथा संसार

2) लघु कथा संग्रह
लेखक- नीरज नैथानी

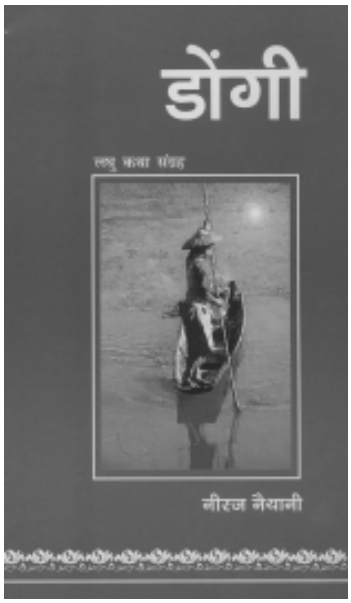

राष्ट्रीय कवि गजेन्द्र सोलंकी

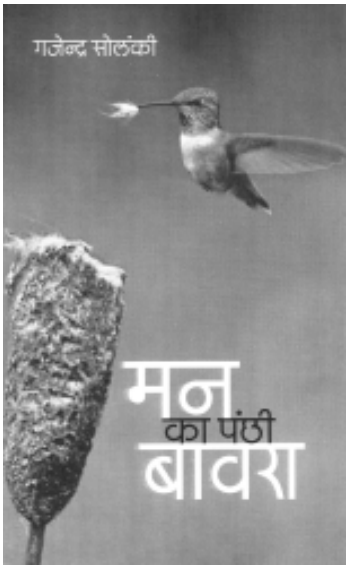

नई पत्रिका भारत से

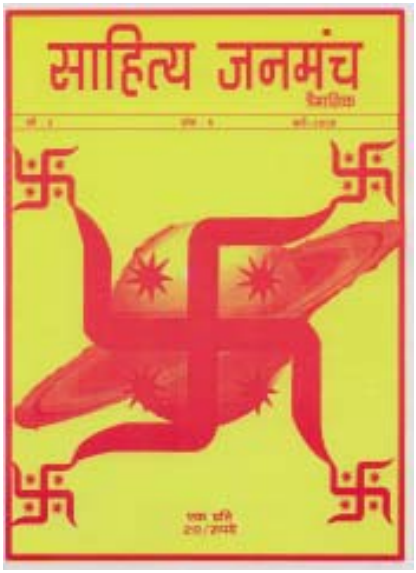

जगदीश चन्द्र शारदा

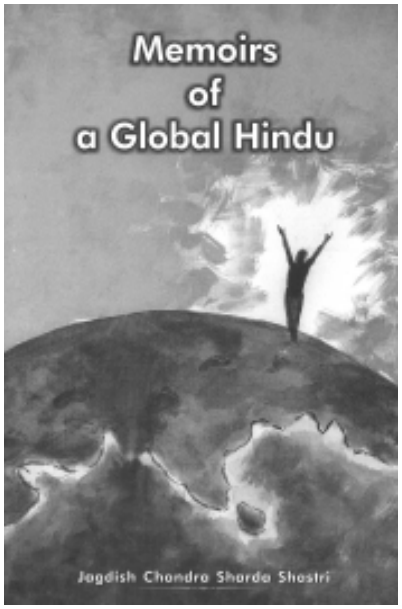

संपादक - श्रीनाथ द्विवेदी

महा कवि प्रो. हरिशंकर आदेश के काव्य पत्रों का संग्रह

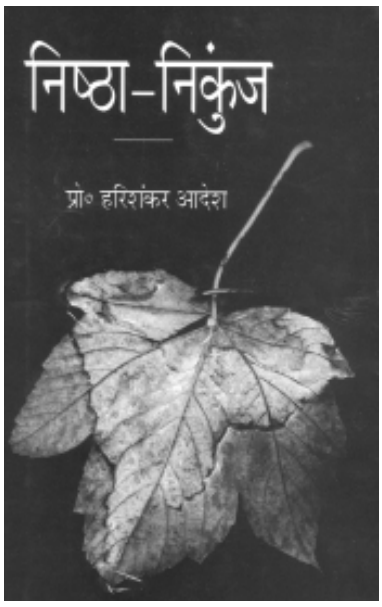

डा. शिवनन्दन सिंह यादव के जीवन की निधि चंदन वन

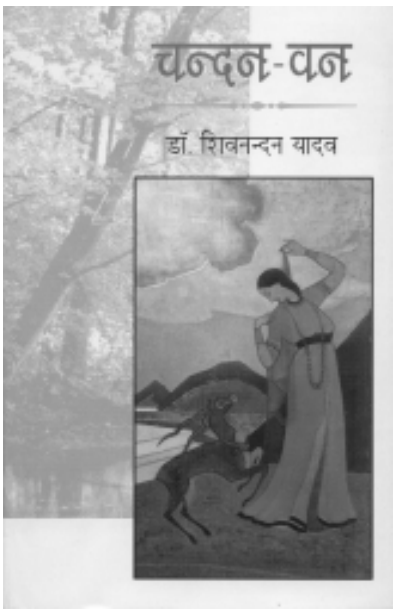

अनुवादक यूटटा आस्टिन का भाषण जो उन्होंने उषा राजे सक्सेना की ' वह रात और अन्य कहानियों, के लोकार्पण के अवसर पर दिया था।

उपस्थित देवियो व जनो, प्रिय उषा जी

जब आप, उषा जी ने, मुझे इस साहित्यिक लोकार्पण पर दो एक शब्द कहने का निमंत्रण दिया तब दो मेल न खाने वाले विचार मेरे मन में आए। एक तरफ उषा जी का काम मनाने में भाग लेना बड़ी खुशी की बात है।। फिर दूसरी तरफ मुझे आजकल हिंदी बोलने के अवसर कम ही मिलते हैं, और आदत - अभ्यास नहीं है।

फिर भी उषा जी की कई कहानियों का अंग्रेजी अनुवाद करने के बाद मैं इनकी कृतियाँ अच्छी तरह से जानती हूं, समझती हूं और जो भाव - अनुभूतियाँ उनमें व्यक्त की जाती हैं उन्हें मैं खुद महसूस कर सकती हूं। इसलिए उनकी प्रशंसा करने के अवसर से इंकार न कर पाई। लेकिन मुझे अपनी अशुद्ध हिंदी की क्षमा माँगनी है। आप लोगों से यह निवेदन है कि आप मेरा यहाँ खड़ी हुई हिंदी में उषा जी के काम की बात करना इनका सम्मान करने की इच्छा का फल समझें।

उषा जी की बहुत सी और प्रभावशाली कहानियों की कई विशेषताएँ हैं। एक है कि इन में पूर्व और पश्चिम का मिलन होता रहता है - कभी कभी अच्छी मुलाकात के रूप में, कभी टक्कर के रूप में , कभी जजबातों के मतभेद के रूप में।

शायद यह स्वाभाविक बात है कि इंगलैंड में रहने वाली भारतीय लेखिका प्रवास के विषय पर लिखे। लेकिन उषा जी की कृतियों की ऐसा सीमा नहीं है, उनका दायरा इससे विस्तृत है। अगर कई कहानियाँ प्रवास की समस्याएँ की बात करती हैं , तो दूसरी कहानियाँ पीड़ियों के संघर्षों के बारे में बताती हैं , और कई ऐसी कहानियाँ भी हैं जिनका विषय मनुष्य के अन्य प्रकार के रिश्ते या सब जो मनुष्य में प्रशंसनीय है, जैसा कि विश्वास और प्यार , कुरबान और सहायता।
उषा जी संवेदनशीलता और कोमल कलम से अपने पात्रों के दिल व मन पाठक के लिए खोलकर उनकी कहानी खींचती हैं।

उदाहरण के लिए कहानी ' मेरे अपने' में एक पिता और बेटी एक दूसरे को समझने - समझाने की कोशिश करते हैं। झगड़ा और क्रोध के रवैया से शुरू करके दोनों धीरे धीरे एक दूसरे के पास जानेवाला रास्ता ढूँढते हैं। छोटे छोटे कदम में बढ़ती कहानी रिश्ते और जज़बातों के विकास का एक तीव्र विवरण ही नहीं बल्कि पाठक का अपना ही दयाशील अनुभव भी है। इन्सान और प्रवास के सारे संघर्ष एक बहुमुखी प्रिज्म के रूप में नज़र आते हैं, और उषा जी की कहानियों में इस प्रिज्म के भिन्न - भिन्न पहलू अपनी अपनी बात करते हैं।

उषा जी इंसान की तकलीफें - समस्याएँ अचे तरह से समझती हैं। दूसरों के संघर्ष दया से देखते हुये भी उनके कारण , विकास और नतीजे निरपेक्ष से बताती हैं एक बहुत अभिव्यंजक शैली में जिससे पाठक कहानी की घटनाएँ खुद ही महसूस करता है। सारे जो लोग इनकी कहानियों में मिलते हैं वे हकीकत की दुनियाँ के लोग हैं , उनके भाव , तकलीफें हमारी भी हैं। कहानियाँ पढ़ते समय वे हमारे दोस्त लगने लगते हैं , उनका सुख- दुःख हमारा हो जाता है। उषा जी की कहानियां इंसानियत की कहानियाँ हैं।
ऐसी कहानियाँ दो बड़े संदर्भों में महत्वपूर्ण होती हैं। एक है भारतीय भाषाओं में लिखा हुआ साहित्य का प्रसार। पश्चिम में बहुत से ऐसे लोग मिलते हैं जो सोचते हैं कि जो भारतीय अच्छा लिखते हों वे मूल अंग्रेजी में ही अपना काम करते हैं। अंग्रेजी भाषा में लिखा भारतीय गद्य पश्चिम में बहुत लोकप्रिय बना आता है । अनूदित कृतियोँ की बड़ी कमी रहती है। इस स्थिति में अनुवाद के माध्यम से कुछ सन्तुलन लाना मेरा बड़ा सौभाग्य है। भारतीय भाषाओं में बहुत से ऐसे शब्द मिलते हैं जिनके अर्थ के लिए अंग्रेजी भाषा में कोई भी शब्द नहीं है, इसलिए अनुमान यह होना चाहिये कि जब भारतीय लेखक मूल अंग्रेजी में लिखते हैं तब भारतीय संस्कृति की ऐसी धारणाएं कम ही शामिल हों। जो लेखक हिंदी, गुजराती, , बंगाली आदि में लिखते , वे उन भाषाओं की सारी धारणाओं के बारे में बोल सकते हैं, सारे शब्दों के प्रयोग कर सकते हैं। फिर जब ऐसी रचनाओं का अनुवाद किया जाता है तब अनुवादक का काम यह है कि जो धारणाएँ , विचार, और भाव मूल लेखन में व्यक्त किये जाते है. उन्हें नयी भाषा में इस तरह से जाहिर करना चाहिए कि इस भाषा के पाठक उन्हें अपनी सांस्कृतिक व भाषिक पृष्ठभूमि खुद समझते हैं और महसूस करते हैं । इस दृष्टिकोण से अनुदित कृतियाँ शायद मूल अंग्रेजी में लिखे साहित्य से बेहतर पश्चिमी पाठक को भारतीयता तकपहुंचा सकता है। साथ ही भारतीय भाषाओं के पाठक के लिए अपनी मातृभाषा का साहित्य सबसे ज्यादा सुलभ होता है।
परन्तु यह सिर्फ साहित्य की बात नहीं है, भाषा की बात भी है। भारत के लोग जो पश्चिम के देशों के सम्पर्क में हैं , उन्हें अकसर अंग्रेजी अच्छी तरह से आती है इसलिये पश्चिम के - शेष पृष्ठ 68-69 पर

हिन्दी समाचार
यू.के. से

चर्चित कहानीकार उषा राजे सक्सेना के कहानी संग्रह ' वह रात और अन्य कहानियाँ का लोकार्पण ' लंदन स्थिति नेहरु केन्द्र में दिनाँक शुक्रवार 30 मई 2008 को संपन्न हुआ।

समारोह की अध्यक्षता, अचला शर्मा लेखिका, निर्देशक बी. बी. सी. वर्ल्ड सर्विस हिंदी लंदन ने किया। नेहरुकेन्द्र की निदेशक सुश्री मोनिका मोहता , आलोचक-समीक्षक गज़लकार श्री प्राण शर्मा, लेखक , अनुवादक सुश्री युट्टा आस्टिन , तथा भारत से आये पुस्तक के प्रकाशक श्री महेश भारद्वाज (सामयिक प्रकाशन) विशिष्ट अतिथि थे।

कार्यक्रम की शुरुआत करते हुये नेहरु केन्द्र की निदेशक मोनिका मोहता ने सभी आगंतुक साहित्यकारों और श्रोताओं का स्वागत करते हुये बताया कि उषा राजे सक्सेना ब्रिटेन की एक महत्वपूर्ण कथाकार हैं उनके कहानी संग्रह ' वह रात और अन्य कहानियाँ' पुस्तक का लोकार्पण समारोह आयोजित कर नेहरु सेन्टर गौरवान्वित है। कार्यक्रम की अध्यक्षता अचला शर्मा ने अपने वक्तव्य में कहा कि उषा राजे उन तमाम विषयों पर क़लम चलाने का माद्दा रखती हैं जिन पर आमतौर पर अंग्रेज़ी के लेखक अपना अधिकार मानते हैं। ऐसे पात्रों के मन को समझना और उनकी कहानी लिखना जोखिम का काम है, उषा राजे यह जोखिम बखूबी उठाती हैं। अचला शर्मा ने आगे कहा कि उषा राजे की एक विशेषता यह कि वह चुपचाप अपने लेखन कार्य में लगी रहती हैं ये कहानियां इस बात का सबूत हैं कि उषा अपने परिवेष के प्रति सजग हैं। क्योंकि ये कहानियाँ कई खबरों की सुर्खियों की याद दिलाती हैं।

मुख्य वक्ता प्राण शर्मा ने अपने वक्तव्य में कहा , उषा राजे की कहानियाँ उनके ब्रिटेन के साक्षात अनुभवों को अभिव्यक्त करती हैं। ये कहानियाँ हिंदी साहित्य में तो शीर्ष स्थान बनाती ही हैं साथ अँग्रेज़ी कहानियों के समानांतर भी हैं। 'वह रात और अन्य कहानियाँ' में दुनिया के अनेक देशों के आप्रवासी पात्र अपनी - अपनी व्यक्तिगत एवं समस्याओं और मनोवैज्ञानिक दबाव के साथ हमारे समक्ष आते हैं।

लेखिका - अनुवादक सुश्री युट्टा आस्टिन ने उषा राजे की कहानियों को गहन अनुभूतियों वाली कहानियाँ बताया। उन्होंने कहा ये कहानियाँ मात्र भारतीय या पाश्चात्य ही नहीं बल्कि विभिन्न देशों से आए प्रवासियों की कहानियाँ हैं। युट्टा ने बताया कि उन्होंने इन कहानियों का अंग्रेजी अनुवाद कर इन्हें विश्वव्यापी बनाने का प्रयास किया है। प्रकाशक महेश भारद्वाज ने - वह रात और अन्य कहानियाँ को वैश्विक , यथार्थ पर आधारित पठनीय कहानियाँ बताया।

उषा राजे ने अपने वक्तव्य में कहा वे अपनी लेखनी के माध्यम से मातृभाषा के उन पाठकों तक पहुंचना चाहती हैं जिनकी पहुंच अँग्रेज़ी भाषा साहित्य तक नहीं है परन्तु वे पाश्चात्य जीवन पद्धति , जीवन-मूल्य , कार्य - संस्कृति , मानसिकता और प्रवासी जीवन आदि का फर्स्टहैंड पड़ताल चाहते हैं। कार्यक्रम का संचालन राकेश दुबे , अताशे (हिंदी एवं संस्कृति) भारतीय उच्चायोग लंदन ने किया। कहानी - पाठ किशोरी प्रज्ञा ' सुरभि' सक्सेना ने बड़े प्रभावशाली और सरस ढंग से किया। नेहरु केन्द्र लंदन के तत्वाधान में हुये इस कार्यक्रम में ब्रिटेन के लगभग सभी गणमान्य साहित्यकार उपस्थित थे और सभागार श्रोताओं और अतिथियों से भरा हुआ था।

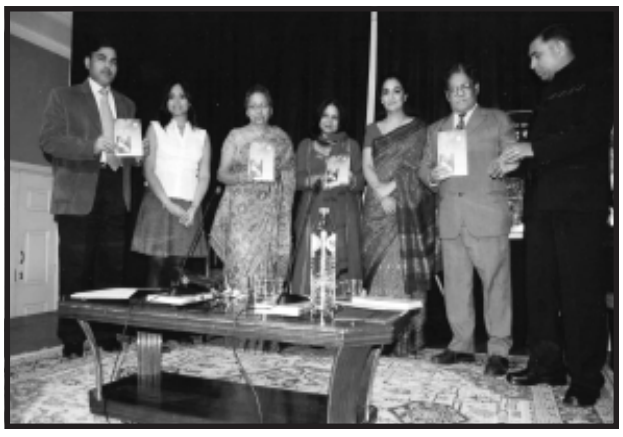

वह रात और अन्य कहानियों' के लोकार्पण अवसर पर लंदन में राकेश दुबे, प्रज्ञा सुरभि, लेखिका उषा राजे सक्सेना, अचला शर्मा- निदेशक बी. बी. सी. हिंदी लंदन, मोनिका मोहता, निदेशक - नेहरू सेंटर, समीक्षक प्राण शर्मा, महेश भारद्वाज - प्रकाशक , सामयिक प्रकाशन एवं युट्टा ऑस्टिन- लेखिका एवं अनुवादक

शोक समाचार

नई कविता का एक और हस्ताक्षर कालकवलित

कीर्ति चौधरी का निधन

कम लेखन में ही बहुत समय विमर्श देकर गई हैं कीर्ति चोधरी हिंदी नई कविता की जानी - मानी और मुखर कवयित्री कीर्ति चौधरी (1934-2008) का लंदन में निधन हो गया है।
उन्होंने भारतीय समयानुसार शुक्रवार की सुबह तीन बजकर 45 मिनट पर अंतिम साँस ली।
पिछले कुछ समय से अस्वस्थ चल रहीं कीर्ति चौघरी लंदन में रह रही थीं और उनका उपचार हो रहा था।
कीर्ति चौधरी तीसरे सप्तक की एकमात्र कवयित्री थी।
' तीसरा सप्तक ' (1960) के संपादक अज्ञेय ने 60 के दशक में प्रयाग नरायण त्रिपाठी , केदारनाथ सिंह , कुँवर नारायण , विजयदेव नारायण साही , सर्वेश्वर दयाल सक्सेना और मदन वात्सायन जैसे साहित्यकारों के साथ कीर्ति चौघरी को भी तीसरा सप्तक का हिस्सा बनाया।

तीसरा सप्तक के कवियों में से एक जाने - माने साहित्यकार केदारसिंह उनके निधन पर शोक व्यक्त करते हुये कहते हैं , " तीसरा सप्तक के लिये यह दो ही वर्षों में तीसरा आघात है। इसी वर्ष प्रयाग नारायण त्रिपाठी का भी देहान्त हो चुका है। इससे कुछ समय पहले मदन वात्सायन हमें छोड़कर चले गये।"

केदारनाथ सिंह कीर्ति चौधरी के कृतित्व की चर्चा करते हुये कहते हैं , " महादेवी वर्मा के बाद हिंदी कविता में जो एक रिक्तता आ गई थी , उसे कीर्ति अपने मौलिक लेखन से पाटती हैं। उनकी कविता एक नये सांचे में थी जिसकी बनावट अलग थी। उसमें एक ताज़गी थी और अपनी रचनाओं के तल में उनके पास एक खास तरह का स्त्री सुलभ संवेदना का ढांचा था जो उनके समय में किसी और के पास नहीं था।"

'केवल एक बात थी'

कीर्ति नई कविता की कवयित्री थीं। ऐसी, जिन्होंने महादेवी वर्मा के जाने के बाद आई रिक्तता में अपनी खनक घोलनी शुरू की थी।

कीर्ति चौधरी जाने - माने रेडियो प्रसारक ओंकारनाथ श्रीवास्तव की पत्नी थीं। नई कविता की शुरुआत आम नई कविता के इसी उत्कर्ष की साक्षी और सारथी थी कीर्ति चौधरी और उनकी रचनाएं।

उनकी कविताओं में एक मोहक प्रगीतात्मकता देखने को मिलती है ,उनकी कविता में मनुष्य और उसके समग्र अनुभवों को पकड़ने का यत्न हुआ है। वास्तव में कीर्ति चौधरी की कविता नई कविता के अन्य रचनाकारों की तरह ही संपूर्ण जीवन की कविता है। उनकी कविता में प्रतीकों और बिंबों का काफी प्रयोग मिलता है।

बी.बी.सी. से साभार

गोबिंद बेदी जी को श्रद्धाँजलि

स्वर्गीय गोबिंद बेदी जी 13 मई 2008 को इस संसार से चले गये । आप की कर्मभूमि नाइरोबी कीनिया थी । सेवा से निवर्त्त होकर आप कैनेडा में बस गये। सदा आर्यसमाज के साथ जुड़े रहे और उसकी प्रगति के लिए आप सदा नि:स्वार्थ सेवा करते रहे। मार्खम आर्य समाज के निर्माण में आपका नाम सदा स्मरण रहेगा। आप सिद्धान्तों पर चलने वाले एक आदर्श पुरुष थे। उन्हें कविता से अटूट प्रेम था । हर अवसर पर उनके मुंह से उर्दू के शेर हमेशा तैयार रहते थे। आपक जीवन सीधा -सादा और बहुत आनन्दमय था। उनके चेहरे पर हमेशा एक मुस्कान रहती थी। आप एक साहसी पुरुष थे जो कभी हार नहीं मानते थे। वह शान और आत्म सम्मान के साथ अपने जीवन की यात्रा समाप्त करके इस संसार से चले गये।

उन्हें अपने परिवार से बहुत लगाव था और उनके बच्चो ने उन्हे बहुत सारा प्यार दिया। वह अपने पौत्रों व नातिनों को भी बहुत प्यार करते थे। अपने सभी बच्चों को उच्चस्तरीय शिक्षा देकर उन्हें अपने पैरों पर खड़ा करके, एक आदर्श हरा भरा परिवार छोड़कर बेदी जी इस संसार से चले गये। ईश्वर उनकी आत्मा को परम् शान्ति दे और शोकाकुल परिवार को यह भीष्म दु:ख सहन करने की सामर्थ प्रदान करे।

बेदी जी चले गये
किन्तु अमर रहेगा उनका नाम
सत्य मार्ग पर चलने वाले
उनका जीवन था निष्काम।
हि. चेतना परिवार की ओर से

टोरंटो 14 जून भारतीय कौंसिलावास में पैनोरमा द्वारा आयोजित भव्य कवि सम्मेलन

14 जून 2008 दोपहर भारतीय कौसिलावास के कक्ष में एक कवि सम्मेलन का आयोजन ' पेनोरमा इंडिया' केतत्वाधान में हुआ। इसमें टोरंटो क्षेत्र के लगभग 14 कवियों और कवयित्रियों ने भाग लिया। कवि सम्मेलन की अध्यक्षता अमेरिका के श्री अमरेन्द्र सिंह ने की और इसका संचालन पेनोरमा समिति की उपाध्यक्षा श्रीमती अरुणा भटनागर ने बड़ी कुशलता पूर्वक किया। सभी कवियों को लगभग 7- आठ मिनट दिये गये और सभी ने इस नियम का पालन करते हुये अपनी रचनाएँ बड़े उत्साह पूर्वक प्रस्तुत कीं।

उपस्थित श्रोताओं ने कवियों को बहुत ध्यान पूर्वक सुना और समय - समय पर उनकी करतल ध्वनि से प्रशंसा की। कवि सम्मेलन के मध्य में छोटा सा अंतराल हुआ जिसमें अल्पाहार की व्यवस्था थी सभी ने इसका पूरा आनन्द लिया और लगभग 3 घंटे कार्यक्रम चला और बाद में भाग लेने वाले सभी कवियों को रजत ट्राफी से पुरुस्कृत किया गया। कविसम्मेलन अत्यन्त ही सुखद और आनन्दमय रहा।

जिन कवियों व कवयित्रियों ने भाग लिया था उनके नाम इस प्रकार हैं। भगवत शरण श्रीवास्तव, शैलजा सक्सेना ,दीप्ति कुमार, आशा बर्मन, शैल शर्मा , डा. अमरेन्द्र कुमार , मानसी चटर्जी, श्याम त्रिपाठी, देवेन्द्र मिश्रा, सुमन कुमार घई, पाराशर गौड़, एवं सुरेन्द्र पाठक ।

हिन्दी चेतना की ओर से ....

(पृष्ठ 62 से यूटटा आस्टिन के भाषण का अंश)

बहुत से लोग यह मानते हैं कि भारत अंग्रेजी बोलने वाले लोगों का एक देश है जिसकी अन्य भाषाओं का कोई सार्थतकता नहीं है। लेकिन यह सच है कि ज्यादा भारतीय लोग अपना जीवन अपनी अपनी भाषा में गुजारते हैं अैर ये भाषाएँ अपनी विशेष धारणाओं की निधि हैं। इनमें से हिंदी भाषा की खास हैसियत है , और उसकी सुरक्षा ही नहीं बल्कि उसकी प्रेरणा , प्रोत्साहन और प्रसार भी करना चाहिये। हर जो लेखक हिंदी में लिखता है वह इस काम में शामिल है और उसकी प्रशंसा की जानी चाहिए।
अंग्रेजी में लिखने से शायद ज्यादा पाठक मिलते हैं भारत के बाहर , शायद कमाई भी ज्यादा अच्छी है, लेकिन हिंदी या दूसरी भाषा में लिखने से भारत की संस्कृति , इतिहास , धारणाएँ और रिवाज़ का अभिरक्षक बनकर उनका प्रोत्साहन करता है। उषा जी ऐसी अभिरक्षक हैं , अपनी भाषा में , अपने विषयों में , अपने संदेशों में। इसके अतिक्ति प्रवास आजकल सारी दुनियाँ में चलता रहता है , हम सब लोगों के लिए यह प्रासंगिक बात है। उषा जी का काम प्रवास की तकलीफें समझने- समझाने में बड़ा योगदान देता है।

आज मैं आप सब लोगों के साथ उषा जी को बधाई व इनकी कहानियों के लिए हार्दिक धन्यवाद देना चाहती हूं। धन्यवाद! युट्टा आस्टिन

14 जून 2008 भारतीय कौंसिलावास में अध्यक्ष अमरेन्द्र कुमार सरस्वती देवी की प्रतिमा के सम्मुख दीप पज्ज्वलित करते हुये साथ में श्रीमती अरुणा भटनागर

14 जून पैनोरमा कविसम्मेलन मे भाग लेने वाले श्रीमती राजकुमारी सिनहा, सुरेन्द्र पाठक, श्याम त्रिपाठी व कवयित्री दीप्ति कुमार

Hindi Chetna

Membership Form

Annual Subscription: **$25.00 Canadian**

Life Membership: **$200.00 Canadian**

Donation: **$ _____**

Method of Payment: **Cash, cheques and drafts payable to "Hindi Chetna"**

Your Name:_____

Address: _____

_____

Telephone: Home: _____

Business: _____

e-mail: _____

_____

Contact in Canada:

Hindi Chetna
6 Larksmere Court
Markham, Ontario L3R 3RI
Canada

e-mail: hindichetna@yahoo.ca

Contact in USA:

Dr. Sudha Om Dingra
101 Guymon Court
Morrisville, North Carolina
NC27560, USA

e-mail: ceddlt@yahoo.com

CARPET PLUS

SAVE UP TO 70%
LUXURIOUS CARPETS
ORIENTAL RUGS

Commercial &
Residential
Installations

F •***Installation***
R •***Underpad***
E •***Delivery***
E •***Shop at Home***

(416) 661-4444
(416) 663-2222

Vinyl Tiles

Broadloom

180 Winges Rd.,
Unit 17-19
Woodbridge, Ontario
L4L 6C6

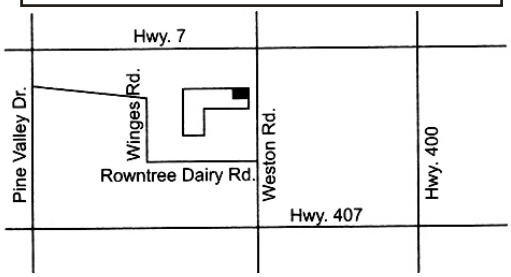

Finest Source of :

International Flag Pins

Campaign Buttons

Friendship Pins

Embroided Crests (Patches) of All Countries

International & Provincial Flags of all sizes, Souvenirs

Mini Banners & Keychains of all countries available

Custom work available for Pins, Buttons, Crests and Flags
At Factory Direct Prices Free Set up & Shipping

We carry more than 500 Titles each of Pins, Flags & Crests in stock

Pinsnflags.com Inc., 395 Spadina Ave., Toronto, Ont., M5T 2G6

Tel: 416-596-1574 Fax: 416-596-2248
Toll Free: 1-877-322-4771 E-Mail: veena@pinsnflags.com
www.pinsnflags.com

मेरे मित्रो! हिन्दी बोलो, अपने बच्चों को हिन्दी सिखाओ! अपनी भाषा और संस्कृति को बचाओ!1